3

धरमेलो

राजस्थानी नाट्य सग्रह

सूरजसिह पवार

पवार प्रकाशन
रामपुरिया कॉलेज के पीछे बीकानेर (राज)

लेखकाधीन

आवरण	सूरजसिह पवार
सस्करण	प्रथम 2002
मूल्य	एक सौ पैंतीस रुपये मात्र
लेजर टाइप सैटिंग	राजस्थान कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स रामपुरिया मौहल्ला बीकानेर
मुद्रक	कल्याणी प्रिण्टर्स मॉडर्न मार्केट बीकानेर

DHARMELO (Drama Collection) Rs 135 00
BY
SURAJ SINGH PANWAR

-

बडे शौक से सुन रहा था जमाना।
तुम्हीं सो गये दास्ता कहते-कहते ॥

लाडेसर -

कुं. रवीन्द्रसिंह भाटी

री

मधुर स्मृतियॉ

नै

स-स्नेह

समर्पित

सफल रगमचीय नाटक

एक जमानो हो तद नाटक मौजीज लोगा री चीज गिणीज्या करतो। खास लोग ठसकै सू नाटक देख्या करता। जणैई जुगा पैला नाटय–कला रा महारथी भरत कैयो हो कै नाटक रो दर्शक वो ई हुय सकै जिको हर तरह सू शीलवान हुवै शास्त्रज्ञ हुवै अर नाटक रै छ्वू अगा रो जाणीकार हुवै।

बखत रै सागै रसौ की बदळै। भरत री मान्यता ई बदळगी। खास री ठौड आम लोगा रो नाटक सू जुडाव बधण लाग्यो। मेळा–मगरिया तीज–त्यौहारा माथै लोकधर्मी नाटक खेलीजण लाग्या जिका में आम लोगा री हिस्सैदारी हुवती। बखत सागै लेखक री मनगत में ई बदळाव आयो। बो ई जाणग्यो कै खुद रै विचारा कै मान्यतावा नै जनमानस ताईं पूगावण रो सातरो माध्यम नाटक ई है।

देखणिया नै बाधण रो सामरथ राखणियो नाटक ई सफल नाटक हुवै। इसो नाटक जिको पढण मे सातरो पण रगमचीय तत्त्वा सू कोरो हुवै बो कदैई सफल नाटक कोनी कैईजै। मतलब कै रगमच माथै सफल हुया ई नाटक सफल गिणीजै। जणैई रगमच सू जुडाव राखणियै लेखक रा नाटक घणा सफल रैवै बनिस्पत उणारै जिका रो रगमच सू जुडाव नीं हुवै।

सूरजसिह पवार रगकर्मी पैला है पछै लेखक। बारो लारला तीन–च्यार दशका सू रगमच सू गैरो जुडाव है। अनेकू नाटका रो वा न्यारी–न्यारी ठौड मचन करयो है। दर्शका सू सराईज्या है। हिन्दी रै सागै राजस्थानी रगमच सू ई वारी अपणायत है। सन् 1967 में वा पैलीपोत राजस्थानी नाटक लिख्यो– 'बदळो अर 'भासो जणै पळटै अर बा नै घणी ई जगा मचित कर र सरावणा पाई। सूरजसिह री दोय राजस्थानी नाट्य–पोथ्या आय चुकी है – 'ग्यारह लाख री बीनणी अर 'पावणा पडिया कठै। 'पावणा पडिया कठै सग्रह मे शीर्षक नाटक रै पाखती दोय नाटक भळै है– 'म्हैं भोत दौरो घालू अर 'टाबर फूटरो है सा।

सूरजसिह पवार आपरै ढग–ढाळै रा नाटककार है। वै नाटक नै सामाजिक बदळाव रो सावठो माध्यम मानै। वै सामाजिक समस्यावा नै उठावै समस्यावा रै पोषका माथै व्यग्यात्मक चोट करै अर बारो हृदय परिवर्तन करवाय'र समस्यावा रो समाधान करावै। इण सग्रह मे सामल तीनू नाटक उणारी

इणी खूबी नै उजागर करै। धरमेलो नाटक मे बनवारी राजू रो धरमभाई पण बो उणरी जोडायत सुमन माथै खोटी मींट राखै। राजू फैरूई उण माथै पतियारो करै पण पछै बीनै आपरी गलती रो एहसास हुवै अर पछतावो करतो कैवै– औ कुत्तै री बात्या मे आय र म्हैं भरत जिसै भाई अर सीता जिसी देवी रै माथै झूठो बहम करियो। इयाई 'सूनी चवरी मे दायजै रो भूखो सेठ सुमेरमल आपरी औलादा सू ई मात खावै अर सुधरै। उणरी बेटी प्रमिला उणनै बरोबर चैतावै 'बाबूसा आपनै अेक बार फैरू कैयदू। आप दायजै रै चक्कर मे मत पडो। पण उणनै चक्कर सू बारै उणरी औलाद ही निकाळै। 'सुहावणा डूगर मे तेरह बरसा री सुमन सेठ झूमरमल अर घमडीलाल नै सीख दिरावै।

राजस्थानी मे रगमचीय नाटका रो तोडो है। गिणती रा नाटक आपा बिचाळै आया है। धरमेलो मे सकलित तीनू नाटक रगमचीय दीठ सू सफल नाटक है। कारण कै लेखक बरसा सू रगमच सू जुडया थका नाटय–लेखन में प्रवृत्त है। दर्शक ताई आपरी बात प्रभावी ढग सू पूगावणी वै जाणै। मानवीय अर आदर्शवादी स्थितिया निर्मित कर र सामाजिक सुधार सारू प्रेरित करणिया आ नाटका रो स्वागत है। राजस्थानी रा रगमचीय नाटका बिचाळै अे आपरी न्यारी निरवाळी ओळखाण बणासी ओ भरोसो है।

गुरुपूर्णिमा
24 जुलाई 2002

बुलाकी शर्मा
सीताराम द्वार रै सामनै
जस्सूसर गेट रै बारै
बीकानेर–334 004

लेखकीय

किसो क कळजुग आयो है। आप सुणी हुसी– काल ताईं जिका आपस मे भाई–बैन बाजता हा आज धणी–लुगाई बणग्या।

आपण पडोस मे बस्योडा वकील झूमरमलजी पन्द्रह बरसा ताईं भाई बण र राधा बेहनजी सू राखी बधावता हा काल बासू परणीजग्या। हूँ तो सरू सू ही आपनै आ बात कैवती आई हूँ 'जे केई नै धरमभाई बणायो तो आगै चाल र खसम बण जासी अर धरमबैन बणाई तो थोडै दिना रो फेरो घाल र घर मे सौत बण र बैठ जासी –आज तो आ बात मूढै रै सामैं ई आयगी।

आयै दिन इसा चाळा हुवता ई रैवै है। मिनख देखै है सुणे है पण चेतै कोनी। हुवै–न–हुवै ई मे मिनख जात रो स्वार्थ हुवैला।

पैली जिसा मिनख रैया कोनी– धरमेलो घालता हा पागडी बदळ र भाई बणता मा–जाये री प्रीत पाळता हा अर भीड पडिया नस कटावण नै तैयार रैवता अर भाई–बैन री लाज राखता पण हमैं आ बात रैई कोनी। जगत मे इसै मिनखा री नास्ती तो कोनी पण कोई खूणै–खचूणै दूढ्या ही मिलसी बाकी तो कुवै मे ही भाग पडगी।

जोडायत री आ बात सुण र लागी–बात तो साची कैवै है। धरमेलै री आड में पनपता कई चित्राम म्हारी आख्या रै सामनै उजागर हुयग्या। मन मे अेक पीड जागी स्फुरणा हुई भटकतै मानखै नै दिसा देवणो पोथी लिखणआळै रो धरम है। रिस्तै रै नाव पर समाज आख मूद लेवै– घरआळा इज्जत जावण रै डर सू देखी–अणदेखी कर देवै। अे फजीता उजागर हुवै जणै माथै–माथै हाथ देय र रोवै।

म्हारै धरमेलो लिखणै रै लारै आ ई कहाणी है। घटनावा रा रूप बदळता रैवै है। जोडायत रै मनोभावा नै दिसा दी है। ओ धरमेलो बानै ही समरपित करू हूँ।

'सूनी चवरी' मे आयै दिन दहेजरूपी दानव री भेट चढतै जवान टाबरा रै अरमाना रै करुण क्रन्दन री कहाणी है। धू–धू कर र चिताया जळरी है म्हे आख्या खोल्या देख रैया हा पण चुप बैठया हा। मानखो ऑख मूद राखी है। हूँ अैरो जुम्मेवार पुराणी पीढी नै मानू हूँ पाणी सिर रै ऊपर सू निकळग्यो है

कोरी बात करिया सू बात बणती दीखै कोनी। पुराणी पीढी रै सोच मे बदळाव लावणो पडसी इयै सारू नुईं पीढी नै आगै आवणो पडसी।

सागै ही क्रान्ति रो बिगुल बजावणो पडसी टकराव जे हुसी तो हुसी। झूठी मरजादावा रै नाव पर कित्ताक दिन आख मूद र रहीजसी। लालच में आदमी इत्तो आधो हुयग्यो है कै बैनै पइसै सू मोटी कोई और बात सूझै ई कोनी। पइसो जीवन मे माई–बाप बणग्यो है मिनख समाज पर इत्तो हावी हुयग्यो है'कै वो साची बात नै भी सुणनो को चावैनीं। समाज रो सारो ढाचो ही चरमराईजग्यो ह। 'सूनी चवरी' लिखता म्हारो युवा पीढी सू आह्वान है कै बे आगै आवै अर समाज री जडा नै खाखली करतै इयै दहेज रै नासूर नै जडामूळ सू उखाड फेकण रो बीडो उठावै। अैमैं बारी भी भलाई है अर समाज रो भी भलो है।

'सुहावणा डूगर' म्हारी हास्यप्रधान रचना है। हसणो–हसावणो म्हारी मूळ प्रकृति सू मेळ खावै। अै बोझिल जिदगी मे पल–दो–पल हसणो–हसावणों हो जावै तो हू अैनै जीवन री महती उपलब्धि मानू हू। जिदगी रो ओ चरखो तो चालतो ही रैसी। भागती जिदगी मे जे थोडो ठहराव मिल जावै तो चोखो है। सुहावणा डूगर म डूगर ज्यू दीखतै घर रै अतर री व्यथा–कथा है। व्यग्यात्मक शैली मे समाज मे पनपती विसगतिया अर विकृतियॉ रो लेखो–जोखा है। छलावै सू भरी अै दुनिया मे जे छलावै रै पग हुवता तो अेक घर री जगै दो घर डूबता। इयै ही कथानक रो सहारो लेय'र म्हैं म्हारी बात कैयी है।

जूण तो सगळा ही जीवै है आ तो जीवण री विवशता है। पण जीवण रो चरम सत्य आनन्द री प्राप्ति मे है। योगी बैनै योग मे देखै अर भोगी बैनै भोग में। जठै ताईं म्हारो सोचणो है हूँ बैनै पोथी लिखण मे देखू अर पाऊ भी हू।

पोथी आपरै हाथ में है। आपरी सहृदयता अर क्षमाशीलता रो म्हनै पूरो भरोसो है।

सूरजसिह पवार



दीपेन्द्रसिंह शेखावत
तकनीकी शिक्षा मंत्री
राजस्थान जयपुर
22 मई 2002

मायड भाषा राजस्थानी में लिखे आपके तीनों नाटक तथा राजस्थानी कथा सग्रह 'रामली –ये कृतिया जीवन के विभिन्न फलको को निकट से निरखती समझती और दिशाबोध देती है। भाषा और मुहावरे सहज और अन्तरमन को छूत हैं।

'रामली कथा मे रामली थे काई करता बदळो और कुडकी कहानिया विशेष उल्लेखनीय हैं। सामाजिक और मानवीय जडताओं और कुठाओ पर इन और अन्य कहानियो में आपने तीखा प्रहार किया है।

नाटय–सग्रह 'स्वप्नद्रष्टा में आपने ऐतिहासिक आख्यानो के जरिये समाज के सामने आदर्श प्रस्तुत किय हैं। राष्ट्र और मानव मात्र की आजादी देशप्रेम और सास्कृतिक विरासत को सजोने के लिये ये नाटय–रचनाएँ प्रेरक रहेंगी। मुख्य पात्र भारतीय अस्मिता से जुडे हैं। इनकी रगमचीय प्रस्तुति आमजन को जीवन के सच्चे अर्थों से जोडेगी।

'त्रिवेणी नाटय सग्रह मे 'मण्डी मुर्दों की 'पद्मादेवी और आप क्या करते ? निरकुश मनुष्य को अकुश लगाने के बोध से लिखे लगते हैं। ऐसे प्रयास समाज और नेतृत्व को परिवर्तन के लिए झकझोरते हैं।

इन कृतियो और भावी सृजन–यात्रा के लिए मेरी मगलकामनाए।

सद्भावी
दीपेन्द्रसिंह शेखावत



धायभाई तुलसीनाथसिहजी तवर

हिन्दुआ सूरज एकलिंगावतार
श्री 108 श्री भूपालसिहजी बहादुर मेवाड नरेश (उदयपुर)
सू
पुरस्कार मे प्राप्त अमरशाही पोशाक मे
(लेखक रा मामाश्री)
जिका री प्रेरणा सू लेखक राजस्थानी भाषा मे लिखणो सुरू कीधो

धरमेलो

पहलो दरसाव

(सोभागचन्द री हवेली। दिनूगै रो बगत चीडिया री चिक–चिक। हवेली रै माय कानी सू धीमी–धीमी आवाज मे भजन सुणीजै अर बेई वेळा सोभागचन्द रै बेटै राजेन्द्र री बहू सुमन हाथ मे पूजा री थाळी लेय र कमरै मे आवै अर आपरी स्वर्गवासी सासू री तस्वीर माथै फूल चढा'र माथो टेकै। बीं टेम ई सोभागचन्द कमरै मे बडतो बोलै)

सोभाग सूरज अगूण री जाग्या आथूणो ऊग सकै पण म्हारी बहू रै नित–नेम माय कोई फरक नीं पड सकै।

(सुमन–सोभागचन्द रै पगा मे झुकै)

जीवती रै थारै भक्ती–भाव नै जे राजू री मा आख्या सू देखती तो निहाल हुय जावती।

सुमन म्हैं कित्ती अभागण हू बाबूसा ! मा–बाप म्हारै बचपण माय ई मरग्या अर सासरै मे सासू रा दरसण करमा मे लिखोडा कोनी।

सोभाग गैली बात्या करै बावळी। मरणो–जीवणो किसो मिनख रै हाथ माय है ?

(रामनाथ कमरै मे आवै अर दोना री बात्या सुणै)

सुमन आप साची फरमावो हो बाबूसा पण म्हैं कैनै सासू कैऊ अर कैनै मा ?

सोभाग थारा सासू–सुसरो मा–बाप म्हैं हूँ बेटी। फेरू कदैई आ बात सोच'र मनडो दु खी मत करियै। अरे ! बावळी म्हैं तनै अै घर में बहू नई बेटी बणा र लायो हूँ अच्छा म्हनै आ बता कै बेटी अर बहू माय कोई फरक है ? समझै जणै तो खाली

सवदा रो हेर–फेर है। वैमें ई बटू री जग्या ऊंची है। बेटी तो बगत आया मा–बाप नै बिलखता छोड र आपरै सासरै सिधार जावै आ तो ससार री रीत है पण परजाई बेटी बटू बणर बस री बेल बधावै अर सासरै म ई जीवै अर सासरे म ई मरै।

(सुमन आख्या पूछ र)

सुमन — आप ठीक फरमावो हो बाबूसा। म्हैं तो म्हारै भाग नै सराऊ हूँ कै आप जिसा सुसरा म्हनै मिल्या। म्हैं तो मा–बाप सासू–सुसरा सै आप म ई देखू, नीं तो म्हारै जिसी अनाथ नै इसो सहारो अर ओ घर कठै पडियो हो ? भगवान री लीला रो खेल है कै आप म्हनै कीचड सू उठा र ओ ऊंचो आसण दियो।

सोभाग — अरे ! बावळी ! कमल रो फूल कादै–कीचड़ मे खिल र ई महालक्ष्मी रै चरणा री सोभा बधावै। जा माय जा अर बै कुम्भकरण नै जगा र बता कै स्टेसण जावणो है। गोपाल आवणआळो है।

सुमन — बडो हुकम बाबूसा।

(सुमन माय कानी जावै– रामनाथ आख्या पूछै)

सोभाग — काई बात है रामनाथ ? थारी आख्या मे आसू ? क्यू ? तबीयत वगैरा तो ठीक है नी ?

रामनाथ — कीं नीं मालिक। बहूराणी री बात्या सुण र बडी मालकिन री याद ताजा व्हैगी। आज मालकिन मौजूद व्हैता तो बहूराणी नै देख र कित्ता राजी व्हैता अर कित्ता–कित्ता हरख–कोड करता ? बडी मालकिन साक्षात् लिछमी हा। लिछमी जिसो रूप। हाथ रा दातार। सगळा नै जीकारो देर बोलणो बारो सभाव हो। तू–तडाक बारै मूढै कदैई नीं सुण्यो। सगळै चौखळै मे बारी ओळखाण ही। आप–आप रो दुख–दरद लेय र लोग बारै कनै आवता अर नुवैं आतमबळ सू भर र पाछा आपरै घरै जावता। म्हारै देखता बारी सीख सू पडोस री कई गरीब गवाडिया लूठै घरा मे बदळगी।

सोभाग — बीती बात्या नै लेय र दुखी नई हुवणो रामनाथ। कैवत है नी कै बीती ताहि बिसार दै आगै री सुध लै। जनमणो–मरणो

आदमी रै हाथ म कोनी आ तो साईं रो खेल है। मालिक रा घालोडा सास है। जित्ता घाल्या है बित्ता ई लेईजसी। तिल घटै ना राई बधै मौत रो दिन निश्चित है जलम्यो है जिको तो जासी। सुपनै माय भी आ नीं सोची ही कै राजू री मा म्हनै इया अधवेयी माय गोतो देय जासी। सावरियो ई जाणै किण भौ रो बदळो लियो है म्हारै सू।

रामनाथ मापी चाऊ हूँ मालिक दिनूगै–दिनूगै म्हैं भूली–बिसरी बात्या याद करा र आपनै दुखी कर दिया। हूँ बडी मालकिन नै जित्तो भूलणो चाऊ बित्ताई घणा म्हारै चैतै आवै। म्हारै माथै तो वारी घणी मेरबानी ही। कैवता रामूजी आवणआळो जमानो भौत बदळयोडो जमानो हुसी। नौकर अर मालिक रा अै रिस्ता को रैसी नीं। टाबरा नै खूब पढाओ। पढण–लिखण रो सगळो खरचो सेठजी उठा लेसी बै घणा ई दातार है म्हैं बानै फेरू कैय देसू।

सोभाग म्हैं कैयो नी बीती बात्या नै याद कर र दुखी हुवणो समझदारी कोनी हुवै बावळा। जा माय जा अर म्हारै वास्तै चाय लेय र आ।

(बीं टेम सुमन चाय लय'र आव। रामनाथ सुमन रै हाथ माय सू चाय री ट्रे झाल'र)

रामनाथ बहूराणी म्हैं आपनै कित्ती बार कैयो है कै म्हारो काम थे मत करिया करो। हू पछै अठै हू काय वास्तै ? म्हैं अबै आपनै काईं–काईं बताऊ मालिक। आप–ई बहूराणी ने समझाओ। म्हारी बात तो अै मानै कोनी। म्हैं कैय–कैय र धापग्यो अर साची बात तो आ है मालिक कै बहूराणी रै अै घर मे आया पछै म्हैं ता अै घर म मुफत री ई पगार लेऊ।

सुमन रामूचाचा आप अै घर री घणी सेवा कर ली अर हमैं ई किसी कसर राखो हो ? म्हानै सगळा नै सम्भाळ राख्या है आ कईं छोटी बात है। अै उमर मे दिनभर घर अर बजार रा चक्कर काढता रैवो।

(सुमन माय जावै)

सोभाग देख्यो रामनाथ। किसा भाग है आपारा ? इसी सैणी–समझणी लिछमी जिसी बहू घर मे आयगी।

रामनाथ आप री परथा नै सराऊं हूँ मालिक जो इसी हीरै जिसी बहू आप दूढ'र लेय'र आया।

सोभाग अैमे तो बजार सूं घडो लावण जिसी बात है रामनाथ। लावै तो लोग कच्चो–पक्को देख'र ठोक–बजार ई लावै पण निगळ जावै–ओ धणी रो भाग है। बहूराणी नै देख'र सोचूं लारै कई चोखा करोड़ा हा जिको इसी सैणी–समझणी बहू घर में आयगी। जा माय जा अर थारै बियै कुम्भकरण राजाबाबू नै जगा'र कैय कै स्टेसण जावण रो बगत हुयग्यो है। गोपाल आवणआळो है। कई ठा आजकाल री औलाद नै हो कई गयो है ? रातभर टीव्या देखता रैवै अर सूरज ऊगण रै बाद ई माथा तोडता रैवै। कोई नित न कोई नेम।

(बीं टैम ई राजू आवै)

रामनाथ अै लो याद करता ई राजाबाबू पधारग्या। घणी लांबी उमर पाई है।

(सोभागमल रै पगे लाग'र आपरी मा री फोटो आगै माथो झुका'र)

राजू लांबी उमर था पाई है या म्हैं पाई है रामू चाचा ?

रामनाथ सित्तर बरस तो ले लिया राजाबाबू। घणै जीवणै में कई पडियो है ? सांवरियो थारी लांबी उमर करै।

(बीच मे बोलै)

सोभाग राजू, आज तो घणो ही बेगो उठग्यो। हाल तो दस बजण मे दो घन्टा बाकी है।

राजू अबै आप काईं भी कैय दो बाबूसा। नींद रै मामलै मे सरू सूं ई थाडो माठो हूँ।

सोभाग कई बोल्यो थोडो–सो माठो ? तू तो कुम्भकरण री गादी बैठोडो है।

राजू रामूचाचा म्हैं थानै कैय'र सूतो हो कै म्हनै बेगो उठाया स्टेसण जावणो है।

रामनाथ पूरा पच्चीस हेला मारया हा राजाबाबू, पूरा पच्चीस। पण म्हनै तो इया लागै'कै घणा हेला मारिया आपरी नींद और गैरी हुवती जावै।

राजू अरे ! अै उमर मे क्यू कूडा बोलो हो रामूचाचा ? पच्चीस हेला कद मारया हा ? म्हैं अक–अेक हलो सुण रिया हो थ पाच हेला मार र चुप व्हेग्या।

सोभाग अरो मतलब तू जाण–बूझ र बिस्तरा मे पडियो रैवे ?

राजू रात नै मोड ताई पढू, बाबूसा। अ खातर बेगा उठणो थाडा दौरो लागै।

सोभाग उपन्यास अर फिल्मा री किताबा पढै है कै कोर्स री किताबा पढै ?

राजू कोर्स री किताबा ई पढू, बाबूसा।

(बीं टैम फोन री घण्टी बाजै। राजू फोन उठा र)

हैलो कुण बनवारी ? हा–हा बस अेक मिन्ट मे थारै कनै ई आरियो हूँ। विनै सू म्हनै स्टेसण ई जावणो है।

(फोन राख र)

म्हैं चालू, बाबूसा।

सोभाग गप्पा लगावण मत बैठ जाये। टैम सू स्टेसण पौंच जाये।

(राजू बारै कानी जावै)

बुद्धू कठैई रो इत्तो बडो टोगडो हुयग्यो पण अकल तीन कोडया री कोनी।

रामनाथ अबार टाबर है मालिक बोझ पडया सू हाफैई समझ आ जासी।

सोभाग काई गैली बात्या करै है रामनाथ। अबै ओ दूध–पीवतो टाबर तो हे कोनी। पच्चीस बरसा रो टोगडो है। न पढाई पूरी करी अर ना धन्धो सम्भाळै। म्हारो अबै काई भरोसो ? ओ तो पाकोडो रूख है। हवा रै हळक फटकारै सू जा पडसी। आज मरया काल तीसरो।

रामनाथ ना–ना मालिक सावरियो आपरी लाबी उमर करै। जठै ताई राजा बाबू री बात है गादी री जिम्मेदारी आया सू अकल आ जासी। आप समझो ज्यू सफा डफोळ कोनी होनहार है राजाबाबू।

सोभाग काई खाक होनहार है ! अकल रै लारै लठ लिया पडियो है। तीन साल सू बी ए फाइनल मे बैठयो है। अबै गोपाल नै

देख राजू सू उमर म तीन बरस छोटो है अर आज उदैपुर सू डाक्टर री डिगरी लेय र आरियो है। थोडी अकल दिया कर वै डफोळ नै।

(घडी मे आठ वजै)

अरे ! वात्या ई वात्या मे आठ बजग्या म्हैं चालू, रामनाथ।

(सोभागचन्द सोफै सू उठै अर सुमन आवै)

सुमन पान री डब्बी लेता जाओ बाबूसा अर काथो–सुपारी भी कैरै सागै भिजवा दिया थोडा–सा रैया है।

सोभाग देख्यो रामनाथ म्हारी बहूराणी रो दिमाग कित्तो ध्यान राखै हर बात रो। अर अेक बो है अकल रो दुसमण जिकै नै दिन रो खायोडो सिझ्या नै याद को रैवैनीं।

(सोभागचन्द बारै निकळ जावै)

सुमन रामूचाचा ?

रामनाथ हॉ बहूराणी।

सुमन बाबूसा अबार म्हारी बडाया करता गया है अर म्हैं बाबूसा नै ओ तो कैवणो भूल ही गई कै आपनै देवीसिगजी याद फरमाया है।

(हसतो बोलै)

रामनाथ तो अेमे इत्ती चिन्ता करण री कई बात है बहूराणी। म्हैं बजार ता जा ही रैयो हूँ, मालिक नै याद दिरा देसू।

सुमन वा रामूचाचा पइसा टोकरी मे ही राख्या है अर हॉ रामूचाचा रश्मि नै स्कूल सू जल्दी लेवता आया। आज बाबूसा रो जन्मदिन है मिन्दर घालणो है।

रामनाथ म्हनै याद है बहूराणी।

(रामनाथ चाय रा बरतण उठा'र माय जावै। सुमन भजन गुणगुणावती कमरो ठीक करै अर बारै कानी सू बनवारी आवै)

बनवारी भाभीसा मुजरो अर्ज करू।

सुमन देखो बनवारीलालजी म्हैं आगै भी थानै कई बार टोक्या है। जद कदैई अठै आवो बारणो खुलो हुवै थारी ओळखाण

देय'र माय आया करो।

बनवारी गलती री माफी बगसाई जावै। आगै सू आपरी केवोडी वात रो ध्यान राखसू पण म्हनै आज अेक नई बात रो वेरा पडियो कै फूठरा होवण रै सागै आप गळै रा भी कित्ता सुरीला हो।

सुमन घणी चतराई रैवण दो जिका सू मिलण नै आया हो बै घर मे कोनी स्टेसण

(बनवारी बीच मे बोलै)

बनवारी स्टेसण गयोडो है। बाबूसा गादी माथै विराज रैया है रामूचाचा सब्जी लेवण नै बजार गयाडा है। सोच्यो चोखो मौको है आपसू बात-बतळावण हुय जासी।

सुमन थोडी सरम करो बनवारीलालजी। थारी तो मत मारोडी है म्हारी तो पत रैवण दो। धरमभाई बणर धरमभाई री लुगाई माथै खोटी नीयत तो मत राखो।

बनवारी हूँ तो आपरै भलाई री बात सोचू भाभीसा अर सायरियै नै कोसू कै आप जिसी फूठरी-फरी लुगाई कैरै पल्लै बाध दी ?

सुमन बनवारीलालजी

बनवारी राजू म न रग है न रूप अर अकल रो माठो।

सुमन सीमा मत उलाघो बनवारीलालजी थारो फूठरापणो अर थारी अकल थारै काम आसी। धरमेलो राखो। मिनखा रा जायोड़ा हो तो जिकै पगै आया हो पाछा चल्या जावो। नीं तो धक्का मार र कढवाणा पड़सी .. रामूचाचा

बनवारी थानै धक्का मारण री नौबत नीं आवै म्हैं चालू, फेरू हाजिर होसू।

(बनवारी बारै निकळ जावै अर रामनाथ आवै)

रामनाथ काई हुकम है बहूराणी ?

सुमन बनवारी आयो बडी मुश्किल सू काढयो है।

रामनाथ म्हैं मागीलाल कनै सू कपडा लैवण लागग्यो अर बैनै समझायो कै कपडा मे बासी कड़प मत लगाया कर। बै दिन मालिक वडा नाराज हुरिया हा। मागीलाल रो हिसाब ही कर दियो।

हमैं बजार जारियो हूँ। एक बात और कैऊ बहूराणी बुरो नीं मान्या अै बनवारी नै घणो मूढै लगावणो चोखो कोनी। ओ जिकी हाडी मे खावै बै मे ई छेद करणआळो आदमी है। राजाबाबू तो भोळा आदमी है। अै तीन कोडी रै आदमी सू धरमेलो घाल राख्यो है।

सुमन अै बेईमान नै आप सू घणो म्हैं जाणू हूँ, रामूचाचा। ओ खोटी नीयत रो आदमी है। आप मूढै लगावण री बात करो म्हैं तो अेरी सकल देखणी ही नीं चाऊ। ढीठो है। कई बार मना कर दियो पण मौको देख र आ जावै अर ऊलजलूल बात करण री चेष्टा करै। पण आज म्हैं बैनै फटकार र काढयो है। स्यात फेरू को आवैनी।

रामनाथ म्हैं जाणू हूँ बहूराणी पण कुत्ते री पूछ सात साल ताईं भूगळी मे राख र देखलो बा सीधी को हुवैनी। ओ ब्होत ही ढेठो आदमी है।

सुमन तो उपाय कईं करा रामूचाचा। म्हैं तो दो–चार बार बानै भी इयै बात रो इसारो करियो पण बै हस र टाळ दियो। बारै तो आख माथे धरमेलै री पाटी बधोडी है।

रामनाथ बा तो ठीक है बहूराणी पण आदमी नै जरूरत सू घणो सरीफ अर भोळो हुवणो ही दुखदाई है।

सुमन जणै ई तो कैवै कै तू समझे कोनी। भुजाई सू देवर बात नीं करसी तो कैसू करसी ?

रामनाथ साचाणी भोळो मिनख दुसमण री गरज पालै बेटी पण आप थोडा हुसियार रैया।

सुमन म्हारो बस चालै तो म्हैं बै बेइमान नै अै घर मे पग को राखण दू नीं रामूचाचा पण बानै हमैं कुण समझावै खैर अबार तो आप पधारो। रश्मि नै लावण रो टेम हुयग्यो।

रामनाथ म्हैं निकळ ही रीयो हो बहूराणी पण आप रो हेलो सुण्यो जणै पूठो घिरग्यो।

सुमन बो तो चोखो करियो। आप रै घरै हुवण रो जाण र बो बारै निकळग्यो। अबै आप पधारो। हा प्रसाद लावणो ना भूल्या।

रामनाथ म्हनै याद है बहूराणी।

(रामनाथ बारै निकळै अर बारै कानी सू राजू अर गोपाल हाथ मे सूटकेस लिया आवै)

राजू	देख सुमन कुण आयो है ओळख्यो अैनै ?

(दोनू अेक–दूजै नै नमस्ते करै)

सुमन	आप आयै दिन तो जिकर करता रैवो हो। आपरै बचपण रा दोस्त। अेकै साथै पढिया अेकै साथै खेल्या।

राजू	बिलकुल बो ई डाक्टर गोपाल। म्हारो यार।

(बीच मे बोलै)

गोपाल	माफी चाऊ हूँ भाभीसा। म्हैं गोपाल री सादी मे सरीक नीं हुय सक्यो। जी तो घणो ई दुख पायो पण फाइनल री परीक्षा चाल री ही। अें खातर चाह र ही को आ सक्यो नीं। बाबूसा तो माफ ई नीं करैला म्हनै।

सुमन	बाबूसा तो आपनै याद करता ही रैवै। आपरै आवण रो तार आया पछै तो आपरी रट लगा राखी है।

(बीच मे बोलै)

राजू	गोपाल तनै थारी भाभी सू तो म्हैं मिलायो ही कोनी। आ है थारी भाभी सुमन।

(सगळा हसै)

तू तो ब्याव माथै आयो कोनी पण म्हैं थारी सगळी जाणकारी सुमन नै दे दी। बाबूसा रै सागै–सागै म्हे दोनू ई थारै आवण री हर राखता।

गोपाल	थे म्हारी हर नई राखसो तो राखसी कुण ? म्हारो और है कुण ? बाप री जाग्या बाबूसा अर भाई री जाग्या राजू भैया अर सावित्री मासा री प्रीत पाळसी सुमन भाभी।

सुमन	आप ठीक कैवो। अै घर मे स्वागत है आपरो। बाबूसा तो रोज रा रोज आपनै याद करता रैवै अरे। आप ऊभा क्यू हो ? बिराजो नीं। नास्तो तैयार है लेय र आऊ।

(सुमन माय जावै)

राजू	क्यू गोपाल भुजाई तनै पसन्द आई ?

गोपाल	भौत सालीन अर समझदार है भाभीसा। थारै भाग नै सराऊ राजू भैया।

राजू तू साची कैवै है गोपाल। सावरियै री मेहर नईं होवती तो म्हारै जिसै आदमी नै इत्ती फूठरी अर पढी–लिखी लडकी कुण देवतो ?

गोपाल भाग तो है ई पण ईं घर मे कोई कमी कोनी। बाबूसा जिसा आदमी पडिया कठै है ? फेरू अै घर माथै लिछमी री अपार किरपा है।

राजू या तो है गोपाल पण म्हारी सकल नै लेय'र म्हारै में इसी हीन भावना घर करगी कै हूँ खुद नै दीन–हीन समझू। रात दिन आ पीडा भोगू।

गोपाल राजू भैया बात्या ई बात्या मे काईं बावळी बात्या करण लागग्या। चौखा–बुरा अर काळा–गोरा रा गाय अळगा नीं बसै। फेरू हमैं विज्ञान इत्ती तरक्की करग्यो कै कुरूप नै सरूप हुवता कोई देर नीं लागै। म्हैं प्लास्टिक सरजरी में ही डाक्टरी करी है। फेरू अै ससार मे गुणा री पूजा है। रग–रूप रै फूठरै रोहिडै रै फूल नै कुण माथै लगावै ?

राजू आ बात म्हैं समझू हूँ गोपाल पण हीनभावना सू पिड छूटै कोनी।

गोपाल ससार मे रैवणो अर जीवणो है तो हीनभावना सू ऊपर उठणो पडसी। नईं तो जिन्दगी कहर बण'र रैय जासी। थे रिसी अस्टावक्र रो नाव तो सुण्यो हुसी विदेह राजा जनक रो गुरु हो।

राजू म्हैं जाणू हूँ गोपाल पण कणैई–कणैई जी मे आवै कै भगवान म्हारै सागै भौत बडी मसखरी करी है अर कणैई सोचू मसखरी म्हारै सागै कोनी बेचारी सुमन सागै हुई है कै बै गरीब नै म्हारै जिसै कुरूप रै पल्लै बाध दी।

गोपाल राजू भैया थे बोल लिया तो अबै म्हैं बोलू ?

राजू म्हैं मजाक नईं कर रियो हू गोपाल साची कैय रियो हूँ।

गोपाल देखो राजू भैया आज म्हारै माथै बाबूसा रो हाथ नीं हुवतो तो म्हैं डाक्टर तो कईं होस्पिटल रो सायत चपडासी ही नईं बण पावतो अर

(राजू बात नै बदळतो बोलै)

राजू थारी परीक्षा रो नतीजो तो दस दिन पैली निकळग्यो हा अठै आवण मे भौत देर लगा दी। तू इत्ता दिन कठै ठैरग्यो। आ जाण र बाबूसा नै भौत खुसी हुई कै तू पूरे राजस्थान मे अव्वल आयो है। वो सोनै रो तकमो कठै है ?

गोपाल आ सब बाबूसा री मैरबानी है। बारै परताप सू ई हूँ इयै मंजिल ताईं पूग्यो हूँ, राजू भैया।

(सोभागचन्द कमरै मे आवै)

सोभाग अरे ! गोपाल आवण मे भौत देर लगा दी ?

(गोपाल पगा मे झुकै)

गोपाल पाय लागू बाबूसा– आपरो स्वास्थ्य किया है ?

सोभाग चोखो–भलो हूँ। रोज दिनूगै पाच–सात मील रो पैंडो कर'र आऊ हू।

(सुमन चाय लेय र आवै। राजू माय जावै)

लै बहूराणी चाय लेय र आयगी। भाभी सू मुलाकात हुई ?

गोपाल आपरै पधारण सू पैली भाभीसा सू मुलाकात हुयगी बाबूसा।

(सुमन माय जावण लागै)

सोभाग अरे ! बैठ बहू। गोपाल तो घर रो ही टाबर है।

सुमन रामूचाचा बजार गयोडा है। दूध चूल्है माथे चढयोडो है।

(सुमन माय जावै)

सोभाग गोपाल बेटा हीरै जिसी बहू है। सैणी समझणी सोळै किलास पढयोडी कोई मोट न मिजाज।

गोपाल आ सब आपरी पुण्याई है बाबूसा।

सोभाग साची कैवै बेटा हा अबै तू थारी सुणा। आगै थारो कईं प्रोग्राम है ? पढाई जारी राखसी या

(बीच मे बोलै)

गोपाल म्हारी तो पोस्टिग इयै सहर मे हुयगी बाबूसा। देरी सू आवण रो कारण जैपुर सू पोस्टिग ओर्डर लेवणा हा सब ओर्डर हाथोहाथ सागै लेयर आयो हूँ। काल डयूटी जोइन कर लेसूं।

सोभाग — ज्यू तू ठीक समझै त्यू कर। म्हारो कैवण रो मतलब तू पइसै–टकै कानी मत देखै। भगवान रो दियो घणोई है।

गोपाल — हूँ तो जनम–जनमान्तर तक आपरो रिणी रैसू, बाबूसा। आपरो हुकम हमेसा सिर–माथै रैसी।

सोभाग — म्हैं माय चालू, तू झूठा गुणगान करण लागग्यो।

(सोभागचन्द माय जावै अर रामनाथ रश्मि नै लेय'र आवै)

रामनाथ — गोपाल बाबू, आयग्या ? उडीक राखता–राखता आख्या पथराईजगी।

(गोपाल पाव छूवै)

गोपाल — ओ टाबर कुण है चाचा ?

रामनाथ — आपणै राजाबाबू री बेटी है रश्मि। एल के जी मे पढै। दिनूगै स्कूल छोड र आऊ अर सब्जी लेवण नै बजार जाऊ जणै पाछी लेवतो आऊ।

रश्मि — नमस्ते गोपाल चाचा।

गोपाल — नमस्ते रश्मि। तू तो म्हारो नाव भी जाणै।

रश्मि — थे म्हारी गुडिया रै ब्याव मे क्यू नीं आया ?

गोपाल — कई करतो रश्मि बा दिना म्हारी परीक्षा चाल री ही। अै खातर राजू भैया री सादी मे भी नीं आ सक्यो।

रश्मि — राजू भैया री सादी तो फेरू हुजासी पण म्हारी गुडिया बार–बार को परणीजै नीं। अच्छा बताओ म्हारी गुडिया खातर काईं–काईं परजेन्ट लाया हो ?

(हसतो बोलै)

गोपाल — थारै खातर अर थारी गुडिया रै खातर पूरो सूटकेस भर र लायो हूँ, जा र देख लै।

रश्मि — म्हैं अबार देख र आऊ।

(रश्मि माय कानी भाजती जावै)

गोपाल — हा रामूचाचा अबै आप सुणाओ आपरी किया कट री है ?

रामनाथ — आराम सू दिन काट रियो हूँ गोपाल बाबू। भगवान बडा बाबूसा री उमर लाम्बी करै।

गोपाल	ठीक कैवो हो चाचा। बाबूसा रै दरबार मे कैनैई कोई तकलीफ नीं हुय सकै।

(सोभागचन्द सुमन अर रश्मि आवै)

सोभाग	गोपाल तनै कोई काम नई है तो मिन्दर चाल र आवा

(गोपाल बीच मे बोलै)

गोपाल	चालो नी बाबूसा। आज आपरो जनमदिन भी है।

सोभाग	तो तनै याद है म्हारो जनमदिन ?

गोपाल	याद कूकर को रैवैनी बाबूसा ?

सोभाग	आ भाई रामनाथ।

(सगळा जणा बारै कानी जावै अर बनवारी आवै)

बनवारी	राजू सेठ माय है कई ?

(राजू कमरै मे आवै)

राजू	आ बनवारी गोपाल नै लेवण नै स्टेसण जाय र आयो हूँ हा बोल ठंडो पीसी या चाय बणा र लाऊ।

बनवारी	बणा र लाऊ। क्यू भाभी कठै गया ?

राजू	बाबूसा रामूचाचा सुमन अर गोपाल– सगळा शिवमिन्दर दरसण करणनै गया है।

बनवारी	गोपाल रै आवण री खुसी मे ?

राजू	ओ कारण कोनी। आज बाबूसा रो जनमदिन है। परम्परा रै अनुसार इयै दिन सगळा ई मिन्दर जावै।

बनवारी	तो तू सागै क्यू नीं गयो ?

राजू	म्हनै देवी–देवता मे घणी आस्था कोनी। अैरै अलावा कोलेज ही जावणो हो।

बनवारी	तू बोडम है। अकल रै लारै लठ लेर पड़ियोड़ो है।

राजू	काईं मतलब ?

बनवारी	मतलब साफ है। इयै गयै–गुजरयै जमानै में आदमी रो घणो विश्वास करणा ठीक कोनी। भाभीसा रो गोपाल रै सागै मिन्दर जावणो जरूरी हो ?

राजू	तनै बतायो नी सुमन अेकली कोनी बाबूसा वगैरा सागै है।

बनवारी भाई राजू, सतर्क तो रैवणो चइजै। गोपाल जवान है। डाक्टरी पास है। फूठरो है। भाभीसा सू वैरो घणो मेळजोळ चोखो को रैसी नीं।

राजू बनवारी गोपाल माथे धींगाणै रो बहम मत कर। हूँ वैनै बरसा सू जाणू। बो अे घर मे छोटै सू बडो हुयो है। म्हारै छोटे भाई जिसो रिस्तो है वैसू।

बनवारी वैसू काई हुयो। औलाद काई ठा कैरी है।

राजू गैली बात्या करै है। गोपाल म्हनै बडै भाई सू घणो चावै।

बनवारी ओ थारो बहम है जिकै रो कोई इलाज कोनी। गोपाल भौत हुस्यार किसम रो आदमी है। बो थारै बाबूसा रै मूढै लाग'र डाक्टरी पढ ली अर अबै बो थारै नेडो लाग र थारो घर खराब करसी।

राजू आखिर तू कैवणो काई चावै है ?

बनवारी तू ओ क्यू भूलै है कै जित्तो तू बेडोळो है। बित्ता ही भाभीसा फूठरा है जवान है।

राजू थारै इसारै नै हूँ समझू हूँ। हूँ म्हारै घर री मोट–मरजादा सार भी समझू हूँ।

बनवारी तू कीं नीं समझै। तू भौत भोळो है। लुगाई रै चरित्र नै जाणणो कोई हसी–खेल कोनी। बडा–बडा महारथी अैमैं भूल करग्या जणै ई तो आपा रै सास्त्रा मे लिख्यो है–तिरिया रै चरित्र नै अर पुरुष रै भाग नै देवता ही को जाणैनीं।

राजू देख राजू, थारो–म्हारो धरमेलो है अैरो ओ मतलब कोनी कै तू म्हारी घरेलू बात्या मे टाग अडावै। अैरै अलावा कोई बात हुई तो म्हैं खुद सभाळ लेसू।

बनवारी आग लागण रै पछै कुओ खोदण सू कोई फायदो कोनी। तू म्हारी बात नै समझण री कोसिस क्यू नीं कर रियो है। म्हैं थारो खाली धरमभाई कोनी थारो हेताळू ही हूँ।

राजू माया–भाया रै माय नफरत पैदा करण री कोसिस मत कर। गोपाल म्हारै मा–जायै सू बत्तो है।

बनवारी — अैरो मतलब म्हैं थारो दुसमण हूँ। म्हैं तो थारै भले वास्तै कैई है। तू भोळो आदमी है– म्हैं ससार रा दाव–पेच घणा देख्या है। म्हारी सीखं म्हारै कनै पछै माथै हाथ देय र रोअे मत।

राजू — जिसी थारी समझ ही बिसी बात तू म्हारै भलै खातर कैयदी अबै माफ कर। तू जा म्हैं बाद मे आसू।

(बारै कानी सू सुमन रामनाथ अर रश्मि आवै)

बाबूसा अर गोपाल कठै रैयग्या रामूचाचा ?

रामनाथ — गोपाल बाबू रै सागै बडा मालिक दुकान पधारग्या।

(बीच मे बोलै)

बनवारी — म्हैं चालू राजू। म्हनै फार्म हाउस जावणो है।

(बनवारी बारै निकळ जावै अर रामनाथ माय जावै)

सुमन — ओ बनवारी रोज–रोज अठै क्यू आवै है ?

राजू — बनवारी सू म्हारा धरमेला है। दु ख–सुख री बात करण आ जावै। थानै कई अैतराज है ?

सुमन — लुगाई जात हू। मिनख री आख पिछाणू। इयै रो घर मे आवणो–जावणो चोखो कोनी। म्हैं थानै आगै भी कई बार ई बात रो इसारो करियो हो।

राजू — ओ थारो बहम है। बनवारी भलो अर भीड पडिया काम आवणवाळो आदमी है। धरम रो भाई बण र घात थोडी ई करसी ?

सुमन — म्हने ता म्हारी गुरुआणी री सीख दियोडी है। धरमबैन बणाओ अर घर मे सौत घाललो। धरमभाई बणाओ अर नुवो खसम त्यार कर लो। इयै वास्ते हूँ तो इयै बखेडा मे पडू कोनी। खून रा रिस्ता ही निभ जासी तो ही घणा है। म्हैं तो आयै दिन धरमभाया अर धरम बैना सू घर बिगडता ई देख्या है। पडोस में वकील झूमरमलजी बसै दस बरसा ताईं राधा बाई सू राखी बधवावता रैया अर हमै धणी–बहू बण्ग्या। क्यू थानै ध्यान कोनी गालछा रै चौक मे मालती बैनजी सेठ केसरीचन्दजी री बहू नै बैन कैवता–कैवता घर मे सौत बण र बैठगी। अै खातर दूर सू ई नमस्कार है आ धरमेला नै। आयै दिन

समाज मे अै घटनावा हुवै है आदमी आख्या सू देखै है पण चेतै कोनी।

राजू थारो उपदेस सुण लियो। म्हनै कोलेज जावणो है। हूँ कोलेज जाऊ।

(राजू बारै निकळ जावै अर गोपाल आवै)

गोपाल ऊभा–ऊभा काईं सोच रिया हो भाभीसा ?

सुमन कोई खास बात कोनी पण म्हनै अै बनवारी रो घर में आवणो बिल्कुल पसद कोनी।

गोपाल आप आ बात कैवो हो पण राजू भैया तो बनवारी री भौत बडाया करै है अर बैसू धरमेलो घाल राख्यो है।

सुमन धूड है इसै धरमेलै मे। घणो तो थानै कई बताऊ बस इत्तो ही जाण लो कै बनवारी आपणै घर मे आवणजोगो आदमी कोनी।

गोपाल इसी–बिसी कोई बात है तो थानै राजू भैया नै बता देवणी घइजै।

सुमन कई बार कैय चुकी पण बारै कान माथै जू तक को रेंगैनीं। बै बनवारी री चीकणी–चोपडी बाता मे आय र आख माथै पाटी बाध राखी है। जद कैवो तद धरमेलो आडो आ जावै।

गोपाल आ बात आप बाबूसा रै काना मे घाल देवता !

सुमन बाबूसा सू बात करण मे म्हारी कुईं मरजादा है। बाबूसा समझदार है मिनख पिछाणै। बा कई बार बानै समझाया पण बारै समझ मे को आवैनीं। म्हैं घडी–घडा कैय र घर में राड बधावणी को चाऊनीं।

गोपाल तो अैमै इत्ती चिन्ता करणै री काईं बात है ?

सुमन गोपाल बाबू, थे समझो कोनी ! मरद जात सदा सू ई औरत जात रै प्रति सकालू रैई है। जे कोई कैरै ई मन मे विस रो बीज बो देवै तो बैनै 'वटवृक्ष बणता देर को लागैनीं। अर ओ ई डर म्हनै खा रियो है। बनवारी किसी भी सीमा ताईं जा सकै।

गोपाल — *सुमन भाभी कल्पना रो भूत ऊभो कर'र दुखी होवणो कोई* समझदारी कोनी।

(बनवारी कमरै मे आवै)

बनवारी — भाभीसा नै काई उपदेस दियो जारियो है डाक्टर सा ब ? कोई मेडिकल री थ्योरी समझाओ हो या

(गोपाल बिगडतो बोलै)

गोपाल — पैला तू तमीज सू बात करणी सीख। जे भलै लोगा रै घर म उठणो–बैठणो नीं आवै तो अठै आयो क्यू है ?

बनवारी — क्यू डाक्टर सा ब ? आपरी सान मे म्हारै सू इसी काई गुस्ताखी हुयगी जिको आप म्हनै आ नेक सीख दवण लाग रिया हो ?

(सुमन माय जावै)

गोपाल — तू राजू भैया रो दोस्त है राजू तक ही रै। दूसरा रै मूढै लागण री हिमाकत मत कर। राजू भैया घरै कोनी ! रस्तो नाप अठैसू।

बनवारी — कमाल है छाज तो बोल्यो कोनी अर चालणी बोलण लागरी है।

गोपाल — म्हैं कयो नी तमीज सू बात करणी सीख।

बनवारी — म्हनै तमीज सीखावणी महगी पडसी अर अेक बात सुणो डाक्टर सा ब ! आ हवेली रायबहादुर सोभागचदजी री है आपरी कोनी। आप भी म्हारी तरिया राजू रा दोस्त हो अै घर मे आश्रित हो। हवेली रा मालिक कोनी।

गोपाल — म्हारा रिस्ता मत बखाण अर थारो धरमेलो थारै कनै राख मुख मे राम बगल म छुरी।

(सोभागचन्द बारै सू कमरे मे आवै)

सोभाग — अरे भाई किसै काटा–छुरी री बात्या हुयरी है ?

बनवारी — नमस्ते बाबूसा गोपाल बाबू डाक्टर बण र आया है। अै तो काटा–छुरी री ही बात करसी। हूँ तो राजू सू मिलण नै आयो हो पण डाक्टर सा ब सू मुलाकात हुयगी म्हैं चालू, बाबूसा।

(बनवारी बारै बारी निकळ जावै)

सोभाग — काई बात है गोपाल इयै बनवारी सू थाई झगड़ो हुयग्यो ? ओ भौत बदतमीज छोरो है अैरै मूंडै नी लागणो। राजू रो रियो तो गाव गयोड़ो है।

गोपाल — इयै बनवारी रो आवणो चोखो कोनी बावूसा ओ इयै घर रा दो फाड़ कर देसी।

सोभाग — जाणू हूं गोपाल राजू नै समझा दियो कै अैसू रिस्तो मत राख पण मानै कोनी अर म्हैं जवान बेटै सू राड़ बधावणी चाऊ कोनी।

गोपाल — आपरो फरमावणो सही है बावूसा। पण भाभीसा री नजरा में बनवारी चोखो आदमी कोनी।

सोभाग — पण आज ताई बहूराणी आ बात म्हनै बताई क्यू कोनी ?

गोपाल — बावूसा सुमन भाभी घर री बहू है। आप सू बात करता बानै कई मरजादा रो ध्यान राखणो पडै। पण भाभीसा आ बात राजू भैया नै बीसू बार कैय दी अर राजू भैया सुणी–अणसुणी कर दी।

सोभाग — ओ राजू बुद्धू है। दो दिन जिकै रै सागै बैठ जावै बैनै ई मा–जायो भाई समझ लै रामनाथ

(माय सू आवाज आवै)

आयो मालिक।

(रामनाथ आवै)

रामनाथ — हुकम मालिक।

सोभाग — आज रै बाद बनवारी रो बच्चो घर मे आ जावै तो बैनै घर सू धक्का मार र बारै काढ दिये।

रामनाथ — हुकम मालिक।

(रश्मि भागती आवै)

रश्मि — गोपाल चाचा आप लोगा खातर खाणो पुरस दियो वेगा चालो

(सोभागचन्द रो हाथ झाल र)

बेगा चालोनी दादू, खाणो ठण्डो हुयरियो है।

सोभाग चालू हू बेटी अरे ! अरे ! तू म्हनै पटकसी बेटा आ भाई गोपाल।

(सगळा जणा माय जावै।)

धीरै धीरै मच माथै अधारो हुवै।

दूजो दरसाव

(दिनूगै रो बगत। सेठ सोभागचन्द री हवेली। सोभागचन्द फोन माथै बात करै।)

सोभाग देखो सेठा आ सादी–ब्यावा मे पकच्युलिटि को चाल्या करैनीं। क्यू आप इता बेगा भूलग्या ? झवरलालजी सिझ्या पाच बजी बरात रवाना रो कैय र रात री साढी इग्यारा बजा दी अर आप बिना खाणो खाया ही घरै पधार आया *(हसै)* कई फरमाओ ? हा–हा आज म्हैं गोपाल सू और बात करसू जै रामजी री।

(फोन राखै– गोपाल कमरै मे आवै)

गोपाल कैरो फोन हो बाबूसा ?

सोभाग भन्साळीजी बोल रिया हा। जद सू तू डाक्टर बण र आयो है। बै म्हारै लारै ई लागग्या।

गोपाल पण म्हारै डाक्टर बणिया भन्साळीजी नै कई लेणो–देणो है।

सोभाग सम्पतलालजी रै घर मे जवान–मोटियार बेटी बैठी है। बेटी फूठरी भी है अर बी–कोम कर राखी है। आपरी बेटी रो रिस्तो थारै सागै करणो चावै है। म्हारै माथै दबाब डाल रिया है। म्हैं तो बानै अेक ही बात कैय दी। गोपाल नाबालिग कोनी। समझदार अर डाक्टरी पढ्यो–लिख्यो है। बींरी राय लेय र ही थानै कई कैसू।

(सुमन अर रामनाथ कमरै मे आवै)

गोपाल बाबूसा हाल तो म्हारी पढाई ही पूरी को हुईनीं। म्हैं प्लास्टिक सर्जरी माथै शोध करण सारू विदेश जावण री सोच रियो हूँ।

(सुमन रामनाथ रै कान मे कई कैवै)

सोभाग बहूराणी काईं कैवै है रामनाथ ?

(रामनाथ हस र)

रामनाथ बहूराणी गोपालबाबू रै रात नै मोडा आवण री सिकायत करै।

(गोपाल बीच मे बोलै)

गोपाल म्हैं अस्पताळ सू सीधो मेडिकल कॉलेज री लाइब्रेरी अर बठे सू सीधा प्रोफेसर सा'ब रै बगलै चल्या जाऊं। शोध कार्य मे बा सू पूरी मदद लेऊं।

(बारै कानी सू हाथ मे एक डब्बो लिया पूनम नाव रो आदमी आवै)

आ पूनम। सगळा केमिकल्स मिलग्या ?

पूनम हाँ डाक्टर सा'ब। पण सल्फरिक एसिड री अेक ही बोतल हाथ लागी है।

गोपाल बाबूसा ओ पूनम म्हारी लेब मे लैब असिस्टेंट है अर भौत मेहनती भी है।

सोभाग किसो गाव भाया ?

पूनम कपूरीसर काळू, कातर कोडमदेसर सगळै जग्या।

(बीच मे बोलै)

सोभाग म्हैं गाव रो नाव पूछयो अर तू पाबूजी री पड बाचण लागग्यो।

(हस र)

गोपाल ओ थोडो बोलै घणो ही है बाबूसा रामूचाचा अे केमिकल्स म्हारै कमरै मे ऊपर राख आओ थोडै ध्यान सू, डब्बे मे तेजाब है।

रामनाथ हुकम।

(रामनाथ डब्बो उठा र माय जावै)

पूनम म्हैं चालू, डाक्टर साब ?

गोपाल हा पूनम धन्यवाद।

(पूनम बारै निकळ जावै)

सोभाग ओ तेजाब थारै काईं काम आवे है गोपाल ?

गोपाल — म्हैं अैक सलुशन तैयार कर रियो हूँ, बावूसा जिको प्लास्टिक सर्जरी मे काम आवै।

सोभाग — आ प्लास्टिक सर्जरी काई हुवै है ? अैरो नाव तो आजकाल घणो ई पढण–सुणण मे आवै।

गोपाल — अै विधि रै माध्यम सू सरीर रो कोई भी बेडोळो अग अर कुरुप चेहरो फूठरो बणायो जा सकै है।

सोभाग — फेरू ओ प्रयोग राजू माथै क्यू नीं करै तू ?

गोपाल — प्लास्टिक सर्जरी रो विषय लवण रो म्हारो ओ ही मकसद है वावूसा कै म्हैं वेगै सू वेगो राजू भैया नै

(बीच मे बोलै)

सोभाग — राजू तो ठीक हुवो ना हुवो पण थारी मेहनत माथै पूरो भरोसा है अच्छा म्हनै बैंक डाइरेक्टर्स री मीटिंग मे जावणो है। म्हैं चालू।

गोपाल — हूँ भी आप रै सागै चालू हूँ, बावूसा। म्हनै दो–तीन मेडिकल बुक्स लावणी है। चौपड माथै म्हनै ही ड्रोप कर दिया।

सोभाग — अरे ! आपैनी। अैमे पूछण री काई बात है।

(सुमन आवै अर सोभागचन्द नै छडी झलावै।)

ला बेटा बुढापै रो सहारो तो आ छडी है। आ भाई गोपाल।

(सोभागचन्द अर गोपाल बारै जावै अर बनवारी घर मे आवै।)

बनवारी — नमस्ते भाभीसा।

सुमन — आपरा धरमभाई घर मे कोनी।

बनवारी — म्हैं तो अठै आप सू मिलण नै आयो हूँ। धरमभाई री तो आड पाळ राखी है।

सुमन — निरलज थारो–म्हारो कई लेवणो–देवणो है ?

बनवारी — कई बात है भाभीसा। गोपाल बाबू आया पछै थे बात्या मे घणा ही हुसियार हुयग्या।

सुमन — तू कैवणो कई चावै हे ?

बनवारी — बस इत्तो ही के राजू सू गोपाल फूठरा भी है अर डाक्टर भी।

सुमन बारै निकळ घर सू, वरना धक्का देर घर सू निकळवा देसू।

बनवारी धक्का मारण री जरूरत कोनी। म्हैं खुद ही चल्यो जासू पण आज ताईं था बनवारी रो भलो रूप ई देख्यो है बैरो दूसरो रूप को देख्यो नीं। कान खोल र सुणलो। थोडी देर म मिन्दर जावण रो बहानो बणा'र शिवमिन्दर कनै पौंचा। म्हैं बठै थारो इन्तजार करसू– टेम सू पौंच जाया। हीलो–हवालो कर र जे कईं अणसुणी कर दी या टेम सू नईं पौंच्या तो काळी ओढणी ओढा देसू। बनवारी रै नाव रै सागै अेक हित्या और जुड जासी। एक बात और सुणलो आखै सहर मे आ बात चलती कर देसू कै समाज सुधार रा हिमायती रायबहादुर सेठ सोभागचन्दजी समाज री थोथी वाह–वाही लूटण सारू आपरै बेटै राजू रो ब्याव अनाथालय मे पळी–पोखी सुमन नाव री छोरी रै सागै कर दियो जिकै रा ब्याव सू पैली मुनियै नाव रै गुडै सू नाजायज सबध हा। सुमन आपरै रस्तै सू रोडो हटावण रै मिस आपरै धणी री हत्या करा दी।

(सुमन बिगडती बोलै)

सुमन भगवान सू डर हत्यारा ! बैरै घर मे देर है अन्धेर कोनी।

बनवारी थारो भगवान थारै कनै राख बियै आधै गूगै अर बहरै भगवान मे कईं समझ हुवती अर बैनै कईं दीखतो तो थारै जिसी रूप–रगआळी लुगाई रो ब्याव रूप रै रूडै बेडोळै राजू जिसै आदमी सागै को करावतो नीं।

सुमन अे तो विधाता रा लेख है। तनै ईसू कईं लेणो–देणो है। ध्यान सू सुण लै ब्याव रै पछै औरत रो धणी चावै किसो ई हुवो बा बैनै भगवान रै दाईं पूजै। अै खातर साबरियै सू डर।

बनवारी तू साबरियै सू डरण री बात कैवै हूँ काळ सू ही को डरूनीं। म्हैं चालू, थारो चन्दरमा सोच लिये– भलो चावै तो म्हारै बतायै टैम माथै मिन्दर कनै पौंच जाये। म्हारै कैया–कैया चालसी तो सेठ रै घर मे राज करती रैसी। नईं तो थारो घर अर थारी भरी–तरी गवाडी उजाड देसू।

(बनवारी धमकी देय र बारै निकळ जावै। सुमन खडी–खडी सौचै अर गोपाळ कमरै मे आवै।)

गोपाल ओ बनवारी फेरू अठै आयग्यो भाभीसा ?

सुमन खोटी नीयत रा आदमी है। मना करण रै बाद ई आवतो रैवै। धमकी दर गया है के वैरी मनचींती कर दू नईं तो थारै भाई री हत्या कर दसी। म्हनै तो भौत डर लाग रियो है। मन म वडी घबराहट हुवै है।

गोपाल धमक्या सू इया डरसो तो कित्ताक दिन जीसो भाभीसा आप धीरज राखो। अेरो कोई–न–कोई उपाय

(बीच मे बोलै)

सुमन डरण री बात कूकर कोनी बनवारी जिसा गया–बीत्या मिनख कई भी कर सकै

(सुमन बोलती–बोलती चक्कर खाय र सोफे माथै पड जावै।)

गोपाल भाभीसा भाभीसा

(गोपाल सुमन री नाड अर आख देखै। थोडी देर मे सुमन आख खोलै अर बैठी हुय जावै।)

आप बिल्कुल ना घबराओ भाभीसा भगवान सब ठीक करसी। अबार आप माय चाल र आराम करो।

(गोपाल सुमन नै उठावै अर सहारो देय र माय लेजावै। बै घडी राजू कमरै मे आवै अर दोना नै देखै। गोपाल सुमन नै माय छोड र पाछो कमरै मे आवै।)

आप आयग्या राजू भैया थोडी देर पेली बनवारी आयो अर सुमन भाभी नै अटसट कैयग्यो। अे तनाव सू भाभी ने चक्कर आवणा सरु हुयग्या। माय सुवा र आयो हूँ, अबे थोडा ठीक है।

राजू चक्कर तो आख्या सू देख लिया। ज तू बाया मे नई भरतो तो चक्कर मिटता ई कोनी।

गोपाल राजू भैया !

राजू बापडै बनवारी तो म्हनै पैला ई चेतायो हो पण म्हारी अकल माथै पत्थर पडियोडा हा।

गोपाल राजू भैया ! थे ही वै बेईमान री बात्या माथे विस्वास करो हो ?

(बीच मे बोलै)

राजू बेईमान तू है या बनवारी ओ तो म्हनै आज बेरो लागग्यो।

गोपाल राजू भैया होस म ता हो ?

राजू होस तो आज ही आयो है अर आज ही आख्या खुली है।

गोपाल थे अकल अर आख्या दोना रा आधा हो ? थानै आ ई अकल कोनी कै कुण थारो हेताळू है अर कुण थारी जडा काट रियो है। बो बेईमान थानै जान सू मारण री धमकी देर गयो है।

(चिल्ला र)

राजू वात्या वणावणी छोड आस्तीन रा साप।

गोपाल राजू भेया

राजू थामै थोडी कई गैरत है तो बोरिया–बिस्तर बाध र इये घर सू निकळ।

गोपाल राजू भेया थ अणूता वहम करो। झूठा लाछन मत लगाओ। रैयी थारी हवेली बा थानै ही मुबारक। म्हैं आज ही हास्टल चल्यो जासू।

राजू चल्यो नीं जासू, अबार रो अबार म्हारी हवेली खाली कर

(बोलतो–बोलतो राजू माय जावै अर रामनाथ कमरे मे आवै।)

रामनाथ काई बात है राजाबाबू जोर–जोर सू किया बोलता हा ?

(आख पूछ र)

गोपाल हूँ सदा वास्ते ओ घर छोड र जारैयो हूँ, रामूचाचा। राजू भैया नै म्हारो अठै रैवणो पसन्द कोनी। बाबूसा नै बोल दिया। म्हैं आज पछै आप लोगा नै दुख देवणनै अै घर मे कदैई नीं आऊ।

रामनाथ नई–नई गोपाल बाबू। आप राजाबाबू री बात्या माथै मत जाओ। बारै कानी सू म्हैं आप सू माफी मागू।

गोपाल नई चाचा म्हारै माथै इसो सूगलो अर झूठो लाछन लगा दियो कै अबै अठै सू जावण मे ही सगळा री भलाई है। अबै अेक घडी ही घर मे रैवणो पाप है चाचा

(गोपाल बारै निकळ जावै)

रामनाथ गोपाल बाबू बहूराणी

(सुमन आवै)

सुमन काई बात है रामूचाचा ?

रामनाथ गोपाल बाबू घर छोडर चल्या गया बहूराणी।

सुमन घर छोडर चल्या गया ?

रामनाथ हा बहूराणी गोपाल बाबू अै घर में पाछा कदैई नीं आवै।

सुमन कदैई नीं आवै पण क्यू ?

(राजू कमरै मे आवै)

राजू क्यूकै थारा लखण चोखा घणा।

(बीच मे बोलै)

रामनाथ राजाबाबू ?

सुमन ओ थे काई कह रिया हो ? अणूती बात आपनै शोभा नीं देवै।

राजू जै तनै गोपाल रै जावण री घणी पीड है तो तू बैरै लारै चली जा।

(बीच मे बोलै)

रामनाथ राजाबाबू थारै आज हुयग्यो काई ? धींगाणै री घर मे राड घाल रिया हो ? लिछमी जिसी बहू माथै इसा सूगला लाछन लगा रिया हो ?

राजू थे थारी औकात मे रैवो रामूचाचा। म्हनै सीख देवण री जरूरत कोनी।

रामनाथ म्हारी औकात री बात छोडो राजाबाबू। थानै छोटा सू बडा आ हाथा सू करिया हे। हवेली रो नमक खायो है अे घर रो भलो-बुरो देखणो म्हारो धरम समझू, आख सू आदमी पिछाणू। गोपालबाबू जिसै भलै मिनख माथै लाछन लगावण सू पैली थानै सौ बार सोचणो चाइजै हो।

राजू म्हनै तो अैमे थारी भी मिलीभगत लागै।

(चीखतो बोलै)

रामनाथ — होस मे तो हो राजाबाबू, कई बात कैय रिया हो ? हवेली रो नमक खायोड़ो 'ीं हुवतो तो इसी झूठी बात माथै गळो दूप देवतो। सित्तर बरसा री चाकरी रो ओ फतवो मिल्यो ?

सुमन — चाचा आप माय जाओ। इयै सगळै झगडै री जड वो वेईमान बनवारी है। वो धमकी रै सागै आ केयर गयो है कै वै चोखा–चोखा घर बिगाड दिया है।

(रामनाथ माय जावै)

राजू — अै तिरिया चरित्र हूँ सब समझू। पति मार र सती हुवणआळी घणी लुगाया देखी–सुणी है।

सुमन — हर औरत गई–गुजरी ही हुवै है ओ थारो भरम है। आज भी इयै धरती माथै सती–सावितरिया री कमी कोनी।

राजू — अे थारा उपदेस थारै कनै ई राख। देखती आख्या झूठो पाडै है ? पाणी है तो डूब मर अर कठैई ठौड नीं हुवै तो बजार मे जायर बैठ जा निरलज !

सुमन — सूगली बात कर'र थारी जबान नै क्यू मैली करो। अे झूठा लाछन सैवण री कोई सीमा हुवै। सावरियो साक्षी है। म्हैं कदैई अै घर री मान–मरजादा को तोडीनीं इयै घर री थळी को लाघीनीं फेरू अै झूठा लाछन ?

राजू — कोई झूठा लाछन कोनी। तू दीखण मे जित्ती फूठरी है। बैसू घणी माय सू मैली–कुचैली

(बीच मे बोलै)

सुमन — हा हा मैं मैली हूँ, छिनाळ हूँ, मालजादी हूँ, कुलटा हूँ। क्यू ? ओ ई कैवणो बाको हो ?

(राजू बारै निकळ जावै। सुमन जोर–जोर सू रोवण लाग जावै। परदै रै माय सू सुमन री आवाज आवै।)

आवाज — रोवण सू काई हुसी सुमन आज रै जुग मे घणो फूठरो हुवणो ई लुगाई जात खातर अेक कलक है अभिशाप है। तू थारै मोटियार नै जरूरत सू जादा प्यार दियो बैनै भगवान दाई पूज्यो पण बैरै बदळै मे तनै कई मिल्यो ? लाछन प्रताडना और मिल्यो तनै रूपाजीवा रो बिडद। तनै कुलटा मालजादी

अर वेश्या तक कैयो गया। क्यू ? क्यू के तू इत्ती फूठरी है अर फूठरी लुगाई नै हर आदमी ललचाई आख्या सू देखै। जिकी औरत रो मरद ही वैनै मालजादी या वेष्या कैवै तो धूड है इरो जीवणै मे। थारो कसूर है थारो रूप। मिटा दै थारै रूप नै लाम्पो लगा अे जवानी रै

(सुमन रोवती–रोवती दोनू काना रै हाथ लगावै। बार–बार आवाज आवै।)

मिटा दे अै रूप नै

मिटा दै अै रूप नै

मिटा दै मिटा दै मिटा दै

(सुमन भागती–सी माय जावै। फोन बाजै अर बाजतो रैवै। थाडी देर पछै रामनाथ आवै अर फोन उठावै।)

रामनाथ कुण सा ब बोलो ? कुण ? बनवारी ?

(रामनाथ गुस्सै सू फोन राख देवै अर थोडी देर रुस्ता र पाछो फोन करै।)

कुण मुनीमजी ? म्हैं हवेली सू रामनाथ बोल रियो हूँ। थोडी सेठसा सू वात कराओ। कुण मालिक ? राजूबाबू अर गोपाल बाबू आपस मे बोल लिया अर गोपाल बाबू घर छोड र चलागया। आप वेगा–सा एक बार हवेली पधारो।

(रामनाथ फोन राखै अर बारै कानी सू बनवारी आवै। रामनाथ बिगडतो बोलै।)

रामनाथ क्यू आयो है तू अठै ?

बनवारी अबार–अबार म्हारो फोन कुण उठायो ?

रामनाथ म्हैं उठायो। क्यू ? काई कैवणो चावै है तू ?

बनवारी बिना बात सुणिया फोन पाछो क्यू राख्यो ?

(राजू कमरै मे आवै अर दोना री बात्या लुक'र सुणै।)

रामनाथ इयै खातर राख दियो कै म्हनै थारी सकल सू तो काई थारी आवाज सू ही घिरणा है।

बनवारी पराये टुकडा माथै पळणआळा कुत्ता थारी आ औकात ?

रामनाथ थारै गिरैबान मे झाक र देख कुत्तो हूँ हूँ या तू ? जिकी हाडी मे खावै वैम ई छेद करै नमकहराम ।

बनवारी ज्यादा मूढे मत लाग अर बिये महाराणी नै कैयदै कै बैरो यार बनवारी आयो है।

रामनाथ वेगडी औलाद जबान सभाळ र बात कर। नई तो जबान काट लूला।

(बनवारी रामनाथ रे थप्पड मारै)

बनवारी बूढा झडूस।

(रामनाथ चीखतो बोलै)

रामनाथ हरामखोर थारी आ हिम्मत कै तू बूढै ठाकुर माथै हाथ उठायो तो फळ भुगत

(रामनाथ गुलदस्तो उठा र बनवारी रै सिर मे मारै। बनवारी जमीं माथै पड जावै। राजू रामनाथ रै कनै आय र बोलै।)

राजू घबराओ ना रामूचाचा अे गईवाळ रै दो लाता और लगाओ। ओ कमीणा इत्तो वेगडो अर घाती निकळसी म्हैं कदैई सुपनै मे ही नीं सोच्यो हो। अे कुत्तै री बातया मे आय र म्हैं भरत जिसै भाई अर सीता जिसी देवी रै माथै झूठो बहम करियो– म्हैं हमैं किसो मूढो लेय र बारै सामनै जाऊ रामूचाचा *(रोवतो–रोवतो)* हो सकै सुमन तो म्हनै मोटियार समझ र माफ कर दै पण गोपाल तो म्हारी सकल

(बीच मे बोलै)

रामनाथ प्रास्चित करणो अर आपरी भूल सुधारणी आदमी ने खरो बणावै बेटा।

(सोभागचन्द आवै बनवारी जमीं माथै बहोस पडियो है)

सोभाग कई बात है रामनाथ ? ओ सब काईं होरियो है ?

रामनाथ आप पधारग्या मालिक। कई दिना सू ओ नमकहराम बहूराणी नै तग करण लाग रियो हो पण बहूराणी लाजा मरती आ बात आज ताई छुपाई राखी जिकै रै कारण अै नीच रो इत्तो हाव बधग्या के ओ आज हवेली मे आय र बदतमीजी करण लाग्यो। आ म्हारै सू कद देखीजे मालिक अर आज अै नमकहराम

म्हारै माथै हाथ उठायो।

सोभाग — भौत आच्छो कियो रामनाथ अगर बहूराणी रै कईं-- (बीच मे बोलै)

रामनाथ — अैरू पैली म्हैं कुत्ते नै काट र फेंक देवता मालिक।

सोभाग — अैनै जीवतो नईं छोडणो हो रामनाथ पण हमै ओ अठै मरग्यो तो लेणै सू देणा पड जासी पुलिस चोकी फोन कर अर घटना री सूचना दै। (बीच मे बोलै)

राजू — अैनै पुलिस म तो म्हैं दरासू बाबूसा।

सोभाग — तू दरासी बेसरम ? थारै कारण ही अै बदमास आज म्हारै घर म आय र म्हारी इज्जत म हाथ घाल्या।

राजू — म्हैं म्हारी नासमझी माथै घणो सरमिन्दो हूँ, बाबूसा। म्हारै कारण ई ओ काड हुयो है।

सोभाग — म्हैं तनै पैलाई समझायो हो के आज रै जुग मे अै धरमेला-धरमेला सगळा ढोंग है ढकोसला है। धरमेलै री आड में लोग कईं ठा कित्ता खोटा-बुरा करै है। आज बेटो बाप रो कोनी भाई भाइ रै खून रा प्यासा है। बो जुग बीतग्यो जणै लोग पागडी बदळ र भाई बणता अर भाई रै खातर अेक-दूजै रै खातर आपरी गर्दन कटा देवता पण आज बाड ही खेत नै खाय री है अर तू धरमेला मे रिस्ता सोधै।

राजू — अबै आप बावै कईं जिकी सजा दे दो बाबूसा म्हनै म्हारी गलती रो भान हुयग्यो-- म्हैं अै बदमास री चीकणी-चापडी बात्या म आय र अपणा नै पराया समझ बैठयो। (राजू फोन उठा र)

राजू — हैलो कुण बोलो हो ? देखो म्हैं सेठ सोभागचन्दजी री हवेली सू बारो बेटो राजेन्द्र बोलू हूँ। थोडी सी ओ सा ब कल्याणसिंगजी सू बात कराओ हा हुकम म्हैं राजू बोलू हूँ। एक भौत बडो बदमास हवेली मे घुसग्यो पण म्हा बैनै पकड र राख्या है। आप जल्दी हवेली पधारो।

(बनवारी होस मे आवै अर उठ'र भागण लागै। सोभागचन्द बनवारी री लारै सू नसडी झाल तो बोले।)

सोभाग भागै कठै है नमकहराम। म्हैं तनै पुलिस मे दे र जैळ करासू।

बनवारी म्हनै माफ कर दो बाबूसा प्लीज राजू भाई।

(राजू बनवारी रै काना मे मारै। बारै कानी सू पुलिस इन्सपेक्टर आवै।)

इन्सपेक्टर नमस्ते सेठ सा ब।

सोभाग आवो इन्सपेक्टर सा ब पधारो।

(बनवारी नै देख र)

इन्सपेक्टर अरे ! मुनिया तू ?

सोभाग मुनियो ! आप अैनै जाणो हो इन्सपेक्टर सा ब ?

इन्सपेक्टर हा सेठजी। ओ छापर रो छटोडो बदमास है। अेक दोस्त री लुगाई री हत्या कर र फरार हुवोडो है। दो साल सू पुलिस अैरी तलास कर री है।

सोभाग आपरी अै अमानत नै ले जाओ अठै सू इन्सपेक्टर सा ब। भगवान रो भलो हुवै म्हारी गवाडी उजडती रैयगी।

(पुलिस इन्सपेक्टर बनवारी नै झाल र बारै निकळै।)

क्यू देख लिया थारै धरमभाई रा कारनामा ? नालायक !

राजू म्हं कैयो नी बाबूसा म्हारी नासमझी म्हन बरबाद कर र छोडती।

(अेकाअेक हवेली रै माय सू चीख सुणीजै। रश्मि रोवती–रोवती भाग र आवै।)

रश्मि दादू–दादू मम्मी मूढै माथै तेजाब ढोळ लियो।

(राजू माय भागै।)

सोभाग कईं ? रामनाथ जल्दी सू डाक्टर गोपाल नै फोन कर

(सोभागचन्द माय जावै अर रामनाथ फोन करै।)

रामनाथ हैलो कुण बोलो ? कुण गोपाल बाबू ? आप जल्दी सू घरै पधारो। बहूराणी आपरे चैरै माथै तेजाब नाख लियो। हा–हा

सेठ सा ब अर राजूबाबू दोनू घर मे है आप बेगा पधारो।

(फोन राखै। राजू अर सोभागमल सुमन नै लेय र कमरै मे आवै।)

सोभाग — ओ तू कई करियो बेटी ? तू समझदार हुय र अै नालायक री सजा म्हनै क्यू दी ? बाल बट्टू, तू सैणी–समझणी हुय'र आ नादानी क्यू करी ? म्हैं ओ सदमो किया बरदास करसू ?

रामनाथ — असुभ ना बोलो मालिक बहूराणी बेहोसी म है। गोपाल बाबू रै आवता ई ठीक हुय जासी।

सोभाग — हुयग्यो काई गोपाल रै बो हालताई आयो क्यू कोनी ?

रामनाथ — फोन सू बात हुयगी बै अेम्बुलेस लेय र पौंचरिया है।

(राजू कानी देख र)

सोभाग — उडीकता गोपाल कणै आसी तू अठै खडो कईं मूढो ताक रियो है जल्दी सू माय सू गाडी निकाळ बहू नै अस्पताळ लेय र चाला।

(गोपाल आवै)

रामनाथ — गोपाल बाबू पधारग्या मालिक।

सोभाग — अरे ! गोपाल देख रे बहूराणी सूता–बैठा ओ तोफो कईं कर लियो ?

(गोपाल सुमन नै चोखी तरिया देखै।)

कईं हुयो गोपाल बेटा किया है बहू रै ? तू बोलै क्यू कोनी ?

गोपाल — घबरावण जिसी कोई बात कोनी बाबूसा। भगवान री दया सू दोनू आख्या बचगी। बोतल मे डाईलुटेड फेस सल्युसन हो प्योर तेजाब नीं हो। घणो नाखण सू मूढै माथै ललासी आयगी। बेहोसी तो सदमै रे कारण सू है। रैई चेरे री विकृति अैरो उपचार हुय जासी।

सोभाग — अरे थे लोग झूठ तो नई बोल रिया हो बहू नै जल्दी सू अस्पताळ क्यू नीं ले जावो ?

गोपाल — म्हारै माथे भरोसो राखो बाबूसा। म्हैं आप सू झूठ थोडी ही बोलसू भामीसा बिल्कुल ठीक है फेर आप जाणो हो

म्हैं प्लास्टिक सर्जरी रो डाक्टर हूँ। कुरूप नै सरूप हुवण मे कित्ती क देर लागै !

सोभाग चोखो गोपाल पण आईन्दा घर मे अे तेजाब–धेजाब ना राख्या कर।

(सुमन होस मे आवै अर बडबडावै)

सुमन आग लागे इये रूप नै हम ई कुरूप चैरै माथै कोई री कुदृष्टि को पडैनीं धणी रो अणूतो बहम घर मे रोजीना री चक–चक

राजू सुमन

गोपाल भाभीसा।

रामनाथ बहूराणी आख्या खोलो दखो कुण आया है ?

राजू सुमन सुमन म्हैं भौत सरमिन्दो हूँ, नारामझी रो ओ अपराध । म्हारै सू हुयग्यो। सजा तो म्हनै मिलणी चाईजती पण तू आढली।

(राजू आख्या पूछे)

गोपाल हिम्मत राखो राजू भैया। भगवान सब ठीक करसी।

राजू गोपाल तू भी म्हनै माफी दिरा म्ह म्हारी अणसमझी सू पीढिया सू चली आवती प्रीत रै रिस्तै मे अणूतो बहम कर खटास पैदा कर दियो। म्हने पछतावो है म्हारी जिन्दगी मे सुमन इसा घाव कर दियो जिका कदैइ भरीजै कोनी।

गापाल आ वात कोनी राजू भैया। जो भी हुयो सब अणजाणै

(सुमन आख्या खोले– सगळा सुमन रै आसै–पासै ऊभा हुवे।)

सुमन रश्मि कठै है ?

(रश्मि नेडी जावै। सुमन रश्मि नै छाती रै लगा र रोवण लाग जावै। सगळा आपरी आख्या पूछै।)

धीरे धीरे मच माथे अधारो हुवै।

सूनी चवरी

(सेठ सुमेरमल बोथरा रो रूपाळो बगलो। बगल रा ड्राइग रूम। कमरै मे सुमेरमल री सरगवासी घरधिराणी री फोटू टागोडी है। दिनूगै आठ–नौ रो वगत। कमरो सूनो पडियो है। मधरी नीलै रग री रोसनी। माय सू आवाज आवै)

आवाज नमस्कार।

आज रै आयोजित जलसै मे आपरै पधारणै रो घणो–घणो स्वागत। टेम कीमती हुवै अे खातर टेम क्यू खराब करा। आओ कार्यक्रम सरू करा। कार्यक्रम सरू करा बैसू पैली मा सुरसती नै नमन।

नाटक रो नाव है 'सूनी चवरी'। अै नाटक रा लिखणिया है श्री सूरजसिह पवार। तो पेस है नाटक 'सूनी चवरी' *(अेकाअेक जोर सू अेक आवाज आवै)* ठहरो *(वीं टेम ही हॉल माय सू अेक जवान–सो आदमी भीड माय सू उठै अर भागतो–सो मच माथै चढ जावै।)*

(अेक गोलाकार रोसनी मे आदमी खडो दीखै अर बोलै) नाटक सरू हुवण सू पैला म्हैं आप लोगा सू अेक सवाल पूछणो चाऊ अर म्हारै सवाल रो जवाब आप लोगा नईं दियो तो ओ नाटक देखण रो कोई नै ई अधिकार कोनी।

आज रात आपणै सहर रा जाण्या–मान्या समाजसेवी सेठ सुमेरमलजी बोथरा रै सपूत पारसकुमार रो ब्याव अै ई सहर रै सेठ कन्हैयालालजी मालू री लाडकवरी कचन रै सागै हुवण जा रैयो है। हरख री बात है कै आज दो अणजाण प्राणी हमेसा खातर अेक डोरी मे बध र आपरी जिन्दगी सरू करसी पण अै बात रो आप माय सू कुण जुम्मो लेवै है कै ओ हसा रो जोडो जिन्दगी मे फळसी–फूलसी अर सुखी रै भी सकसी ?

(जाता कानी हाथ करै)

आप कैय सको ? आप कैय सको ? आप ? आप ? आप ? नईं कोई माई रो लाल आपरी छाती ठोक'र कैय को सकैनीं कै ओ हरा रो जोडा जीवन म सुखी रैसी। कारण ? कारण आप सगळा जाणो हो कै ब्याव रै बाद खाली बाई छोरी सासरै में सोरी–सुखी रैय सकै है जिकी घणै सू घणो दाईजो लेय'र आपरै सासरे जावै।

म्हैं गलत कैय रैयो हूँ ? बिल्कुल नईं क्यूंकै आप सगळा जणा सगळा जणा क्यू, देस रो जण–जण अै बात नै जाणै है कै ओ दायजै आळो कन्सर खाली आपणै देस माय फैलोडो है अर दिन–ब–दिन फैलतो ही जा रैयो है।

आपणै धरम म आपणै सास्त्रा मे कन्यादान नै भौत बडो पुन मान्यो है अै खातर कई लोग कन्या नीं हुया पराई कन्या गोद लेवै अर कन्यादान करै।

जुगा–जुगा सू कन्या नै आपा देवी रो रूप मानता आया हा। नवरात्रा मे कुवारी कन्या रो पूजन करा अर दूजी कानी बै कन्या सागै दुभात। छोरी जलमी कोनी'कै बैनै घर रै कामकाज मे घाल दी क्यूकै बडी हू'र बैनै सासरै जायणो है। बैरै खातर चोखै छोरै अर चोखै घर–घराणै री तलास अर हजारू–लाखू रुपिया रो बन्दोबस्त। क्यूकै थोडै दियोडै दायजै रै परिणाम नै कुण को जाणै नीं ? अकाल मौत ! अर बैरै वास्तै अेक घडयो–घडायो बहानो स्टोव जगावता टकी फाटगी तेल खिडग्यो अर कपडा मे आग लागगी या पाणी री कूडी कनै बींदणी रो पग तिसळग्यो कूडी मे डूबण सू बींदणी री मौत हुयगी।

देस रो कानून तो आधो है अर आधो हुवै जिको केई री कई रक्षा करै ?

न्याय करण मे चइजै चश्मदीद गवाह अर ठोस सबूत अै कदैई मिलै कोनी।

जिकै समाज अर धरम मे दायजै रो रिवाज कोनी बठै आयै दिन इयै कारण सू अकाल मौत को हुवैनीं।

छोरो जलम्या घरा मे थाळ बाजै अर छोरी जलम्या कूडा फोडीजै घर मे मातम–सो छाजावै। कैवा कई समाज री मानसिकता ई इसी हुयगी कै बेटी रै जलमता ई जाणै घर माथै कोई पहाड ई टूटग्यो है।

बा मासूम बा देवी बा मीरा बा राणी झासी अर बा इन्दिरा आख री किरकरी ज्यू रडकण लाग जावै।

आ बात काई आछी है ? आ ई सवाल आप लोगा सू म्हारो है। हमैं आप नाटक देखो

(मच माथे रोसनी तेज हुवै। कमरे मे टेलीफोन री घण्टी बाजै। पारस कमरै मे आवै अर फोन उठावै।)

पारस हैलो ! आप कुण सा ?

(सुमेरमल कमरै मे आवै।)

कोई आप सू ही बात करणी चावै बाबूसा।

(पारस सुमेरमल नै फोन झलावै।)

सुमेर हॉ कुण बोलो हो ? कुण सेठियाजी फरमावो ! हा–हा कमरै मे अेकलो ही हूँ।

(मूढै माथे आगळी राख र पारस नै चुप रैवण री सैन करै।)

फरमावो नौकर हजारीराम चाय देय र गयो है। नई तो। कद ? आ कूकर हो सकै। कालै तो म्हैं खुद मण्डी मे हो। खैर हुयो तो बुरो ही है पण कई ? सवाल ही को उठैनी। देखो पैला आप भी बारा सीरी हा। म्हैं तो बानै पैला ई कैयो हो कै हाथी पाळणआळा गढ रा दरवाजा मोटा राखै। देखो सेठियाजी बात घाटै–नफै री कोनी। बात तै हुई जणै आप सगळा ही कनै हा। बाता तो सगळी तै हुयगी ही बाकी नगद लेण–देण री बात सगळा रै सामी थोडी हुवै ! ना ना समझदार आदमी नै इसारो ई घणो हुवै। म्हैं डागाजी अर हुलासजी साड नै फेरू चेता देसू कै इक्कीस लाख नगद लिया बिना म्हैं म्हारै बेटै री बरात रवाना ही को करूनीं। नई–नई म्हनै थारो नाव बता र कई करणो है। म्हनै तो म्हारी रकम सू मतलब है। देखो सेठियाजी आप तोरण मारण री बात करो हो म्हैं बरात ही रवाना को करूनीं।

(फोन राखै)

पारस कई बात है बाबूसा ?

सुमेर बात काम री है बेटा रामदेवजी नै गिनै जिका सगळा—

(बीच मे पारस बोलै)

पारस कई कैवता हा सेठियाजी !

सुमेर कैवता हा कै सेठ कन्हैयालालजी रै आढत रै धन्धै में जोर रो घाटो लागग्यो। तेल अर रुई दोना रै भावा में सातरी मदी आयगी।

पारस बैगै आपा कई करा ? भाव तो घटता–बधता ही रैवै। आढत रो बिणज ई इसो है। फेरू बा गवार अर सरसू में डेढ–दो करोड़ रुपिया कमाया हा जणै तो थाळ को बजाया नीं। हमैं मदी रो ढिंढोरो क्यू पीटै है। धन्धै म रोया कुण कैनै देवै है।

सुमेर आ ई तो बात है। सोहनजी डागा अर हुलासजी साड रै अठै जार कूवयो बतावै कै कचन रै ब्याव म और तो सा ई कुई कर देसू पण अबार इक्कीस लाख देवण री हालत में रैयो कोनी।

पारस लेण–देण में बै ठेठ सू कजूस है। चोखो घर देख'र पैला तो बात तै कर ली अर हमैं ओळाया काढै है। आप साफ बोल दो बाबूसा माग पूरी नीं हुसी तो ओ रिश्तो रैवै कोनी।

(हजारीराम चाय लेर आवै)

सुमेर हजारी चाय थोडी देर ठैर र लाजे।

(हजारीराम चाय पाछी लै जावै अर लुक'र दोना री बात्या सुणै)

पारस म्हैं आपने अेकबार फेरू चेता दू बाबूसा। बीच–बचाव करणआळा रै दबाव मे आय र आप कोई समझौतो मत कर लिया। नई तो

(बीच मे बोलै)

सुमेर म्हैं काची गोळिया को खेलीनीं। म्हैं बिहार रै कटिहार रो पाणी पीयो है। हूँ बॉरी चीकणी–चोपडी बात्या मे आवणआळो कोनी। इया कर तू मण्डी जा। सगळी बात्या रो पतो लाग

जासी अर घणी जाणकारी चावै तो थारै भायलै गवरीशकर नै कन्हैयालालजी रै घरै भेज दै सगळी बात रो पतो चाल जासी।

पारस ठीक है बाबूसा म्हैं चालू।

सुमेर और सुण मण्डी मे आपा रै ही सौदै रो पतो लगा र आ कै कई घटत–बधत है।

पारस आपरै सौदै नै ओचकणै री जरुरत कोनी पक्को सौदो है। अबै पसुआ नै गवार देवण री बात को रैईनीं गवार सू गूद बणन लागग्यो। गम फैक्ट्रीआळा सेठ लाधूजी तीस पेटी देवण नै तैयार बैठा है।

सुमेर फेरू ही बिणज मे चौकस रैवणो जरूरी है। ठीक है अबै तू जा अर मण्डी सू पाछो आवता पुखराज नै भी न्यूतो देवतो आये कै रात नै सगळै परिवार रै सागै बरात मे चालणो है।

पारस कन्हैयालालजी इक्कीस लाख नईं देसी तो कैरी बरात चढसी ? रुपिया कुण भरसी ?

सुमेर बैरो बाप भरसी। पाच दिना सू छोरी मेहदी रचाया बैठी है। कदैई कैरी 'सूनी चवरी' रैई है ? कन्हैयालाल तो कईं कन्हैयालाल रा काकोसा इक्कीस लाख रुपिया देसी। तू जा पैला म्हैं कैयो जिको काम कर।

(पारस बारै निकळ जावै)

(सुमेरमल फोन करै)

सुमेर कुण बोलो हो सा ? थोडी डागाजी सू बात करावो। किनै गया है ? तारानगर ? पाछा ? ठीक है आवता ई म्हारै सू बात कराया। म्हैं सुमेरमल बोथरो।

(सुमेरमल फोन राख र माय जावै। प्रमिला कमरै मे आवै अर फोन करण लागै। हजारीराम आवै)

हजारी फोन पछै कर्‌या बाईसा पैली म्हारी बात सुणो।

प्रमिला काईं बात है हजारी चाचा इत्ता डरिया–डरिया क्यू हो ?

हजारी डरियो–डरियो कईं हूँ बेटी म्हनै तो कईं गडबड लागै है।

प्रमिला — काई गड़बड़ लागै है हजारी काका ? विमल भाईसा कठै है ?

हजारी — विमल बाबू तो सूता है बेटी पण अबार–अबार सेठजी अर पारस बाबू ब्याव नै लेर घुसर–फुसर कररया हा ? म्हनै तो आ ही बरात चढती को लागै नीं।

प्रमिला — ओ थारो अणूतो वहम है हजारी काका। दोना कानी बरात री तैयारिया चाल री है।

हजारी — दूध सूं बळयोड़ो छाछ नै फूंक मार'र पीवै है बेटी। विमल बाबू रै ब्याव में थोड़ा फगड़ा हुया ? म्हनै लेण–देण रो फेरू कोई टटो लाग्यो। म्हनै चोरी तरिया तो सुणीज्यो कोनी पण पारस बाबू बोल रिया हा कै इक्कीस लाख लिया सूं ई बरात चढसी।

प्रमिला — ब्याव केई रा रुक्या है हजारी काका ? बरात तो चढणी है। लेवण–देवण मे कोई कमी है तो आगै पूरी होवती रैसी।

(सुमेरमल आवै)

सुमेर — काई पूरी हुवती रैसी प्रमिला ?

(हजारीराम बीच में बोलै)

हजारी — कीं नीं सेठा प्रमिला बाईसा कैवै कै विमल भाईसा हाल ताईं किया सूता है ?

सुमेर — सू सी कोनी ! रात नै थोडो नाच्यो ? वैनै नाचता देख र कोई आ कैय सकै है कै विमल गैलो है ? अरे तू चुप क्यू खडी है प्रमिला ? थारै सूट रो कई हुयो ?

प्रमिला — जार आई हूँ बाबूसा सूट तो पाचू तैयार है। टेलर मास्टरजी प्रेस कररया हा।

(प्रमिला पाछी बारै कानी जावण लागै)

सुमेर — अरे किनै चाली प्रमिला ?

प्रमिला — मास्टरजी प्रेस कर दी हुसी पण म्हैं बटन देवणा भूल ही गई।

सुमेर — तू खरचा करावण मे लागोडी है।

(प्रमिला बारै निकळ जावै)

(हजारीराम बीच मे बोले)

हजारी आप साची कैवो हो सेठजी ब्यावा मे तो खरचा हुवै ही है पण अै टाबर कुई अणूतो ही खरचो करा दैवै।

सुमेर म्हारी तो कैवण अर अेकर टोकण री आदत है हजारीराम। भाई रै ब्याव मे बैना नया सूट नया गेणा नईं पैरसी तो फेरू कद पैरसी ? आप रै ब्याव म तो छुई–मुई हुई बैठी रैसी।

हजारी साची कैवो सेठा खुद रै ब्याव मे आ दौड–भाग कठै ?

सुमेर जा चाय ले आ। म्हनै थोडो बारै जावणो है।

हजारी अबार लाऊ सेठजी।

(हजारीराम माय जावै अर बारै कानी सू पारस आवै)

सुमेर मण्डी हो आयो बेटा ?

पारस हा बाबूसा सेठियाजी कैई जिकी खबर तो साची है। रुई तेल दोना रा भाव चोखा हा पण कन्हैयालालजी भाव कई ऊचा तेवडता हा। सौदो करियो कोनी। रात भाव अेकाअेक गिरग्या अेमैं कई आसाम्या डूबसी जिकै मे चौरडियाजी नै तो दिवाळो काढणो पडसी।

सुमेर चोरडियो बदमास आदमी है। पैला ही बापडै हुकमाराम रा पइसा खायग्यो

(हजारीराम चाय लावै)

तू चाय पी र जा अर पैला डागाजी सू मिल लिये अर पछै ओ कागद हुलासजी नै देय र आये। वे घर मे नीं हुवै तो मुनीमजी नै पकडा आये।

(प्रमिला कमरै मे आवै। पारस उठतो बोलै)

पारस म्हैं आपरी बात समझग्यो बाबूसा।

प्रमिला काय री परची है बाबूसा ? कैनै भिजवा रिया हो ?

(पारस बारै निकळ जावै)

सुमेर कई कोनी। टेट हाउस अर रोसनी रै सामानआळा री परची है।

प्रमिला बाबूरा ब्याव रो घर है अर आज रात नै ही पारस भाईसा रा फेरा है पण ना हवेली माथै रोसनी है अर ना घर आगै सहनाई बाजी।

प्रमिला काईं गडबड लागै है हजारी ?

हजारी विमल बाबू तो सूता है बेटी।
पारस बाबू ब्याव नै लेर घुसर-
ही बरात चढती को लागैनीं।

प्रमिला ओ थारो अणूतो बहम है हज
तैयारिया चाल री है।

हजारी दूध सू बळयोडो छाछ नै
बाबू रै ब्याव मे थोडा फगड
कोई टटो लाग्यो। म्हनै चोर
पारस बाबू बोल रिया हा कै
चढसी।

प्रमिला ब्याव केई रा रुक्या है हज
लेवण—देवण मे कोई कमी

(सुमेरमल आवै)

सुमेर काईं पूरी हुवती रैसी प्रमिला

(हजारीराम बीच मे बोलै)

हजारी कीं नीं सेठा प्रमिला बाईसा द
किया सूता है ?

सुमेर सू सी कोनी। रात नै थोडो नाच
आ कैय सकै है के विमल गैलो
प्रमिला ? थारै सूट रो कई हुयो

प्रमिला जार आई हूँ बाबूसा सूट तो पा
प्रेस करस्या हा।

(प्रमिला पाछी बारै कानी जावण लागै)

सुमेर अरे किनै चाली प्रमिला ?

प्रमिला मास्टरजी प्रेस कर दी हुसी पण म्हैं बटन देद

सुमेर तू खरचा करावण मे लागोडी है।

(प्रमिला बारै निकळ जावै)

(हजारीराम बीच मे बोले)

(प्रमिला बारै निकळ जावै। फोन बाजै अर पाछी घण्टी बद हुयजावै। थोडी देर बाद फोन फेरू बाजै अर कई देर बाजतो रैवै। सेठ सुमेरमल रो बडो बेटो विमल आपरै बूढै नौकर हजारीराम नै घोडी बणर आपरै काधे चढा र कमरै मे आवै। कमरै मे दो–तीन चक्कर काढै। फोन बाजणो बद हुयजावै।)

हजारी अरे–अरे। म्हैं पड जासू विमल बाबू, नीचै उतारो पडग्यो ता बुढापै मे से हाडका भागीज जासी।

(फोन फेरू बाजै)

नीचै उतारो विमल बाबू। कित्ती देर सू घन्टी बाज री है।

(विमल हजारीराम नै घोडी चढाया–चढाया माय जावै। फोन फेरू बाजै। विमल हाथ मे टेपरेकार्डर लिया पाछो कमरै मे आवै अर फोन उठा र कनै राख दैवै– टेपरेकार्डर मे गाणो बाजै– आज मेरे यार की शादी है। गाणै रै सागै–सागै विमल नाचै। हजारीराम हाथ मे दूध री बरनी लेर आवै– थोडो मुळक'र बारै निकळ जावै। थोडी देर पछै बारै कानी सू पारस आवै– विमल रै हाथ माय सू फोन खोस'र राखै अर टेपरेकार्डर बन्द करतो बोलै)

पारस कोई सादी–वादी कोनी घर मे। चाल भाग अठै सू।

(विमल टेपरेकार्डर लेय'र माय जावै। हजारीराम दूध लेय'र आवै)

म्हैं घन्टैभर सू, फोन माथै फोन कर रियो हो। घर मे कोई फोन उठावणआळो कोनी ? कठै उखडिया थे ?

हजारी दूधआळो हेला मार रियो हो म्हैं दूध लैवण नै चल्यो गयो पारस बाबू।

पारस भाड म जावै दूध। कित्ती बार कैयो है थानै अै गूगसाड नै अै कमरै मे मत घुसण दिया करो।

हजारी म्हैं घणो ही ध्यान राखू हूँ पारस बाबू, पण जणै ई अै कमरै मे फोन री घटी बाजै कै चुपके–सी विमल बाबू अै कमरे मे चल्या आवै।

पारस तो पछै धूड ध्यान राखो हो ? म्हैं जणै देखू बो गूगसाड अै कमरै मे आयोडो रैवै।

सुमेर — प्रमिला बेटी आपा छोरैआळा हा। टेन्टआळा नै कैयोड़ो है रिझ्या नै सामियानो लाग जासी अर घर माथै रोसनी भी हुयजासी अर इया घणै तामझाम री जरूरत कोनी फिजूलखरची करणो चोखो कोनी बेटी।

प्रमिला — बाबूसा म्हारो आपनै कैवणो छोटै मूढै बडी बात हुसी। लारली बार विमल भाईसा रै ब्याव में जिसा फगडा हुया बिसा हमैं नईं हुवै आप पूरो ध्यान राख्या। जगहसाई हुई जिकी तो हुई ब्याव मे विघन पडियो अर ब्याव ही टळग्यो। विमल भाईसा रै इत्तो सदमो लाग्यो कै बारी आवाज ही जावती रैयी अर पागलपण रा दौरा आवण लाग्या जिका पाखती मे।

सुमेर — ऐरो दोस तू म्हारै माथै मत मढ। थारो ओ विमल भाई सरू सू ही खोडीलो अर बेअकलो है। ऊपर सू जिद्दी न्यारो। कित्तोई समझाओ मानै कोनी। जे ऐरी जबान गई तो ऐरा भाग है। ईमें हूँ दोसी कोनी।

प्रमिला — दोसी आप कोनी विमल भाईसा रा भाग है। आपरो कैवणो ठीक है पण आप इलाज कित्तोक करायो आ ही म्हैं जाणू।

सुमेर — हूँ दूध पीवतो टाबर तो हूँ कोनी जिकै नै तू सीख दैवै। घर री भलाई वास्तै म्हनै कई बात्या सोचणी पडै। थारो ओ छोटोडो भाई पारस म्हारो कैणो मानै अर म्हारै कैया–कैया चालै अै खातर सब काम ठीक हुसी।

(सोफै सू उठतो बोलै)

हूँ थोडो दुकान ताईं काम जाऊ अर तनै ही कोलेज जावणो है। ब्याव रै लारै कोलेज मे नागा मत कर।

(सुमेरमल बारै निकळ जावै। प्रमिला उठ र फोन करै)

प्रमिला — हैलो ! कुण कचन। अबै कचन कैया सू ई काम चाल जासी या कचन भाभी कैवू ?

(हसती बोलै)

बाबूसा घर माय है ? थोडी बात करणी है। हा म्हैं बठैई आऊ हू।

(प्रमिला बारै निकळ जावै। फोन बाजै अर पाछी घण्टी बद हुयजावै। थोडी देर बाद फोन फेरू बाजै अर कई देर बाजतो रैवै। सेठ सुमेरमल रो बडो बेटो विमल आपरै बूढै नौकर हजारीराम नै घोडी बणर आपरै काधे चढा र कमरै मे आवै। कमरै मे दो–तीन चक्कर काढै। फोन बाजणो बद हुयजावै।)

हजारी अरे–अरे। म्हैं पड जासू विमल बाबू, नीचै उतारो पडग्या तो बुढापै मे सै हाडका भागीज जासी।

(फोन फेरू बाजै)

नीचै उतारो विमल बाबू। कित्ती देर सू घन्टी बाज री है।

(विमल हजारीराम नै घोडी चढाया–चढाया माय जावै। फोन फेरू बाजै। विमल हाथ मे टेपरेकार्डर लिया पाछो कमरै म आवै अर फोन उठा र कनै राख दैवै– टेपरेकार्डर मे गाणो बाजै– आज मेरे यार की शादी है। गाणै रै सागै–सागै विमल नाचै। हजारीराम हाथ मे दूध री बरनी लेर आवै– थोडो मुळक र बारै निकळ जावै। थोडी देर पछै बारै कानी सू पारस आवै– विमल रै हाथ माय सू फोन खोस'र राखै अर टेपरेकार्डर बन्द करतो बोलै)

पारस कोई सादी–वादी कोनी घर मे। चाल भाग अठै सू।

(विमल टेपरेकार्डर लेय'र माय जावै। हजारीराम दूध लेय'र आवै)

म्हैं घन्टैभर सू, फोन माथे फोन कर रियो हो। घर मे कोई फोन उठावणआळो कोनी ? कठै उखडिया थे ?

हजारी दूधआळो हेला मार रियो हो म्हैं दूध लैवण नै घल्यो गयो पारस बाबू।

पारस भाड मे जावै दूध। कित्ती बार कैयो है थानै अे गूगसाड नै अै कमरै मे मत घुसण दिया करो।

हजारी म्हैं घणो ही ध्यान राखू हूँ पारस बाबू, पण जणै ई अै कमरै मे फोन री घटी बाजै कै चुपके–सी विमल बाबू अै कमरे मे चल्या आवै।

पारस तो पछै धूड ध्यान राखो हो ? म्हैं जणै देखू बो गूगसाड अै कमरै म आयोडो रैवै।

हजारी — ओ हो पारस बाबू, ब्याव रै दिन माथो क्यू खराब करो हो ? आप चोखी तरिया जाणो हो विमल बाबू री बीमारी ई इसी है।

(वीं टेम विमल रेल रो इजन बण र कमरै मे आवै)

पारस — बीमारी ई इसी है। पडखाऊ जाण–बूझ र गैलो बण्योडो है हजारी चाचा गैलो है तो गोबर तो को ?

(बीच मे बोलै)

हजारी — पारस बाबू

पारस — हरामखोर गैलो बण र सगळा नै उल्लू बणावण लाग रियो है।

हजारी — थोडो जबान माथै काबू राखो पारस बाबू। कम सू कम आज रै दिन तो बडै भाई नै आवळ–कावळ ना बोलो।

पारस — इसो म्हैं कईं हीणै नै कमीणो कैय दियो जिको थे म्हारै माथै इत्तो ताव खारिया हो ?

हजारी — म्हैं ताव कईं खा रियो हूँ ? म्हारी कईं औकात है ? साची बात कैयणी ही जुलम हुयग्यो ?

पारस — म्हारो ही खाओ अर म्हारै सामनै ही गुर्राओ। अगर आइन्दा ओ हराम अै कमरै मे आयग्यो तो न तो अैरी खैर है न थारी।

(विमल जाण–बूझर गुलदस्तो उठा र जमीं माथै फेकै)

अबै अठै ऊभा–ऊभा म्हारो मूढो काई ताको हो ? अै कमबख्त नै ले जावो अठै सू।

हजारी — चालो माय चालो विमल बाबू। थानै कित्ती बार बोल्यो हूँ कै अे कमरै मे मत आया करो। ओ मेहमाना रै उठण–बैठण रो कमरो है।

(फोन बाजै अर विमल हजारीराम सू हाथ छुडा लेवै)

देखो सैणा टाबर इया नीं करिया करै विमल बाबू। माय चालो म्हैं आपनै नास्तो देऊ। नास्तो कणै रो पडियो ठण्डो हुयरियो है।

(विमल हजारीराम सू हाथ छुडा र सोफै नै घोडी बणा'र बैठ जावै – पारस फोन सू बात कर र फोन राखै।)

पारस — ओ इया माय को जावैनी हजारी चाचा अैरी दवा म्हारै कनै

है। अै लाता रा भूत बात्या सू को मानैनीं।

(पारस पेन्ट माय सू पट्टो काढ'र विमल नै मारै। हजारीराम बिचाळै पडै)

हजारी नई–नई पारस बाबू। अबकी–अबकी माफ करो फेरू म्हैं विमल बाबू नै अै कमरै माय को आवण दूनीं।

(हजारीराम रै धक्को मार र)

पारस म्हारै बीच माय सू हट जाओ हजारी चाचा अैरो इलाज म्हारै कनै है। म्है अैरी चमडी उधेड देसू।

(प्रमिला आवै)

प्रमिला चमडी उधेड देसो क्यू ? विमल भैया जानवर है या आरै कोई आगै–लारै कोनी ? आखिर बडा भाई है। कई तो बोलण रा सऊर राखो।

पारस तू बीच सू हट जा। म्हैं आज अैरो गैलोपण रोजीना खातर मिटा देसू।

प्रमिला इसो कई जुलम कर दियो विमल भाईसा ? चाचा ! आप विमल भाईसा नै माय ले जाओ।

(हजारीराम विमल नै ले जावै)

पारस हजार बार कैय दियो कै अै गूगसाड नै अे कमरे मे मत आवण दिया करो। पण कैरै ई कान माथै जू तक को रेंगैनीं।

प्रमिला घडी–घडा बडै भाई नै गैलो–गैलो कैवता थानै थोडी ई सरम नीं आवै। आखिर विमल भाईसा पैदाइसी तो गैला कोनी।

पारस विमल तो गैलो है पण बो बूढो तो गैलो कोनी ? भैंस दाईं दिन–रात पडियो खावतो रैवै अर करै कईं कोनी।

प्रमिला कित्ता चोखा लाग रिया हा पिता–तुल चाचा नै अै सबद बोलता ? ओ ही रैग्यो थारो बडपण ?

पारस तू तो म्हारै सागै भौत चोखो बरताव कर री है ?

प्रमिला आदमी ओछो बोल र ही आछी बात सुणै।

पारस भासण बन्द कर अर जार सभाळ बै गैलणियै नै। कठैई बो मर तो को गयो नीं ?

(फोन राखै – हजारीराम हाथ मे अेक छोटी–सी सन्दूकडी लेय र आवै)

अरे ! आप किनै चाल्या हजारी चाचा ?

हजारी हूँ म्हारे गाव जाऊ हूँ बेटी। सठजी पूछै तो बोल दिया हजारीराम नौकरी छोड'र आपरै गाव गयो।

प्रमिला पण क्यू चाचा ? अेकाअेक ओ फैसलो ? आखिर हुयो कई ?

हजारी अवै अैसू वेसी कईं हुवणो बाकी है बेटी ? टाबरपणै सू जिका नै पाळया–पोस्या मोटा करिया अवै वैई आख्या दिखावण लागग्या।

प्रमिला नईं–नईं हजारी चाचा पारस भैया री तरफ सू म्हैं आप सू माफी मागू। आप चल्या जासो तो म्हारो अठै कुण खैरख्वाह है ? पारस भैया रा ढग तो आप देख लिया अर बाबूसा नै दो घडी म्हारै कनै बैठण अर बात–बतळावण रो टेम कोनी। खाली आपरो अेक अडब है अै घर मे। अगर आप ही अठै सू चल्या जासो तो

हजारी म्हैं था लोगा सू नाराज हुय र थोडी ही जारियो हूँ बेटी ? म्हैं जठै ई जासू, थारी याद तो म्हारै सागै ही रैसी। भूखो रैय जावणो बेटी पण अणूतो अपमान नईं सैवणो। बिया ई भौत बूढो हुयग्यो। काम करणै रै लायक ही कोनी रैयो बैटी।

प्रमिला अेक कानी तो बेटी–बेटी बोल्या जारिया हो अर दूजी कानी बेटी नै रोवती छोड र जारिया हो ? बाबूसा दिनभर दुकान रैवै म्हैं कोलेज चली जाऊ। आप ई गाव चल्या जासो तो विमल भाईसा नै कुण जीवतो छोडसी – भाईसा तो इया ही जीवता मरोडा–सा है – ना तो बा सू बोल्यो जावै अर पागलपण रा दौरा आवै जिका न्यारा। फेरू ऊपर सू पारस भेया रो

(बीच मे बोलै)

हजारी अै ई बात रो तो रोवणो हे बेटी पारस बाबू म्हारी चामडी उधेड नाखै तो म्हैं उफ ताईं को करूनीं पण विमल बाबू रै सागै पारस बाबू रो बरताव म्हारै सू देखीजै कोनी। जणै जी

प्रमिला — जवान माथे काबू राखो मरै थारा दुसमण। अर आ मत भूलो विमल भाईसा था ही सेठ सुमेरमल रो बेटो है जिका रै थे जलम्या हो दोनू अेक ही मा–बाप री औलाद हो।

(पारस प्रमिला नै मारण नै हाथ उठावै)

पारस — तू म्हारे सामनै जबान चलावै

(बीं टेम विमल लारै सू आवै अर पारस रा बाळ पकड लेवै। पारस छुडावण री कोसिस करै हजारीराम कमरै मे आवै)

हजारी — छोड दो विमल बाबू, घोखा टाबर गैलाया को करैनीं।

(बीच मे बोलै)

प्रमिला — छोडया ना विमल भैया घणा दिन हुयग्या आनै दादागीरी करता।

हजारी — नई–नई विमल बाबू, छोड दो। थानै म्हारी सोगन।

(विमल झींटा छोडै अर पारस बारै निकळ जावै)

प्रमिला — वाह विमल भैया आज चोखो सबक सिखायो।

(बीच मे बोलै)

हजारी — नई–नई बाईसा। आप समझदार हुय र आनै उकसाओ हो। घर में धींगाणे री राड बध जासी।

प्रमिला — राड बधे तो बधै हजारी चाचा बरदास्त री हद हुवै विमल भैया नै बली रो बकरो समझ लियो। जणै देखो बारा हाडका भागता रैवै।

हजारी — आपरो कैवणो ठीक है। आप सू घणो म्हनै दुख है अै बात रो पण बुरै रै सागै बुरो थोडी ही हुया करै।

प्रमिला — ओ आपरो पुराणो सोच है हजारी चाचा। अबै तो बुरै अर बदमासा रै सागै बदमास हुया बिना काम को चालैनीं।

हजारी — चोखो बाईसा थारै जचै ज्यू करो।

(हजारीराम विमल नै माय ले जावै। फोन बाजै)

प्रमिला — कुण बोलरिया हो ? पगै लागू ताऊजी। बाबूसा तो बारै पधारग्या। हा हा हूँ आवता ई बोल देसू।

(फोन राखै — हजारीराम हाथ मे अेक छोटी–सी सन्दूकडी लेय'र आवै)

अरे ! आप किनै चाल्या हजारी चाचा ?

हजारी हूँ म्हारै गाव जाऊ हूँ बेटी। सेठजी पूछै तो बोल दिया हजारीराम नौकरी छोड'र आपरै गाव गयो।

प्रमिला पण क्यू चाचा ? अेकाअेक ओ फैसलो ? आखिर हुयो कई ?

हजारी अबै अैसू बेसी कई हुवणो बाकी है बेटी ? टाबरपणै सू जिका नै पाळया–पोस्या मोटा करिया अबै बैई आख्या दिखावण लागग्या।

प्रमिला नईं–नईं हजारी चाचा पारस भैया री तरफ सू म्हैं आप सू माफी मागू। आप चल्या जासो तो म्हारा अठै कुण खैरख्वाह है ? पारस भैया रा ढग तो आप देख लिया अर बाबूसा नै दो घडी म्हारै कनै बैठण अर बात–बतळावण रो टेम कोनी। खाली आपरो अेक अडब है अै घर मे। अगर आप ही अठै सू चल्या जासो तो

हजारी म्हे था लोगा सू नाराज हुय र थोडी ही जारियो हूँ बेटी ? म्हैं जठै ई जासू, थारी याद तो म्हारे सागै ही रैसी। भूखो रैय जावणो बेटी पण अणूतो अपमान नईं सैवणो। बिया ई भौत बूढो हुयग्यो। काम करणै रै लायक ही कोनी रैयो बैटी।

प्रमिला अेक कानी तो बेटी–बेटी बोल्या जारिया हो अर दूजी कानी बेटी नै रोवती छोड'र जारिया हो ? बाबूसा दिनभर दुकान रैवै म्हैं कोलेज चली जाऊ। आप ई गाव चल्या जासो तो विमल भाईसा नै कुण जीवतो छोडसी — भाईसा तो इया ही जीवता मरोडा–सा है — ना तो बा सू बोल्यो जावै अर पागलपण रा दौरा आवै जिका न्यारा। फेरू ऊपर सू पारस भैया रो

(बीच मे बोलै)

हजारी अै ई बात रो तो रोवणो हे बेटी पारस बाबू म्हारी चामडी उधेड नाखै तो म्हैं उफ ताईं को करूनीं पण विमल बाबू रै सागै पारस बाबू रो बरताव म्हारै सू देखीजै कोनी। जणै जी

(विमल हजारीराम रो हाथ खींचर माच ले जावै – प्रमिला फोन करण लागै अर बारै कानी सू सेठ सुमेरमल आवै)

सुमर — अरे प्रमिला तू कोलेज कोनी गई ?

प्रमिला — म्हैं कोलेज नईं जावण रो फैसलो कर लियो बाबूसा।

सुमेर — क्यू भई अचाणचक कोलेज नीं जावण रो फैसलो अर म्हनै पूछया बगैर ?

प्रमिला — आज सू म्हैं घर मे ई रैसू अर विमल भैया री सार–सम्भाळ करसू।

सुमेर — विमल री सार–सम्भाळ तो हुवै ही है। वैरे खातर पढाई छोडण री काईं तुक है ? फेरू विमल री सार–सभाळ खातर हजारीराम है। दोना री एक–दूजै सू खूब पटै।

प्रमिला — हजारी चाचा तो नौकरी छोड र आपरै गाव जावै है।

सुमेर — क्यू ?

प्रमिला — पारस भाईसा छोटै–मोटै री मरजादा को राखैनीं जचै ज्यू हजारी चाचा नै ऊधा–सूधा अर ओछा बोलता रैवै।

सुमेर — हूँ वैनै समझा देसू – तू थारी कोलेज रो ध्यान राख। हजारीराम सू म्हैं बात कर लेसू।

(पारस आवै)

पारस — काईं बात है बाबूसा ?

सुमेर — ओ म्हैं काईं सुणरियो हू पारस ? तू विमल माथे हाथ उठातो–उठातो हजारीराम माथै ही हाथ उठावण लागग्यो ?

पारस — काईं करतो बाबूसा ? जणै देखो वो गैलो अै कमरै मे घुस्यो रैवै अर वो बूढो वैरो बिल्कुल ध्यान नीं राखै।

(बीच मे बोलै)

प्रमिला — पारस भैया।

पारस — वै बूढै माथे चढा राख्यो है बीं गैलै नै।

सुमेर — विमल नासमझ है बींरै साथै चोखो बरताव राख्या कर। आखर थासू चार वरस बडो है। काण–कायदै रो ध्यान राख्या कर।

मे आवै बारै माथै कोरड़ा बरसावणा सरू कर देवै। आखिर विमल बाबू आदमी है ढाढा तो कोनी।

प्रमिला आज रै बाद आ नौबत को आवैनीं चाचा। अबै ओ मोरचो म्हैं सभाळसू।

हजारी अबै गाव जावण री तेवड ली है बेटी म्हनै जावण दै। क्यू रोकै है म्हनै।

(विमल आवै प्रमिला रोवती बोलै)

प्रमिला म्हारै कैया सू नईं तो विमल भाईसा रै खातर ही रुक जाओ हजारी चाचा। आप चल्या गया तो या कसाया रै आडो कुण फिरसी

(रोवती–रोवती)

देखो विमल भाईसा – हजारी चाचा आपानै छोड र आपरै गाव जारिया है।

(विमल हाथ फैला र बारणै आगे ऊभो हुय जावै हजारीराम आख्या पूछ र)

हजारी नईं–नईं मत रो बेटी। थानै छोड र जाऊ तो जाऊ ही कठै ? थारै अलावा अै दुनिया मे म्हारै है ही कुण ? तेरै बरसा रो हो जणै अै घर मे आयो पण आज ताईं म्हारै सागै इसो बुरो बरताव को हुयोनीं।

प्रमिला आगै भी को हुवैनीं हजारी चाचा (आख्या पूछ र) हाँ चाचा अेक बात तो म्हैं आपनै केवणी भूल ई गी। इनै आवो विमल भाईसा।

(विमल कनै आवै)

आप बतायो हो बाबूसा अर पारस भाईसा मिल र सेठ कन्हैयालालजी कनै सू इक्कीस लाख रिपिया नगद री माग करी है। आ बात सईं है ?

हजारी म्हनै पतो है बेटी म्हैं थानै झूठ थोडी कैयो हो।

प्रमिला म्हैं कचन अर सेठ कन्हैयालालजी सू मिल र आई हूँ। आप विमल भाईसा नै माय ले जावो म्हैं थोडो फोन कर'र आऊ हूँ।

(विमल हजारीराम रो हाथ खींचर माच ले जावै – प्रमिला फोन करण लागै अर बारै कानी सू सेठ सुमेरमल आवै)

सुमर — अरे प्रमिला तू कोलेज कोनी गई ?

प्रमिला — म्हे कोलेज नईं जावण रो फेसलो कर लियो बाबूसा।

सुमेर — क्यू भई अचाणचक कोलेज नीं जावण रो फेसलो अर म्हनै पूछ्या बगैर ?

प्रमिला — आज सू म्हे घर मे ई रैसू अर विमल भैया री सार–सम्भाळ करसू।

सुमेर — विमल री सार–सम्भाळ तो हुवै ही है। बैरै खातर पढाई छोडण री काई तुक है ? फेरु विमल री सार–सभाळ खातर हजारीराम है। दोना री एक–दूजै सू खूब पटै।

प्रमिला — हजारी चाचा तो नोकरी छोड र आपरै गाव जावै है।

सुमेर — क्यू ?

प्रमिला — पारस भाईसा छोटै–मोटै री मरजादा को राखैनीं जचै ज्यू हजारी चाचा नै ऊधा–सूधा अर ओछा बोलता रैवे।

सुमेर — हूँ बैनै समझा देसू – तू थारी कोलेज रो ध्यान राख। हजारीराम सू म्हैं बात कर लेसू।

(पारस आवै)

पारस — काईं बात है बाबूसा ?

सुमेर — ओ म्हैं काईं सुणरियो हू पारस ? तू विमल माथै हाथ उठातो–उठातो हजारीराम माथै ही हाथ उठावण लागग्यो ?

पारस — काई करतो बाबूसा ? जणै देखो बो गैलो अै कमरै मे घुस्यो रैवै अर बो बूढो बैरो बिल्कुल ध्यान नीं राखै।

(बीच मे बोलै)

प्रमिला — पारस भेया !

पारस — बै बूढै माथे चढा राख्यो है वीं गैलै नै।

सुमेर — विमल नासमझ है बींरै साथै चोखो बरताव राख्या कर। आखर थासू चार वरस बडो है। काण–कायदै रो ध्यान राख्या कर।

पारस काईं–काईं ध्यान राखू बाबूसा ? जणै देखो कोईं–न–कोई उजाड करतो रैवै।

(बीच मे बोलै)

प्रमिला क्यू झूठ बोलो हो पारस भैया ?

(सुमेरमल उठ'र माय जावै)

विमल भाईसा अै कमरे मे आवै ही कद है ? अर काईं हुयो जे विमल भाईसा कदी–कदास कमरै मे आ भी जावै। बै ही तो परिवार रा मेम्बर है। बारो भी बित्तो ही हक है अै घर में जित्तो थारो अर म्हारो।

पारस बडी आई है हक जतावणआळी जावैली कठैई पीळा हाथ कर र। ओ ई है बडै भाई सागै बात करण रो तरीको ? था लोगा ही माथै चढा राख्यो है बै गैलीटड नै।

प्रमिला बडा भाई नै गैला–गला कैवता कुईं तो लाज करो ! विमल भाई थासू चार बरस बडा है।

पारस म्हूँ ही थासू दो बरस बडो हूँ। कैंची दाईं जबान चला री है !

प्रमिला ओछो कैवो अर ओछो सुणो।

(प्रमिला माय जावै। सुमेरमल कमरै मे आवै।)

सुमेर बडै–छोटै रो काईं झगडो कर राख्यो है ? जद देखो आपस मे बैन–भाई लडता रैवो। घर में दिन–रात कळै राखणी चोखी कोनी। कळै सू कलसी रो पाणी उतरै। अबै सोचै काईं है जा अर आनन्दीलालजी नै बरात मे चालण रो न्यूतो देय'र आ अर पूठो घिरतो सुनार नै ताकीद करतो आये।

(पारस बारै निकळ जावै। प्रमिला आवै।)

प्रमिला बाबूसा सारे चोखळे मे चक–चक हो री है कै

(बीच मे बोलै)

सुमेर काईं बात री चक–चक ?

प्रमिला आपनै लेय र लोग बात्या करे कै सेठ सुमेरमलजी लडकी रै बाप सेठ कन्हैयालालजी सू इक्कीस लाख रिपिया री माग करी है।

सुमेर म्हैं काई अणूती माग करी है ? चोखा घर चाइजै तो लोग देवै ही है। वेटी नै सोरी–सुखी कुण देखणो को चावैनीं। जिसा लेसा विसा देवणा भी पडसी। थारो ब्याव म्हनै आगे दीखै है।

प्रमिला म्हारै ब्याव री चिन्ता छोडो बाबूसा। म्हैं तै कर राख्यो है कै दायजै री माग करणआळै घर मे हूँ, ब्याव को करूनीं। चावै म्हनै ताउमर कुवारी रैवणो पडे।

सुमेर कोलेज मे ओई पढावै है काई ? मूफट हुय र बडा–बूढा रै सामैं बोलती रै।

प्रमिला बाबूसा जमानो घणो बदळग्यो है। पढ–लिख र इत्ती अकल तो आई है के आपरै मन रा भाव खुला प्रकट करणा चाइजै। दायजा लेणा–देणा चोखी बात कोनी।

सुमेर पीढया सू आवती परम्परावा नै तो निभावणी ही पडसी।

प्रमिला पैली इया माग'र दायजो लेवण री परम्परा को ही नीं। आपसी रिस्ता भौत मधुर रैवता। अबै आदमी लालची हुयग्यो। आये दिन दायजै नै लेय'र होवणआळी मौत नै देखै–सुणै है पण सोच मे बदळाव को लावैनीं।

आपरै सुनहरै सपना और अरमाना री चिता जळा र आयै दिन अनेक मासूम जिन्दगिया इयै दहेज रूपी दानव री भेट चढ री है। दहेज हत्या रै समाचारा सू अखबार रा पाना–रा–पाना भरिया रैवै आदमी देखै–सुणै पण वदळाव को लावैनीं। इयै कथाकथित सभ्य समाज रै काना माथै जू तक को रेगैनीं। कित्ता दिन ओ सब होवतो रैसी ? पुराणी पीढी सामैं ताकता रैया सू पार पडती दीखै कोनी। नई पीढी नै ओ काम हाथ मे लेवणो पडसी। टकराव हुसी तो हुसी।

सुमेर तू कालेज जाय'र दो आखर काईं पढगी छोटै–मोटै री मरजादा ई खूटी माथै टागदी।

प्रमिला बाबूसा कित्ताक दिन चुप रैयीजै ? घणकरै घरा म धोळा केस लियोडी जवान मोटियार बेटया बैठी है। मा–बाप निबळा है। समाज रो ढाचो बारै अनुकूल कोनी। मन मसोस र बेटया नै बारै भाग–भरोसे छोड दी। दूजी कानी समाज रा ठेकेदार

हूती–अणहूती बात्या कर बारै माथै लाछण लगावण लाग्या। कैनै दोस देवा करमा नै या इयै समाज रै ठेकेदारा नै ?

सुमेर तू थारी पढाई रो ध्यान राख इयै पचडा मे मत पड। आरो कोई अन्त कोनी।

प्रमिला अन्त है बाबूसा। बडै–बूढा नै आपरै सोच मे बदळाव लावणो पडसी। जे वै बदळाव नई लासी तो नई पीढी नै आगै आवणो पडसी। अेक पासै कैवण मे तो कन्या नै देवी रै रूप मे देखा देवी रै अमूर्त रूप नै पूजा बैसू शक्ति री याचना करा हॉ। दूजी कानी मूर्त रूप री देवी री आ दुरदसा कर राखी है वैनै अपग अर पगु बणा राखी है।

सुमेर थारै इयै घर मे काईं कमी है ? जरूरत सू घणी म्हैं तनै छूट दे राखी है। जरूरत सू घणो थारो लाड राखू हूँ।

प्रमिला म्हारी बात छोडो बाबूसा। आपणै पुराणै दकियानूसी विचारा नै छोडो। आपणै घर सू इयै दायजै नै लापो लगावो।

सुमेर म्हैं थारी बात सुणली। था टाबरा रो इयै बात्या मे टाग अडावणो आछो कोनी। बूढै–बडेरा रा काम बूढा–बडेरा नै ही करण दो।

प्रमिला काईं आपनै पतो कोनी ? दहेज रै डर सू मा–बाप भ्रूणहत्या करण लागग्या। लडकी रै जलम लेवण सू पैली ही बैनै मारण लागग्या। ओ पाप किता क दिन चालसी ? म्हारै प्रोफेसर सा ब शर्माजी माथै इयै अपराध रो मुकदमो चाल रियो है। अबै मूढो लुकावता फिरै है।

सुमेर भासणबाजी बद करसी या म्हैं अठेसू उठ र चल्यो जाऊ ?

(फोन बाजै)

प्रमिला कुण ताऊजी ? पधारो बाबूसा घरै ही है। *(फोन राख देवै)* हुलासचन्दजी रो फोन हो। बाबूसा आपनै अेक बार फेरू कैय दू। आप दायजै रै चक्कर मे मत पडो। विमल भाईसा री जिन्दगी भी आप तबाह कर दी रिस्तो भी टूटग्यो अर बियै

(हुलासचन्द आवै। प्रमिला बारै निकळ जावै।)

सुमेर आओ पधारो सेठसा'ब।

हुलास सेठ कन्हैयालालजी रै अठै जाय र फेरू आपरै कनै हाजिर हुयो हूँ। आपरी माग बारै साम्है राखी ही पण रकम मोटी है। आपरी माग मानण री स्थिति म अबार वै बिल्कुल कोनी। कठैई जुगाड बिठावै तो टेम भोत कम है। ब्याव रा नेगचार टुवण दो कोसिस कर र आपरी माग पूरी कर देसी।

सुमेर पछे रो पीछोकडो ही हुवै है सेठा। तातै घाव ही कई हुवै तो हुवै। ओ स्वार्थी जगत है पछै कुण कैनै पूछै– म्हैं पीयो म्हारा बळद पीया हमै कुओ दुडै तो दुडै। रुपिया री बात तो हुलासचन्दजी रुपिया सू ही हुसी। खाली बाता सू काम को चालैनीं। इत्ती मोटी हवेली है अडाणै राख र रुपिया उधार ले सकै है। भागता क्यू फिरै ?

हुलास सेठजी सगळा मूछ रा चावळ राखणा चावे। पैठ सगळा नै प्यारी है कुण गमावणी चावै है ? हवेली सू गवाडी रो रुतबो है। आप थोडो विचार करो। आदमी बात रो धणी हे थोडी मोहलत दो। टेम लागसी पण आपरी माग पूरी कर देसी।

सुमेर म्हारै कनै तो अेक टूक जवाब है–पइसै रो इन्जाम करो नई तो ओ ब्याव को हुवैनीं। सेठ बण्यो फिरै है अर अटी मे धेलो कोनी।

हुलास सुमेरमलजी ऊचो मूढो कर र मत थूको। धन–दौलत घटत–वधत री छाव हे आ अेक जगै को रैवैनीं। क्यू ? आ कैबत सुणी कोनी–

लिछमी थिर रैवै नईं आ जाणै सव कोय।

पुरस पुरातन री बधू, क्यू न चचला होय।।

सुमेर अै ओखाणा रैवण दो सेठा। मासिया भाई हो सेठ कन्हैयालालजी री कुई मदद करो।

हुलास आप तो इया बात कर रिया हो सेठा जाणै हूँ आपरो दबेल हूँ। हर आदमी नै अेक लाठी सू मत हाको। आखो मुलक जाणै हे सेठा आपरै बाप–दादा री दो पीढिया पैली काई हालत ही ? आप रा दादा भुगडीमलजी चसमै री टूटोडी

डाडया नै डोरी सू बाधर कान माथै लपेटोडा दीयै रै चानणै मे अेक ढूलियै धान सट्टै अेक ढूलियै मतीरै रा बीज बेच्या करता। ठठरा री गुवाड मे भडभूजे जिसी अेक छोटीसी दुकानडी ही।

सुमेर अेमे काई मैणो है ? पैलै जमानै मे बिणज जिन्स्या रै अट्टै-सट्टै सू ई हुया करतो। विणज रो आधार ही ओ हो। हूँ कद अैसू इन्कार करू हूँ ?

हुलास आज सावरो सामैं आयग्यो तो अे मोटा बोल बोलण लागग्या ? आदमी देख र बात करिया करो। सेठ कन्हैयालालजी रो मोसियो भाई हूँ तो नेडो-आगो थारै ई कीं लागू हूँ। सेठ कन्हैयालालजी रा घराणो कोई छोटो-मोटो घराणो हो काई ? यारो दादो नगरसेठ बाजता हा अर राजाजी घरै पधारता अर आपरा दादा-पडदादा बिये घर आगै पाणी भरता। हूँ तो भलै री बात करण आयो हो अर थे उलटा गळै पडो हो। धन रो गुमान कोई ओर नै दिखाया। धींगाणै री सेठाई री ठसक मे केई री भली बात सुणा इ कानी ? थे जाणो अर थारो करम। हूँ चालू। आपनै अेकर फेरू चेतावू कै चन्दा-चिट्ठा मे समाज सुधारका मे थोथा नाव मत लिखाओ अर साचा समाज सुधारक बणो।

सुमेर आप ओ केवणो चायो हो कै म्हैं मिनख कोनी ?

हुलास मिनख तो हो पण पैला रा लोग आप जिसा घटिया मिनख को हुवता नीं। अेक-दूजै रो काण-कायदो राखता हूँ चालू, जै रामजी री।

(सेठ हुलासचन्द बारै निकळ जावै अर सेठ कन्हैयालाल आवै)

सुमेर पधारो-पधारो कन्हैयालालजी। भौत लाबी उमर पाई है। अबार आपरै पधारण सू पेली आपरी चर्चा चाल री ही हुलासचन्दजी पधारिया हा। ब्याव री तयारिया ता हुयगी हुसी ?

कन्हैया सगळो इतजाम तो हुयग्यो सेठ सा'ब पण आपरी माग री रकम रो जुगाड को हुयोनीं। क्यूकै रकम मोटी है अर टेम थोडो है।

सुमेर टेम थोडो है या घणो रकम रो जुगाड तो करणो ही पडसी।

कन्हैया सेठ सा ब आप म्हारी बेटी रा हाथ पीळा हुवण दो टेम तो लागसी पण म्हैं आपरी माग पूरी कर देसू।

सुमेर काम निकळया पछे कुण कोई नै पूछै है सेठा ?

कन्हैया आप स्याणा–समझणा हुय र आ बात काई करो। अे कोई अेक दिन रा रिस्ता कोनी हुवै पीढिया–दर–पीढिया चालसी।

सुमेर आ बोदी बात्या मे काई राख्यो है सेठजी ? चोखो घर चाइजै तो रुपिया रो इन्तजाम तो

(बीच मे बोलै)

कन्हैया इत्ता करडा ना बणो सेठ सा ब म्हैं कचन रे ब्याव पछै म्हारी जमीं–जायदाद सगळी बेच देसू।

सुमेर मकान ही बेचणो है तो अबार ही क्यू नीं बेच दो ?

कन्हैया अबै ऊभाघडी किसा मकान बिकै है सेठजी ? आप भरोसो करो। म्हैं आपरी

(बीच मे बोलै)

सुमेर उधार राखणी म्हारे खातै मे कोनी।

कन्हैया इया ना करो सेठ सा ब। घर मेहमाना सू भरीजग्यो। वै काईं सोचसी ?

सुमेर फेरू ओ तो चोखो मौको है ? मौकै रो फायदो उठावो अर सगळै मेहमाना कने सू लाख–लाख पचास–पचास हजार उधार माग लो इक्कीस भेई इकावन लाख भेळा हुवता कित्तीक देर लागै। थारो नाको ई कढ जासी अर बात ही बण जासी। थानै अै बात रो बेरो भी लाग जासी कै भीड मे थारो कुण तो हेताळू है अर कुण कोनी ?

कन्हैया आप समझदार हुय र इसी ओछी सला दे रिया हो सेठ सा ब ?

सुमेर अेमे गलत काईं है सादी–ब्यावा मे उधार–सुधार तो चालती ही रैवै है। आप बा पइसा सू जुओ थोडी खेल रिया हो ?

कन्हैया हूँ इत्तो गिरयोडो आदमी तो कोनी सेठ सा ब जिको घरै आयोडै मेहमाना सू पइसा उधार मागू अर म्हारी अर बारी

रैठी कराऊ। सगो सगै री जड़ हुवै सेठा। आप म्हारी हालत माथै तरस खाओ। म्हनै मोहलत दो।

सुमेर हूँ तो अेकमुखी बात करू। पइसै रो इन्तजाम करसो तो म्हारो छोरो थारै घरै तोरण मारसी।

कन्हैया नई--नई सेठा। आप बरात लेर नईं पधारिया तो म्हैं कठैई मूढो दिखावण लायक नीं रैवूला।

सुमेर तो मूढो दिखावणो कोई जरूरी है। रस्तै मे नदी--नाळा घणा ही है। कईं अटी मे माल है तो बात करो।

(कन्हैयालाल पागडी उतार र)

कन्हैया अन्टी मे तो आ पागडी है सेठजी जिकी आपरै चरणा में राख दी। आप जे बरात लेर नईं पधारिया तो म्हनै तो कुओ--खाड करणो पडसी।

(विमल आवै अर पागडी उठा र सेठ कन्हैयालाल नै झलावै)

विमल आपनै कुओ--खाड करण री जरूरत कोनी सेठजी। जे आप नै मजूर हुवै तो बरात लेर हूँ आसू।

कन्हैया विमल बाबू आप ?

विमल हाँ सेठजी म्है बो ही हूँ जिकै री जुबान आज ताईं बन्द ही।

कन्हैया आप तो आ कैय र म्हनै भौत बडै सकट सू उबार दियो। म्हनै प्राण दान दे दियो विमल बाबू। आप तोरण मारण नै पधारसो तो म्हारी इज्जत रैय जासी। हूँ आख्या बिछाया आपरी उडीक राखसू।

(कन्हैयालाल बारै निकळ जावै)

सुमेर हरामखोर थारी जुबान तो बन्द ही। अबै कूकर बोलण लागग्यो तू ?

विमल म्हारी जुबान तो घणा ही दिन बन्द रैई बावूसा। पण आपरा अै जुलम देख र आवाज पाछी बावडगी। बराबर रो सेठ पगा मे पागडी राख रियो है अर आप ठोकर मार रिया हो आ कठै री भलमनसाहत है ? कोई गरीब री पागडी इया उछाळणी आछी बात कोनी बावूसा।

सुमेर भासण बन्द कर हरामखोर ! दूसरा री पागडी बचावण लारै तू म्हारी पागडी उछाळ रियो है ? तू इयै घर सू बरात लेर जासी तो म्हारी इज्जत किया बचसी ?

विमल थोथी इज्जत रै लारै इन्सानी जिदग्या सू मत खेलो बाबूसा।

सुमेर बडी बात्या आवै है तने ? इत्ता दिन जाण–बूझ र पागल बण्योडो हो ?

विमल म्हारै पागल हुयण मे ही आपरो ही हाथ है बाबूसा !

सुमेर म्हारो हाथ है ? पहेलिया क्यू बुझावै है सीधी–सीधी बात कर।

(पारस अर प्रमिला आवै अर छुप र दोना री बात्या सुणै)

विमल हूँ अर रजनी सागै–सागै पढता। रजनी सीधी गुणवान अर मरजादा राखणआळी लडकी ही। भगवान जिसा बैनै गुण दिया बिसोई बैनै रूप दियो। अेक ई जात रा हुवणै रै कारण सू म्हे अेक–दूजै रै घणा नेडा आयग्या अर आपस मे कौल करार हुयग्या कै जीवनभर अेक–दूजै रै सागै रैसा–मरसा। म्हारै कैया सू रजनी आपरै पिता सेठ चम्पालालजी नै मागो लेर आपसू मिलणनै भेज्या। म्हैं भी आपनै म्हारी रजामदी बता दी पण आप इयै रिस्तै सारू सफा ना कर दी। काईं कमी ही अै सगपण मे ? सेठ चम्पालालजी पइसै मे आपा सू थोडा कमजोर हा व्यापार मे घाटो लागग्यो पण बारै घराणै मे कोई कमी को ही नीं। आपनै धन रो लालच हो रिस्तो हुयो कोनी। रजनी भावुक लडकी ही जैर खार मरगी। मरण सू पैली म्हनै रजनी चेतायो। पण हूँ कमजोर हो। आपरो विरोध को कर सक्यो नीं। जै बीं बगत म्हैं कईं हिम्मत कर लेवतो तो अकाल मौत रै मूढै मे जावती अेक अनमोल जिन्दगी बच जावती पण म्हारा सुपना अधूरा रैयग्या। आखो सरार म्हनै दुसमण ज्यू लागण लागग्यो। अै खातर म्हैं पागल वणण रो ढोंग करिया अर पागल बण र जीवणै मे ही म्हनै जीवन रो सार दीख्यो। रैय–रैय र म्हनै अेक ही बात कचोटती। हूँ रजनी रो हित्यारो हूँ, पापी हूँ। पण आज आख्या रै सामनै फेरू बिसो ई खेल हुवतो देख्यो जद हिम्मत जुटावणी पडी।

सुहावणा डूगर

(दिनूगै रो बगत। चिडकल्या री चिक–चिक। घर माय सू भजन सुणीजै। धुरी बारणो बाजै। झूमरमल चोरडियै रो छोरो उदीराम थोडै ढीलै माथै रो हुवै। घर मे पथरणै माथै सूतो पड्यो छींकया लेवै अर पड्यो–पड्यो ई बोलै)

उदीराम कुण है रे ?

(बारै सू आवाज आवै)

मगतो ओ बाईसा !

(बारणो फेरू बजावै)

उदीराम अरे ! कुण है बाईसा रा भाईसा ?

(बारणो बजावै)

मगतो ओ बाबूसा !

उदीराम मरै थारा भुवासा।

मगता ओ माई !

उदीराम खावै तनै साई *(बारणो बाजै उदीराम उठ'र बारणो खोलै अर भिखमगै नै सामनै खड्यो देख र)*

ओ हो मगतरामजी थे ? आवो–आवो माय पधारो बारै क्यू खड्या हो ? आ जावो आ जावो डरो ना म्हैं घर मे अेकलो हू।

(मगतो डरतो–डरतो माय आवै)

हुकम करो काईं सेवा करू ?

मगतो कोई ठडी–बासी रोटी हुवै तो दो बाबूसा।

उदीराम देखो मगतरामजी ! म्हे जात रा जैनी हा। ठडी–बासी रोटी राखा कोनी।

सुहावणा डूगर

(दिनूगै रो बगत। चिडकल्या री चिक–चिक। घर माय सू भजन सुणीजै। धुरी बारणो बाजै। झूमरमल चोरडियै रो छोरो उदीराम थोडै ढीलै माथै रो हुवै। घर मे पथरणै माथै सूतो पड्यो छींकया लेवै अर पड्यो–पड्यो ई बोलै)

उदीराम कुण है रे ?

(बारै सू आवाज आवै)

मगतो ओ बाईसा !

(बारणो फेरू बजावै)

उदीराम अरे ! कुण है बाईसा रा भाईसा ?

(बारणो बजावै)

मगतो ओ बाबूसा !

उदीराम मरै थारा भुवासा।

मगतो ओ माई !

उदीराम खावै तनै साई *(बारणो बाजै उदीराम उठ र बारणो खोलै अर भिखमगै नै सामनै खडयो देख र)*

ओ हो मगतरामजी थे ? आवो–आवो माय पधारो बारै क्यू खड्या हो ? आ जावो आ जावो डरो ना म्हैं घर मे अेकलो हू।

(मगतो डरतो–डरतो माय आवै)

हुकम करो काई सेवा करू ?

मगतो कोई ठडी–बासी रोटी हुवै तो दो बाबूसा।

उदीराम देखो मगतरामजी ! म्हे जात रा जैनी हा। ठडी–बासी रोटी राखा कोनी।

मगतो तो गरम रोटी दे दो बाबूसा। दो दिना रो भूखो हू।

उदीराम अरे ! भूगळनाथ। इत्ती बेगी गरम रोटी थारै खातर थारै बाप बणाई है ? म्हैं तो हालताई दातण–कुरळा ई नीं करिया।

मगतो तो कोई आटो–बीजो घाल दो बाबूसा।

उदीराम आटो पीसणो देवोडो है तीन दिन हुयग्या।

मगतो तीन दिन ? दिनूगै–दिनूगै क्यू कूड बोलै भाया ?

उदीराम ता कूड रात रा बोलीजै ?

मगतो इत्ती ऊची हवेली अर घर मे दो चिमटी आटो कोनी ?

उदीराम तो हवेली नै थारै खातर आटै सू भर र राखू ? जाया जणै ई चक्की आळो बोल दै– लाईट कोनी।

मगतो चोखो भाईडा। तिस लाग री है। थोडो पाणीडो तो पा बाळ।

उदीराम अरे ! गैलसफी घोन जद लाईट ई कोनी तो पाणी कठै सू आसी ?

(पग दिखा र)

मगतो कोई टूटी–फूटी चम्पल हुवै तो दे बाबू। तावडै फिरता रा पगडा बळै।

उदीराम देखो मगतरामजी। चम्पल टूटै अर म्हारो बाप मिदर जावै अर नुवीं देख र चम्पला बदळ लावै।

(कुडतो दिखा'र)

मगतो भाईडा कोई फाट्यो–पुराणो कुडतियो है तो दै बाळ सिया मरतै रा दातडा बाजै।

उदीराम अबै बाजो या ना बाजो कुडतिया फाटै अर म्हारो बाप कुडतियो होळी खेलण खातर सावट'र राख देवै।

मगतो तो भाईड़ा कई तो दै बाळ। दिनूगै–दिनूगै नाकारो तो मत दै।

उदीराम म्हैं वैयो नी अबार तो कीं कोनी घर में। *(उबासी खार'र)* म्हनै उबासी आवै दो–चार तू ई खायलै।

(मगतो उठतो बोलै)

मगतो भगवान जाणै आज कैरो मूढो देख र घर सू निकळ्यो हो ?

उदीराम म्हैं बताऊ काच देख र निकळ्यो हुसी !

मगतो या भाया भगवान थारो भलो करै।

उदीराम देखरे थारै कैया भगवान भलो करतो हुवै नी तो तू पैला थारो भलो करालै।

(हाथ जोड र)

मगतो बुरो नीं मानै तो अेक बात कैऊ भाया ?

उदीराम अेक बात ई कहे दो कैदी तो ओ हाथ माय सू कटोरो खोस लू ला।

(मगतो हसण लाग जावे– सागै–सागै उदीराम भी हसै)

मगतो तू क्यू हस्यो भाया ?

उदीराम पैला तू बता ? तू क्यू हस्यो ?

मगतो हसू नीं तो म्हारै बाप नै रोऊ ? ठण्डी–बासी रोटी कोनी। पीवण नै घर मे पाणी कोनी दो चिमटी आटो कोनी टूटी–फूटी चम्पल कोनी फाटयो–पुराणो कुडतियो कोनी। तो घर मे अेकलो पडयो काईं करे है भाया ? आ जा दोनू सागै ई मागण नै चाला।

(पथरणै माथे आडो हुवतो बोलै)

उदीराम अबार तो म्हारै काम है। फेरू कदैई चालसा।

मगतो अमर हुजा भाया।

(उठतो बोलै)

उदीराम म्हैं तो अमर हुजासू तू अमर बकरो हुजा।

(मगतो बारै निकळै अर उदीराम पाछो सूजावै दो–तीन बार बारणो फेरू बाजै। उदीराम सूतो–सूतो जोर सू बोलै)

बाप ओ बाप बाप रे

(माय सू झूमरमल आवै अर उदीराम नै मारतो बोलै)

झूमर हरामखोर। इक्कीस तारीख नै इक्कीस बरसा रो हुजासी अर ढग सू बोलणो नीं आवै।

(घर माय सू झूमरमल री लुगाई री आवाज)

अरे दिनूगै–दिनूगै मुरगै दाई कुण बाग मार रैयो है ?

(झूमरमल उदीराम रा झींटा झाल र)

झूमर — फेरू कदेइ बाप बोल्या तो हरामखोर री टाग्या तोड देवूला।

(शरबती कमरै मे आवै अर उदीराम रै आडी फिरती बोलै)

शरबती — काई है जी ? क्यू मार रैया हो म्हारै छोरै नै ?

झूमर — समझा दै अै गधेडै नै।

शरबती — ओ गधो आपरै बाप माथै गयो है। देखलो वो ई नाक बो ई नकसा।

झूमर — तू घणी लाड मे मत आ शरबती पाल लिए थारै कुणकायै नै नीं तो मार–मार र म्हैं अैरो भुरतो बणा देऊला।

शरबती — क्यू ? काई जुलम कर दियो ?

झूमर — इत्तो बडो साड हुयग्यो अर बोलबा री सुध कोनी।

शरबती — अबै ऊठ है या साड। मिनख जिकी चीज बोवै बा ई तो काटै।

झूमर — देख शरबती तनै हजार वार कैदियो कै तू अैरी झूठी पैरवी मत करिया कर ?

शरबती — अैरी पैरवी म्हैं नीं करसू तो पैरवी करण नै प लक्ष्मीनारायणजी नै लार खडा करसृ ?

(उदीराम बीच मे बोलै)

उदीराम — अगर पडितजी आर खडया हुयग्या तो बाप री रडक काढ नाखसी।

(उदीराम नै मारता थका)

झूमर — कढाऊ थारी रडक *(गळो झाल र)* चाल माइनै।

(शरबती पाछो खींचती बोलै)

शरबती — को जावैनी अठीनै आ बेटा। साची–साची बता क्यू मारै हा तनै ?

उदीराम — कोई आदमी आपणो शीशम रो बारणो भाग रैयो हो। म्हैं वैनै

पूछ्यो तन्नै म्हारी मा सू मिलणो है या म्हारै बाप सू ?

झूमर फेरू तू म्नै बाप बोल्यो (झींटा झाल र) आईन्दा बोलसी बाप ?

(बीच मे पडती बोलै)

शरबती थे अैरा बाप कोनी काई ?

झूमर बाप र, धायो नीं धुपू पण जणै देखो हरामखोर बाप–बाप बोलतो रैवै।

शरबती तो काई बोलै थानै ? दादोजी या नानोजी काकोजी या बाबोजी ? कांई बालणो है ?

झूमर बापूसा बापूजी जीसा पापा पापाजी डैडी और की नीं तो खाली बापू इ बोल दै।

शरबती पण बापूजीआळा गुण कठै है थाम ? बानै तो सगळो देस ई बापू बोलतो हो।

झूमर हरामखोर इत्तो बडो टोगडो हुयग्यो अर जणै देखो बाप बाप बाप

शरबती अणपढ आदमी तो इया ई बोलसी। पापा या डैडी बोलावणो हो तो पढायो क्यू कोनी अैनै ? जणै तो हाथ में पाटी देखी कै बकणो सुरु कर देवता कै अैनै स्कूल भेज दियो तो टाग्या तोड देयूला। म्हैं म्हारी छोरी नै ई किया पढाई है म्हारो जी जाणै।

झूमर म्हैं कैऊ पडयो काई है पढाई म ? देस रै माय लाखा पढ्या–लिख्या लोग नौकरी नै रोवता फिरै अर अणपढ आदमी सिझ्या नै सौ रुपिया लेय'र घर म बडै।

(ऊदीराम बीच मे बोलै)

उदीराम तो तू क्यू पढियो बाप ?

(उदीराम नै मारता थका)

झूमर तूकारो देवै बाप नै तूकारो देवै ।

(बीच मे पडती बोलै)

शरबती म्हारी समझ मे आ नीं आ री है कै बाप बोलण में थानै सरम क्यू आवै है ? ओ तो सुकर करो कै म्हैं थानै खसम नीं बोलू।

झूमर हा–हा बेटो बाप बोलै। तू खसम बोल्या कर। ओ खसम सुण खसम इन्नै आ खसम बिन्नै जा खसम सब्जी ला खसम

शरबती तो ऐजी सुणो जी कैवणो चोखो लागै थानै ? म्हारै पीअर मे ऐजी काणै आदमी नै बोलै।

झूमर हा–हा तू म्हनै काणियो ई बोल्या कर– तन्नै सौगन है थारै खसम री अगर म्हनै काणियो नीं बोल्यो।

(उदीराम बीच मे बोलै)

उदीराम काणिया–काणिया बोल थारी मा बजावै ढोल ढोल मे टक्को थारी मा रो माटी पक्को।

(उदीराम नै मारतो बोलै)

झूमर अरे ! ओ काणियै रा बाप। माय बळ अर म्हारो लाल कुडतो अर पीळा पजामो लेर आ।

उदीराम लाल कुडतै अर पीळै पजामै रै सागै मूगै रग री पागडी ई ला दू ?

झूमर थारो बाप तो जीवै है ? मूगै रग री पागडी कैरै लारै बाधू।

उदीराम लाल कुडतै अर पीळै पजामै मे थे ऊपर सू टमाटर अर नीचै सू नींबू दाई दीखसो।

झूमर अरे ! ओ टमाटर रा बीज

(उदीराम माय भाग जावै शरबती बीच मे बोलै)

शरबती दिनूगै–दिनूगै लाल–पीळा हू र कैनै रिझावण नै पधार रिया हो ?

(बिगड र)

झूमर थारी मा–राड नै ?

शरबती हा–हा वेगा जावो बा ऊपर बैठी कदरी उडीक री है थानै पण याद राख्या मरग्या तो म्हारै पीअर सू कुत्तो ई नीं आवैला बैठवा नै।

झूमर काई बोली ? दूसर बोल तो ?

शरबती क्यू ? काना रा पडदा अबार सू ई फाटग्या ?

झूमर म्हारै काना रा पड़दा तो तन्नै अे घर मे लेर आयो जणै ई फाटग्या।

शरबती तो हमैं किसा मिया मरग्या कै रोजा घटग्या ? कोई चोखी देख र म्हारै सौत ले आवो वा पाछा सीड देसी।

झूमर तू म्हनै दूजी लावण खातर ताना मारै पण आ ना भूलै कै सौत तो माटी री ई बुरी हुवै।

शरबती हुवै तो हुवण दो। आ तो म्हैं बै मा–बाप री हू जिको थारा धमीड़ा सैऊ। दूसरी कोई हुवती तो कदैई जावती टाचरै मे दे'र।

झूमर अेकै कानी रो'र जतावै अर दूजी कानी म्हनै दूजी लावण नै उकसावै।

शरबती हा हा म्हैं झूठ थोडी बोलू। थे लेर तो आओ राडी–रडुवा नै ऊभा बाळ दू, लापो लगा दू सूता रै।

झूमर लापो लगा थारै घणा मानीजै जिका रै। म्हारै लापो लगावण नै तू अेक जण्यो है बो ई भौत है।

शरबती थानै सरम नीं आवै ? जणै देखो छोरै नै मारता रैवो। ओ मरग्यो तो थारै लापो लगासी कुण ?

झूमर इसी दया आवै तो इसो कुमाणस जिण्यो क्यू हो ?

शरबती म्हैं जिण्या ? जिसा रूख बिसा छोडा।

(शरबती माय जावै अर उदीराम धोती–कुडतो लेय र आवै)

झूमर अरे गैलसफा। तनै पीळो पजामो लावण रो कैयो हो। ओ धोतियो लेय र क्यू बळयो है ?

उदीराम पजामै मे नाडो कोनी हो।

झूमर तो नाडे नै कुण गिटग्यो ?

उदीराम पजामै रो नाडो काढ र मा गऊ री बोरी रो मूढो बाध दियो।

झूमर तो दूजी डोरया बळगी ही बोरी रो मूढो बाध दियो।

(शरबती पाछी बारै आ र)

शरबती बताओ तो सरी लाल–पीळा हुय र पधारो कठै हो ?

झूमर तू भोळी ना बण ! तनै बेरो कोनी ? आसाम सू अेक आसामी थारै उदियै नै देखण नै आ री है।

शरबती अरे ! थारो हीयो क्यू फूटग्यो है ? थे उदिये रो ब्याव माड रिया हो ?

झूमर तो जिदगीभर कुवारो राखणो है अे साड नै ?

शरबती नीं तो म्हारो बाप देसी छोरी अे नै ?

झूमर अरे टाबर आदमी री साख नै मिलै।

शरबती हा–हा म्हैं जाणू थारी साख कित्तीक है। मरग्या मरोड मे चाल रे बेटा ! मिन्दर चाल र आवा। राजा करण री बगत सगळा माथो खायग्या।

(उदीराम बारै जावतो–जावतो बोलै)

उदीराम काणिया–काणिया बोल थारी मा बजावै ढोल

(झूमरमल लारै भाजै)

झूमर अरे। तू बळजा अठै सू, नीं तो थारो ढोल बजा देवूला

(उदियो बारै खानी भाज जावै अर बारै खानी सू इचियो दो–तीन चिटिठया लेय र आवै)

अरे ओ कामचोर ! तू आज हमै बळियो है ? नौकरी सू धापग्यो तो इया बोल।

इचियो नौकरी सू तो नीं धाप्यो सेठा पण थारी अै रोज–रोज री किच–किच सू धापग्यो।

झूमर तो थारो हिसाब–किताब कर दू ?

इचियो अबै घणी फड–फड ता करो ना सेठा। थे म्हासू धापग्या तो भूखो म्हैं ई कोनी।

झूमर काई बोल्यो रै लिगतडा ? दूसर बोल तो !

इचियो अरे ! सेठा म्हारा सगळा बडेरा अै हवेली मे काम करता–करता गुडकग्या तो म्हनै ढोई कठै है ? नीं तो दूसर तो काई अबार ताई तीसर बोल जावतो।

झूमर तीसर बोल जावतो माय बळ अर थोडो तेल लेयर आ अर सिर मे खाज कर।

(इचियो मालिस करतो–करतो बोलै)

इचियो सेठा लोगडा कैवै पग मे खाज आवै तो जात्रा करणी पडे हाथ मे खाज आवै तो पईसडा हाथ लागै अर सिर मे खाज आवै तो जूत पडै। अै बात में कई तन्त लाग्यो थानै ?

(धक्को मार र)

झूमर अरे! ओ छगनियै रा निघ। तू म्हारो नाव जाणे है नी ?

इचियो नाव तो काई सेठा थारी सात पीढी नै जाणू। आज दस मिनट मौडो होयग्यो जिकै मे थे कपडा सू बारै हुय रैया हो। कदैई टेम सू तनखा देवोडी याद आवै है थानै ?

झूमर हाथ चालू राख।

इचियो सेठा थारै दादै जतनमलजी रा सै र रै माय पत्थर तिरिया करता पण थे इत्ता कजूस कैरै माथै हो ?

(बिगड र)

झूमर थारै बाप छगनियै माथै।

इचियो सही बात है सेठा। म्हारो बाप ई कजूसा मायलो कजूस हो।

(धक्को मारता)

झूमर ओ काणकी रा काई कैयो तू ?

इचियो म्हारो मतलब थारै घर मे ना मोटर है अर ना साइकिल ना टीवी है ना ट्राजिस्टर ना कूलर है ना फ्रीज ना बैठण नै सोफा है ना पलग ना नौकर है ना चाकर।

झूमर तो तू म्हारो बाप है ?

इचियो अै पथरणै नै होळी दीयाळी झडकाऊ म्हारा चूकिया रैय जावै। अैमे रुई तो थोडी अर घूडा घणो अबै

झूमर बोल–बोल चुप क्यू हुयग्यो ?

इचियो अबै सेठियाजी नै देख लो। चार–चार बजरी ढोवणवाळी टरक्या खडी है घर मे।

झूमर चाद कई टरका है ? कैसूई दुसमणी काढणी हुवै तो वैनै ट्रक दरा दो या वैनै चुनाव म खड्यो करदा।

इचियो औ सब कैवण री बात्या है सेठा चुनाव सू पैला ओ किसानियो काई हो ? अक छोटो-सो चुनाव जीत्या अर भाई रो ब्याव माड दियो। बीस हजार कार्ड छपार कुत्ता-बिल्ला नै बाट दिया अर लाखू रुपिया बान भेळी करली।

झूमर अबै काई हाल है वैरा पतो है ?

इचियो अबै तो कुण कुतड़ी पूछै है सेठा ? इया ई रोवतो फिरै है इनै-बिनै।

झूमर फैर ?

इचियो सेठा म्हारी राय मानो अर अबकी बार थे इ चुनाव म खडया हुजावो।

झूमर देख रे ! थारै कैया ना तो म्हैं चुनाव लडू अर ना ट्रक लाऊ। चुनाव मे खडया होऊ अर जिका रा मूढा देखणा नीं चाऊ बानै हाथ जोडतो फिरू ?

इचियो सेठा थे समझो कोनी भोळा हा। खाली एक महीणो लोगा री हाथाजोडी करला। ईद आवै तो मसीत आगै जार ऊभा हुयजावो अर होळी दीयाळी राम-राम-सा पगै लागू-सा बस ! थारा वोट पक्का। बीरे पछै चार साल अर इग्यारा महीणा थे आगै अर जनता लारै अर भाग सू गाडी आगै झण्डी लाग जावै तो पोबारा पच्चीस।

झूमर आ बात तो तू सातरी करी। अबै तू चूप रै अर म्हारी अेक बात ध्यान सू सुण।

इचियो हुकम करो नी सेठा !

झूमर मारुति कार रगीन टीवी कूलर फ्रीज वासिग मशीन मिक्सी थिकसी वगैरा आपा बजार सू मोल लेर आवा तो कित्ता पइसा लागे ?

इचिया अरे सेठा म्हनै इत्तो हिसाब आवतो तो आज म्हारी जाग्या थे म्हारे मालिस करता लाधता।

झूमर काई बोल्यो रे फीटिया ?

इचियो तो सेठा म्हनै कई ठा कै आ चीजा रा कित्ता पइसा लागै ?

झूमर तो गिण।

इचियो गिणाओ।

झूमर मारुति रा ढाई लाख रिपिया रगीन टीवी रा वीस हजार कूलर–फ्रीज रा पन्द्रह हजार वासिग मशीन रा बाईस हजार सोफासेट रा पच्चीस हजार डाइनिग टेवल रा बारै हजार। कित्ता हुया ?

इचियो वित्ता लाख अर वित्ता हजार।

झूमर तीन लाख अर चमाळीस हजार रुपिया।

इचियो इत्ता तो म्हासू हेला ई नीं मारीजै सेठा।

झूमर तो सुण अै सगळी चीजा आपानै काई फोकट मे दे दै तो ?

इचियो फोकट म ? इसो दानी कुण है सेठा ? म्हनै ई नाव बताओ। म्हैं अबार ई जार लैण मे लाग जायू।

झूमर अेक–आध हुवै तो बताऊ। सैर म तो होड लागरी है। कोई हीरो होन्डा देवै तो कोई मारुति। कोई दाळ रो सीरा बणावै तो कोई गूदपाक कोई काजू–कतली तो कोई विदाम–कतली।

इचियो म्हैं समझ्यो कोनी सेठा।

झूमर फूटग्या थारै कानी सू। लोग कैवै नर मे नाई अर खग मे कागलो भौत हुस्यार हुवै।

इचियो अै सब कैवण री बाता हे सेठा। बापडै नाइडै नै म्हारो बाप पूछै है। गरज हुवै जितै खवासजी अर गरज मिटी अर नाइडो।

खैर छोडो सेठा। म्हनै एक बात बताओ। थे उदीबाबू नै साची ई परणा रिया हा ?

झूमर क्यू उदीराम मरद कोनी ?

इचियो मरद तो म्हारै सू ई तगडा है सेठा पण सरकार कानून बणा राख्यो है कै छोरो इक्कीस रो अर छोरी अठारा री हुवणी जरूरी है।

झूमर कुण कुतडी पूछै सरकार ने ? तू अठारा–इक्कीस री यात

करे। आपणै देस मे लोगडा छोटै–छाटै टाबरिया नै गोद्या मे ले र फेरा खायलै।

इचियो	इया लुक–छुप र फेरा खायलै तो बापडी सरकार काईं करै ?

झूमर	सरकार काईं करै ? अरे गैलीटड सरकार चावै तो सब–कुछ कर सकै। दो–चार जोडा नै झाल र माय ठोक दे तो लोगडा ऐ ब्याव–ध्याव औसर–मौसर अर देज–दायजा सगळा भूल जावै पण माया आ वोटा री राजनीति हे। नेता सोचै फूटया जनता रा आपा जनता सू खारा तूम्या क्यू बाधा ?

इचियो	आ बात तो था लाख रुपिया री कैयदी सेठा। ऐ मामलै मे तो सरकार नै करडै सू करडो कदम उठावणो चाईजै अर इया जनता नराज हुवै तो बीस वार हुवो। पण सेठा उदीबाबू नै छोरी देसी कुण ?

(शरबती माय आय र)

शरबती	साची कैय रियो है इचियो। इत्ती कैरै घर मे भूख है जिको आपरी छोरी उदियै नै देसी ?

झूमर	उदियो करोडपती बाप रो बेटो है गगलै तेली रो कोनी अर आजकल छोरा–छोरी देखै कुण है। लोगडा आसामिया देखै पइसो देखै टक्का देखै।

शरबती	धूड है इसी आसामिया मे फेरू थानै करोडपति मानै कुण है ? थारो मानखो सगळो सै र जाणै।

झूमर	तू थारी खाल मे रैय र बात करिया कर तू म्हारी लुगाई हुय र म्हारो मानखो बखाणै।

(इचियो शरबती रो समान लेय र माय जावै)

शरबती	*आज दिनूगै उठती ई काईं ठा कैरो थोबडो देख्यो हो ?*

झूमर	क्यू कईं हुयग्यो थोबडै रै ? म्हनै तो तू भौत फूठरी लाग री है हेला मारनी दाईं।

शरबती	थे उदियै ने साची ई परणा रैया हो ?

झूमर	क्यू ? गैला–गूगा परणीजै कोनी ? कुवारा रैवै ?

शरबती	इया तो भाग फूटोडे नै करम फूटोडो मिलै ई है पण थे

जाणता थका क्यू केइ गरीब छोरी री जिन्दगी खराब करण लाग रैया हो ?

झूमर आ पार्टी गरीब कोनी करोडपति आसामी है। अेक वात बता ! उदियो गैलो है ?

शरबती बो थानै–मनै गैला कर दै।

झूमर उदियो काणो–खोडो है ?

शरबती काणा–खोडा तो घणा कुचमादी हुवै।

झूमर तो उदियो आधो है ?

शरबती बैनै तीन तिलोकी रो दीखै पण उदियो लुगाई लाय र करसी काईं ?

झूमर अचार घालसी। क्यू ? काईं कमी है उदियै मे ?

शरबती कमी उदियै मे कोनी थामे है। जे उदियो परणीजग्यो तो दुनिया मे कोई आदमी कुवारो नीं रैवणो चाईजै।

झूमर तू वींरी मा हुय'र छोरै रै आडी लगावे है ? वो गूगसाड थारै तो घणो मनीजै है ?

शरबती मनीजण सू काईं हुयो पण जीवती माखी कै सू गिटीजै ?

झूमर जीवती माखी नीं गिटीजै तो माखी नै मार र गिटलै। नीं तो लोग कैसी कोनी कै करोडपति बाप रो बेटो अमर वकरो वणियो फिरै ?

शरबती कोई नीं कैवै। सगळो सै र जाणै है थानै अर उदियै नै।

झूमर जा–जा तू माय जा खडी–खडी थकगी हुसी।

शरबती म्हनै तो माय ई जावणो है कै रै दो माथा है जिको था सू खपत करे।

(झूमरमल बारे जावण लागै)

कठै उखडो हो ?

झूमर थोडो कन्हैयालालजी कन्नै जाय र आऊ।

शरबती पैला रोटी गिटलो। पछै भळै लाबडा ई जाया।

झूमर क्यू ? भूखा मरती रा प्राण निकळै है थारा ?

शरबती पैला प्राण निकळसी थारा म्हैं तो इया ई मूग दळसू अर मलिया देय र खासू।

झूमर म्हैं मूग लेय र आऊ बैठी दळती रैये।

(झूमरमल बारै निकळ जावै अर इचियो माय आय र)

इचियो सैठजी किन्नै गया सेठाणीजी ?

शरबती भाड मे क्यू, तन्नै ई जावणो है ?

इचियो म्हनै अबार फुरसत कठै है सैठाणीजी। सेठजी नै ई जावण दो। म्हारै हाल घणोई काम पडियो है।

(शरबती माय जावै अर बारै कानी सू उदीराम पग रै पाटी बाध'र आवै)

अरे उदी बाबू, इत्ती देर सू कठै सू आया हो अर थारै पग रै काई हुयो ?

उदीराम भीड मे अेक जणो म्हारो पग किचरग्यो। म्हैं नानाणे जाय र पाटी बधार आयो हू।

इचियो नानाणे ? नानाणे म कोई अस्पताळ खुल्योडी ह उदीबाबू ?

उदीराम म्हारै नानाणै मे अेक नर्स भाडे रेवे बा म्हार पाटी बाध र बोली आई लव यू।

इचियो ओ हो पण पाछा थे काई बोल्या ?

उदीराम म्हे तो हस र बारै निकळग्यो।

इचियो थे गैला हो। थानै पाछो बोलणो चाईजतो।

उदीराम काई ?

इचियो थानै बोलणो हो सेम टू यू !

उदीराम आ हाथ मे चिटठी कै री है इचिया ?

इचियो म्हारो छोटोडो भाई मरग्यो। अबार–अबार चिट्ठी आई है।

उदीराम कित्ता बरसा रो हो थारो भाई ?

इचियो तीन बरसा रो।

उदीराम तीन बरसा रो ? थारो बाप कद मरिया इचिया ?

इचियो बाप मरिया नै तो बीस बरस हुयग्या।

उदीराम थे कित्ता भाई हो इचिया ?

इचियो म्हारै समेत पाच भाई हा पण चार मरग्या।

उदीराम पाच मे चार मरग्या ! चारू भाई बीमार हा ?

इचियो नहीं तो चारु नै पीळियो हुयग्यो।

उदीराम पीळियो ? जणे ई म्हारो बाप डरतो पीळो धोतियो पेरै।

इचियो अेक बात म्हारी समझ मे नीं आवै उदीबाबू। दारू म्हारो बाप पीवतो अर पीळियो म्हारै भाया नै कुकर हुयग्यो ?

उदीराम म्हैं बताऊ ?

इचियो बताओ नी उदीबाबू। म्हैं भौत दुखी हूँ।

उदीराम ध्यान सू सुण।

इचियो सुणाओ।

उदीराम अेक डोकरी रै दो छोरा हा। डोकरी रो बडोडो छोरो चौबीस घण्टा हडमानजी रै मिन्दर म बठो पूजा–पाठ मे लागाडो ई रैवतो अर डोकरी रो छोटोडा छोरो रोज मिन्दर जावै अर हडमानजी री मूरती रै अेक लठ मार र आय जावै। इया करता कई महीना बीतग्या। अेक दिन हडमानजी लगडावता–लगडावता डोकरी कन्नै गया अर बोल्या अे डोकर ! तू थारे छोटोडै छोरै नै पाल लिये नीं तो म्हैं थारै बडोडै छोरै रो घाटो मोस नाखूला।

इचियो कमाल है। छोटोडो छोरो लठ मारै अर बडोडे छोरै रो घाटो मोस नाखूला। आ कोई बात हुई ?

उदीराम अे दुनिया मे सगळा काम ऊधा ई हुवै। अबै देख दारू थारो बाप पीवतो अर पीळियो थारै भाया नै हुयग्यो।

(बारै कानी सू झूमरमल आवै अर लाड करतो बोलै)

झूमर अरे ! उदी बेटा किन्नै गयो हो ?

उदीराम आज तू इत्तो मीठो कूकर बोले हे बाप ? चुन्नीलालजी री दुकान सू कुल्लडआळो शर्बत पीय र आयो है ?

झूमर अेक बात सुण बेटा !

शरबती	पैला प्राण निकळसी था मलिया देय र खासू।
झूमर	म्हैं मूग लेय र आऊ बैठ
	(झूमरमल बारै निकळ र
इचियो	सेठजी किन्नै गया सेठ
शरबती	भाड म क्यू, तन्नै ई ज
इचियो	म्हनै अबार फुरसत कठै दो। म्हारै हाल घणोई
	(शरबती माय जावै अर बाध'र आवै)
	अरे उदी बाबू, इत्ती देर काई हुयो ?
उदीराम	भीड मे अेक जणा म्हार पाटी बधार आयो हू।
इचियो	नानाणे ? नानाणै मे को
उदीराम	म्हारै नानाणे मे अक न बोली आई लय यू।
इचियो	ओ हो पण पाछा थे का
उदीराम	म्है तो हस र बारै निकळ
इचियो	थे गैला हो। थान पाछा द
उदीराम	काईं ?
इचियो	थानै बोलणा हा सेम टू यू
उदीराम	आ हाथ मे चिटठी कै री है
इचियो	म्हारो छोटोडो भाई मरग्यो। अब
उदीराम	कित्ता बरसा रो हो थारो भाई ?
इचियो	तीन बरसा रो।
उदीराम	तीन बरसा रो ? थारो बाप कद मरि
इचियो	बाप मरिया नै तो बीस बरस हुयग्या

अर सवा लाख रो टीको देसी।

शरबती थारै बाप रो तो माथो खराब हुयग्यो बेटा। बानै तो चौबीसू घन्टा पइसो ई पइसो दीखै।

(इचियो बीच मे बोलै)

इचियो सेठजी इत्तै पइसै रो काईं करसी सेठाणीजी ?

शरबती मरता सागै लेजासी अर म्हासू पैला मरग्या तो म्हैं सगळो पइसो बारै सागै घाल देसू।

(बीच मे बोलै)

उदीराम मा अगर तू पैला मरगी तो ?

शरबती चोखो बेटा अै रोज–रोज रै छातीकूटै सू तो पींडो छूटसी।

उदीराम नीं–नीं मा आपा दौनू सागै ई मरसा अर आगोतर में फेरू मा–बेटा बणसा।

(झूमरमल भागतो–सो आवै)

झूमर अरे ! इचिया जल्दी कर। सुणी है बा आसामआळी आसामी अठै पूगगी।

इचियो इत्ती बेगी पूगगी ? सेठा बजार सू खावण–पीवण नै काईं लावणो है ?

झूमर अरे ! तू उदियै नैं लेय र माय बळ डाकी कठैई रा। दिनभर थारो खावण नै मूढो बळतो रैवै।

(इचियो उदीराम नै लेय र माय कानी जावै)

शरबती म्हैं कैऊ हू कै थे अबै ई मान जाओ। क्यू कोई छोरी री जिन्दगी खराब करण लाग रैया हो ?

झूमर देख शरबती तू अबै गेली बात्या ना कर। बा आसामी लाल रग री मारुति सागै लेय र आई है।

शरबती ऊंधा धन्धा थे कर रैया हो अर काळजो म्हारो धग–धग करण लाग रैयो है।

झूमर जा–जा तू माय जा अर बेगो–सी उदियै नै त्यार कर।

शरबती हे सावरिया आरो जीव कूकर निकळसी ?

उदीराम एक क्यू, दो पुरस नी बाप ।

झूमर देख बेटा आज तू थोडो सऊर सू रीये।

उदीराम क्यू ? आज काळिया गोधा फेर लडसी ?

झूमर आ बात को'नी बेटा। आज आसाम सू अेक आसामी तन्नै देखण खातर आ री है। बा पार्टी तन्नै बैठण नै मारुति देसी।

उदीराम म्हैं चुनाव म खड़्यो कद हुयो जिको म्हनै बैठासी ?

(इचियो उदीराम रै कान मे बात कैवै उदीराम हसै।)

झूमर उदी बेटा काई कैवै ओ बेईमान ?

उदीराम इचियो कैवे म्हारै लुगाई लावण री त्यारया चाल री है।

झूमर साची बात है बेटा। या आसामी तन्नै पसद कर दायजे मे मारुति देसी। अै खातर बा आसामी तन्नै काई पूछाताछी कर तो तू खाली हा–ना म ई जवाब दिय घणो बोले ना। समझग्यो ?

उदीराम *तू आज इत्तो मीठो बोल्यो जणे ई म्हैं समझग्यो।*

इचिया म्ह समझग्या सेठा।

झूमर समझग्यो तो अै ऊठ नै ई चोखी तरै समझा–बुझार त्यार कर *अर ओ कामडो पार पडग्यो तो म्हैं तन्नै सोने री बींटी अर* थारी लुगाई रै चादी री पायल घालसू।

(बीच मे बोलै)

उदीराम म्हारै कीं घालसी बाप ?

(बिगड र)

झूमर *थारै घालसू गळपटियो।*

इचियो आप पधारो नी सेठा। *अबै आ काम थारो कानी* म्हारो है।

झूमर चोखी बात है। तू उदिये नै त्यार कर। म्ह थोडा दुकान ताई जाय र आऊ।

(झूमरमल बारै निकळै अर शरबती आवै)

उदीराम *मा बाप कैवै आज म्हनै निरखण नै आसाम सू अेक आसामी* आय री है। बा आसामी म्हनै बैठण नै लाल रग री मारुति

अर सवा लाख रो टीको देसी।

शरबती थारै बाप रो तो माथो खराब हुयग्यो बेटा। बानै तो चौबीसू घन्टा पइसो ई पइसो दीखै।

(इचियो बीच मे बोलै)

इचियो सेठजी इत्तै पइसै रो काई करसी सेठाणीजी ?

शरबती मरता सागै लेजासी अर म्हासू पैला मरग्या तो म्हैं सगळो पइसो बारै सागै घाल देसू।

(बीच मे बोलै)

उदीराम मा अगर तू पैला मरगी तो ?

शरबती चोखो बेटा अै रोज–रोज रै छातीकूटै सू तो पींडो छूटसी।

उदीराम नीं–नीं मा आपा दौनू सागै ई मरसा अर आगोतर मे फेरू मा–बेटा बणसा।

(झूमरमल भागतो–सो आवै)

झूमर अरे ! इचिया जल्दी कर। सुणी है बा आसामआळी आसामी अठै पूगगी।

इचियो इत्ती बेगी पूगगी ? सेठा बजार सू, खावण–पीवण नै काई लावणो है ?

झूमर अरे ! तू उदियै नैं लेय र माय बळ डाकी कठैई रा। दिनभर थारो खावण नै मूढो बळ्तो रैवै।

(इचियो उदीराम नै लेय'र माय कानी जावै)

शरबती म्हैं कैऊ हू कै थे अबै ई मान जाओ। क्यू, कोई छोरी री जिन्दगी खराब करण लाग रैया हो ?

झूमर देख शरबती तू अबै गैली बात्या ना कर। बा आसामी लाल रग री मारुति सागै लेय र आई है।

शरबती ऊधा धन्धा थ कर रैया हो अर काळजो म्हारो धग–धग करण लाग रैयो है।

झूमर जा–जा तू माय जा अर बेगो–सी उदियै नै त्यार कर।

शरबती हे सावरिया आरो जीव कूकर निकळसी ?

झूमर बो तनै लाल रग री मारुति मे बैठसी जणै पतो लागसी।

शरवती लापो लागै थारी मारुति रै।

(शरवती माय खानी जावै झूमरमल जोर सू हेलो मारै)

झूमर इचिया ओ इचिया !

(बारै आय'र)

इचिया हा सेठा। बोलो नास्तै खातर काईं लाऊ ?

झूमर हा री मा–राड ! जल्दी सू पथरणै रा सळ काढ।

(दोनू जणा पथरणो ठीक करै अर झूमलमल पथरणै माथै वही लेय र देखण लाग जावै अर इचियो माय खानी जावै अर बारै खानी सू चार जणा आवै)

लूणकरण जय रामजी री सेठा !

झूमर जय रामजी री।

(झूमरमल बारै सामै देखै)

लूणकरण म्हैं लूणकरण लूणियो। आसाम सू आयो हू।

झूमर अरे ! पधारो–पधारो सेठा पधारो। कागद मे तो आप कालै पूगण रो लिख्यो हो ?

लूणकरण बो इया हो सेठा। हवाई जाझ रा टिगट बणग्या अै खातर रात दिल्ली पूगग्या अर अबार अठै।

झूमर बढिया करियो। अरे आप लोग विराजो नी खडया क्यू हो ?

(सगळा जणा बैठै)

अे आपरै सागै ? म्हारो मतलब आप रो बिराजणो ?

लूणकरण अै जेठमलजी भुगडी। म्हारा सागी साळा।

झूमर राम–राम–सा जेठमलजी खूब दरसण दिया।

जेठमल दरसण भगवान रा।

लूणकरण अे गुलाबचदजी गुलगुलिया म्हारा फूफी–सुसरा।

झूमर राम–राम म्हैं झूमरमल चोरडियो। म्हारै आढत री दुकान है।

(इचियो पाणी लेय र आवै)

इचियो लो सा जळ अरोगो।

झूमर आ इचियो। म्हारो सेवादार। चार पीढी सू म्हारै अठै ई रैवै।

लूणकरण किसो गाव भाया ?

इचियो कतरियासर कपूरीसर सू आथूणो पडै।

(बीच मे बोलै)

झूमर हा सेठा भन्साळीजी सागे नीं आया ? काई हाल-चाल है बारा ?

लूणकरण हाल अर चाल तो दोनू ई ठीक हे पण सुगर री बीमारी रै कारण आवणो-जावणो कम ई करे।

झूमर भौत पाजी बीमारी हे। ना तो आदमी मीठो खा सकै अर ना चरको। डाक्टर अगरवाल कैवे अै बीमारी मे खाओ कम अर पीवो घणो।

(इचियो आवै)

इचियो अे बात माथे ठडो-ठडो जळ पीवो सेठा।

(इचियो गिलास मे पाणी घालै)

लूणकरण ड्राइवर साहब गाडी माय सू सगळो सामान काढ लाओ।

रामू अबार लाऊ सेठा।

(ड्राइवर उठ र बारै जावे)

झूमर अरे आप आराम सू बिराजो नी दौरा क्यू वैठा हो ?

(ड्राइवर बारै सू गत्तै रा कार्टून लाय र राखै)

अरे सेठा इत्तो-सारो काई अडगो लेय र पधारिया हो ?

लूणकरण घणो कई कोनी सेठा थोडा-सा फळ-वळ है।

झूमर इचिया जल्दी सू नास्तो-वास्तो लेर आ ।

इचियो सेठा नास्तो लावण खातर पूछयो जणै तो था मना कर दियो।

(बीच मे बोलै)

लूणकरण देखो सेठा ओ सकोच ना करो-म्हे लोग होटल म न्हा-धोय र नास्तो-पाणी कर र आया हा।

झूमर आ कोजी बात सेठा। म्हारी इत्ती बडी हवेली अर था होटल रा पइसा भाग्या ?

लूणकरण कई फरक पडे है सेठा। अेक ई बात है। आप तो आ बताओ कै आप रै टाबर–टोळी कित्ता है ?

झूमरमल टाबर–टोळी क्यारा है सेठा। टाबरा रा मजा तो मींया भाई लेवै। म्हारै तो आगै–लारै एक तूतडो है। आप रै टाबरिया कित्ता है सेठा थे बताओ ?

लूणरकण इया तो घार–घार छोरा हुया पण जीया कोनी। आख्या आगै अेक कुणकी री है।

झूमर कुणकी ? आ कुणकी कुण है सेठा ?

लूणकरण म्हारी छोरी रो नाव है। छोटी थकी नै सीतळा माता निकळी अर अेक आख सीतळा माता रै भैंट चढगी।

झूमर छोटी थका सीतळा माता निकळी अर एक आख सीतळा माता रै भेट चढगी तो सेठा अैमे थारो कसूर कै म्हारो ?

लूणकरण इया टीपणै मे तो कई नाव पडया धापली धूडकी मोडकी बाधूडी मगली पण म्हनै कुणकी नाव सुवायो।

झूमर थू थू नाव तो पाचू ई फूठरा पडया बाईसा रा।

(बीच में बोलै)

जेठमल इया नाव मे काई राख्यो है सेठा। नाव तो खाली आदमी री अेक पिछाण हुवै। अबै देखो सिर माथै केस कोनी अर नाव जटाधर।

(इचियो पाणी लेय र आवै अर बोलै)

इचियो खावण नै रोटी कोनी अर नाम धनराज लो सा ठडो जळ अरागो।

(इचियो गिलासा मे पाणी भरै)

लूणकरण अरे सेठा आपा नावा मे कठै अळूझग्या कईं काम री बात करो। सिझा नै म्हानै पाछो बहीर हुवणो है।

झूमर अरे हा आ तो म्हैं भूल ई गयो। अेक बात बताओ सेठा बाईसा पढोडा–लिख्योडा कित्ता क है ?

लूणकरण कुणकी नै अेकर स्कूल भेजी अर बै दिन ई बा अेक टींगर लारै स्कूल सू भाजगी। अै खातर म्हैं स्कूल छुडा दी।

झूमर चढिया करियो। आजकाळ अै टीब्या अर फिलमा टाबरा नै विगाड र तीन कोडया रा कर नाख्या।

(बीच मे बोलै)

गुलाब या सेठा कईं लाखीणी बात कैई है।

(बीच मे बोलै)

जेठमल आप तो आदमी म्हा सुणी जिकी सू ई चढिया निकळया।

झूमर तो म्हैं ओ रिस्तो पक्को समझू ?

लूणकरण म्हारै खानी सू सोळै आना पक्को।

झूमर बोलो कद आऊ बरात लेय र ?

लूणकरण आप रै जचै जणै– म्हैं सगळी त्यारी कर र आयो हू अर मारुति सागै लायो हू। बाकी म्हानै काईं देवणो है ? आप हुकम कर दो।

झूमर अरे सेठा छोरीआळा नै तो उमरभर देवणो ई देवणो है।

(सगळा कूडी हसी हसै अर इचियो पाणी लेय र आवै)

इचिया सेठा जळ अरोगो।

जेठमल अरे इचियारामजी ?

इचियो हुकम सेठा।

जेठमल ओ घडी–घडा इत्तो ठडो–मीठो पाणी कठै सू लारियो हो ? घर मे कूवो है या बावडी ?

इचियो ना कूवो है ना बावडी आप नै देख र च्यार मटकिया और छाण ली।

(सगळा हसै अर इचियो माय जावै)

लूणकरण हा हुकम करो सेठा म्हानै काईं सेवा करणी है ?

झूमर देखो लूणकरणजी। म्हारो घर अर आज रो जमानो देखता सौ भरी सोनो इग्यारे किलो चादी अर सवा लाख रो टीको तो थानै देवणो ई पडसी। बाकी आपा सगळा जणा जाणा कै

आपरी छोरी नै नागी तो कुण काढै है।

(बीच मे बोलै)

जेठमल — और जानी ओरा नै जुआरी ?

झूमर — अरे सेठा रागो सगै री जड हुवै अै रातर खाली गधडा नै खेत खणावण सू काईं फायदो ? थाने जुड़ै जिसी रसोई वणा लिया और

(इचियो पाणी लेय र आवै अर बीच मे बोलै)

इचियो — बीमे थोडो–सो जमाल घोटो घाल दिया। जानी खावता जासी अर

(बीच मे बोलै)

झूमर — इचिया

इचियो — लो सा ठण्डो जळ अरोगो।

(इचियो गिलासा मे पाणी घालै)

लूणकरण — *म्हनै आपरी सगळी सरता मन्जूर है सेवा। कवरसा नै बुलावो। लगतै हाथ म्हैं दस्तूर करतो ई जाऊ।*

झूमर — बो इया है सठा म्हैं रायबहादुर जतनमलजी चोरडिया रो पोतो हू। म्हैं ना तो कैरोई टाबर देखू अर ना म्हे म्हारो टाबर कैनैई दिखावा। म्हे आदमी री औकात आदमी रो घराणो अर आदमी री साख देखा।

लूणकरण — तो सेठा ओ सौदो बैठै कोनी।

झूमर — अरे सेठा टाबर रो काईं देखणा। म्हारो घर देखा। म्हारा धन्धो देखो। मरद रो काईं गारो अर काईं काळो ?

लूणकरण — थारो कैयणो ठीक है झूमरमलजी । पण म्हे टाबर नै देख्या बिना दस्तूर आज करा ना काल। ड्राइवर साब सामान पाछो उठाओ अर गाडी मे राखो।

(इचियो आवै)

इचियो — अरे सेठा इया आवोडो सामान पाछो उठाया करै ? पैला ठडा जळ अरोगो।

(बीच मे बोलै)

जेठमलजी अरे इचियारामजी ! थारी मटक्या फूटगी या थे पाणी री कूण्डी साफ कर रैया हो ? पाणी पा–पाय र पेट नै ढोल बणा नाख्यो।

(बीच मे बोलै)

झूमर इचिया ! उदीराम किरकेट खेल र आयग्यो ?

इचियो वै किरकेट खेलण नै गया ही कद हा ?

झूमर आयग्यो तो लेय'र आ कैयदै थारा सुसराजी आसाम सू पधारिया है।

इचियो अबार लाऊ सेठा ! वै तो बारै आवण खातर कदैई रा बायड मर रैया है।

(इचियो माय जावै)

झूमर अरे ! आप बैठो नी सेठा खडा क्यू होयग्या ? उदीराम आपरो ई टाबर है। बींनै बीस बार देखोनी। देख्या सू उदियो घसीजै थोडी है। आप आराम सू विराजो। म्हैं बैनै अबार बारै भेजू।

(झूमरमल उठ'र माय जावै। सगळा जणा पाछा बैठ जावै– थोडी देर मे इचियो उदीराम नै लेय र बारै आवै)

इचियो देखो उदीबाबू, अै थारा सुसरोजी !

उदीराम म्हारा सुसरोजी ? म्हारो ब्याव कद हुयो ?

इचियो ब्याव तो अबै हुसी। बस हुयो ई समझो।

उदीराम इया किया समझू ? भूखो धाया पतीजै।

इचियो सेठजी थानै आसाम सू देखण नै आया है।

उदीराम इत्ती दूर सू ? रेल रो पास मिलै है ?

(बीच मे बोलै)

इचियो अे बात्या नै छोडो अर पैला सुसरैजी नै मुजरो करो।

उदीराम मुजरो भगतणिया करै।

इचियो ओ हो सुसरैजी रै धोक तो देवो।

उदीराम अरे गैलसफा। धोक भैरूनाथ बाबा रै लागै। फेरी रामदेवजी मराज रै देईजै अर आखा बायाजी रै चढै

इचियो	चोखी बात है। सुसरोजी रै पगै लागो।
उदीराम	सुसरोजी थोडा खुरडा इनै करया !
	(उदीराम चारू जणा रै आगै ऊधो सूजावै)
इचियो	अरे। उदीबाबू इया पगै लागीजै ?
उदीराम	म्हैं तन्नै चौखी तरै जाणू– नीं तो तू म्हनै कैवतो अबै आरै लागो अबै आरै लागो। अै खातर म्हैं अेकै सागै चारा रै लाग लियो।
जेठमल	वा भाया अमर हुजा।
	(बीच मे बोलै)
गुलाब	माख्या रै भाग रो।
उदीराम	सुसरोजी ! आ चडाळ–चौकडी थारै सागै कुण है ?
लूणकरण	अै म्हारा साळा बाबू जेठमलजी भुगडी।
उदीराम	भुगडी ? म्हे तो भुगडी सूखोडे बोरियै नै बोला। भुगडीजी थे काईं धन्धो करो ?
जेठमल	म्हैं बरेली मे बास बेचू।
उदीराम	बास ? अबार तो लडाइया चाल री है। बास तो खूब बिकता हुसी ?
	(बीच मे बोलै)
लूणकरण	अै म्हारा फूफी सुसरा गुलाबचदजी गुलगुलिया।
उदीराम	गुलगुलियो ? आ किसी बीमारी हुवै ? खुलखुलिये रै बाबत तो म्हैं सुण राख्या है।
जेठमल	थू थू टाबर तो फूटरो है जीजोसा।
उदीराम	फूटरा नीं हुवतो तो थे इत्ती दूर सू म्हनै देखण नै झख मारण नै आवता ?
	(इचियो आवै)
इचियो	उदीबाबू, सुसरोजी नै इया नी बोलणो।
जेठमल	नीं–नीं खुल र बोलो कवर सा।

उदीराम म्हैं तो घणो ई खुल'र बोलणो चाऊ पण म्हारो बाप म्हनै बोलण खातर मना कर राख्यो है।

जेठमल थारै ओ काजळ कुण घाल्यो कवरसा ?

उदीराम इचियो कैवै—काजळ नीं घाल्या डाकण मासी काळजो काढलै।

गुलाब साची बात है कवरसा। थारै कीं हुजावै तो थारै बाप झूमरमल नै लाखू रुपिया रो दायजो कुण देसी ?

लूणकरण थारो नाव काई है कवरसा ?

उदीराम पैला थारो नाव बताओ।

लूणकरण म्हारो नाव लूणकरण लूणियो।

उदीराम लूणियो जणैई म्हारो पेट दूखै जणै म्हारी मा म्हनै लूणियो नींबू चूसावै।

लूणकरण थारो नाव बताओ कवरसा ?

उदीराम म्हारो नाव उदीराम पण म्हारो बाप म्हनै उदियो—उदियो कैवै।

जेठमल नाव तो भौत फूठरो है।

उदीराम फूठरो है तो ओ नाव थे राखलो। म्हैं दूजो राख लेसू।

लूणकरण नीं—नीं ओ नाव थारो ई ठीक है।

उदीराम बा थारी मरजी। पछै ना कैया कै म्हारी मनवार नीं करी।
(बीच मे बोलै)

जेठमल थानै पढणौ—लिखणो कईं आवै कवरसा ?

उदीराम देखो भुगडीजी। थे म्हारै मामी सुसरा लागो जणै म्हैं थानै साची—साची बताऊ। म्हनै ना तो पढणो आवै अर ना लिखणो पण म्हनै हडमान चाळीसो पूरो आवै सुणाऊ ?

जेठमल अबार नहीं पाछा आसा जणै सुणसा।

उदीराम पाछा तो म्हारा बडेरा आया तो थे आसो।

गुलाब और कोई काम—काज आवै है थानै ?

उदीराम म्हनै खडी साइकिल री हवा काढणी आवै। मिन्दर मे घटिया बजावणी आवै। किन्या उडावणी आवै।

([illegible] रो अर इचियो लटाई झाला रो [illegible] बैठ जावै)

[illegible]   [illegible] कंई-कंई आवै आपने ?

[illegible]   म्है भजन गावणो आवै अेक लेण सुणाऊ ?

[illegible]   हां-हां सुणाओ वा पाछ क्यू राखो।

(इचियो मूंडै सू तबलै री आवाज काढै अर उदीराम [illegible] अलापै)

गैया मोरी मैं मारग [illegible] रायोनी अै माळ-बाळ भेळा हुयर म्हारै मूंडै रै चोपड दियो।

[illegible]   मा कायरसा भजन सुण र म्हारा तो रूंगटा खडा हुयग्या।

[illegible]   अे रूंगटा री बात करो। अेक बार म्हैं ओ भजन [illegible] री [illegible] मैं सुणायो जिको बठै बैठया सगळा लोगा [illegible] हुयग्या।

[illegible]   भजन रै अलावा और की [illegible] ?

([illegible] बीच मैं बोलै)

लाख रो टीको म्हैं अै गैलसफै छोरै खातर थानै देऊ बैसू बढिया ओ नीं रैवै कै म्हैं म्हारी छोरी नै कोई ऊडो–सो कूओ देख र बैमें धक्को दे दू ?

झूमर ओ थे काईं कैय रैया हो सेठजी ?

लूणकरण थानै सरम नहीं आवै ? थे इसी गैलसफी औलाद खातर सवा लाख रो टीको माग रैया हो ? था आगोतर मे खोटा करिया जणे थारै इसी औलाद जलमी। अबै थे आगलो जलम ओरू बिगाड रैया हो। म्हनै तो अठै पूगता ई पतो चालग्यो कै थे कित्ता गन्दा अर लोभी आदमी हो।

म्हैं कैयो म्हारी छोरी काणी है म्हारी छोरी स्कूल सू भाजगी। म्हारी छोरी री नाक पिचकोडी है। पण था कैयो काईं फरक पडै ? क्यू कै थानै छोरी सू कोनी पइसा सू मतलब हे। म्हनै रीस तो इसी आ री है कै म्हैं अबार रो अबार पुलिस मे जाऊ। उठो जेठमलजी।

(सगळा जणा घर सू बारै निकळ जावै। उदीराम कमरै मे आवै। झूमरमल उदीराम नै मारण लागै। शरबती आवै)

शरबती क्यू मारो हो अैनै ?

झूमर हरामखोर घर मे आयोडी मारुति

शरबती इत्ती मारुति री भूख है तो टका भाग र लावो क्यू कोनी ? बाबलियो घणो ई छोड र मरियो है।

(इचियो आवै)

झूमर अरे ओ नाइडा ? तन्नै कित्तो कैयो हो कै अे गैलसफै नै चोखी तरै समझा–बुझार बारै लाये।

इचिया म्हैं आनै घणा ई समझाया सेठजी पण

(बीच मे बोलै)

उदीराम इचियो झूठ बोलै है बाप ? इचियै म्हारी सामी आख मारी अर म्हैं आख रो उलटो मतलब समझग्यो।

(बीच मे बोलै)

शरबती इचिया अै कचरै नै बारै गाया–गोधा नै नाख र आ।

(उवर किन्या उडावण रो अर इचियो लटाई झालण रो एक्सन करै अर पाछो बैठ जावै)

गुलाब और कई–कई आवै आपने ?

उदीराम म्हनै भजन गावणो आवै अेक लेण सुणाऊ ?

जेठमल हा–हा सुणाओ बा पाछ क्यू राखो।

(इचियो मूढै सू तबलै री आवाज काढै अर उदीराम कोजी तर्‌या अरडावै)

मैया मोरी मैं माखण को खायोनी अै गाळ–बाळ भेळा हुय र म्हारै मूढै रै चोपड दियो।

गुलाब या कवरसा भजन सुण र म्हारा तो रूगटा खडा हुयग्या।

उदीराम थे रूगटा री बात करो। अेक बार म्हैं ओ भजन रामसुखदासजी री कथा में सुणायो जिको बठै बैठया सगळा लागडा ऊभा हुयग्या।

जेठमल भजन रै अलावा और कीं आवै ?

(बात काट र बीच में बोलै)

गुलाब बस–बस रैवण दो कवरसा।

उदीराम इया किया रैवण दू ? दो–चार मनै ही कैवण दो। नीं तो मनै अठै सू जावण दो।

लूणकरण हा–हा थे पधारो अर थारै बाप नै बारै भेजो।

उदीराम अबार भेजू।

(उदीराम इचियो माय जावै अर झूमरमल बारै आवै)

झूमर क्यू सेठा टाबर पसद आयो ?

लूणकरण टाबर तो फूठरो अर घणो ई समझदार है। क्यू गुलाबचन्दजी ?

गुलाब फूठरो ? इसो फूठरो टाबर तो चालणी ले र दूढयाई नीं लाधै। क्यू जेठमलजी ?

जेठमल लाध्या करै । म्हनै जिणी जिकी बाड मे ई बडगी।

लूणकरण इया है सेठा थारी माग रै अनुसार मारुती रगीन टीवी कूलर फ्रीज सौ भरी सौनो इग्यारा किलो चादी अर सवा

लाख रो टीको म्हैं अै गैलसफै छोरै खातर थानै देऊ बैसू बढिया ओ नीं रैवै के म्हैं म्हारी छोरी नै कोई ऊडो–सो कूओ देख'र बैमें धक्को दे दू ?

झूमर ओ थे काई कैय रैया हो सेठजी ?

लूणकरण थानै सरम नहीं आवै ? थे इसी गैलसफी औलाद खातर सवा लाख रो टीको माग रैया हो ? था आगोतर मे खोटा करिया जणै थारै इसी औलाद जलमी। अबै थे आगलो जलम ओरू बिगाड रैया हो। म्हनै तो अठै पूगता ई पत्तो घालग्यो कै थे कित्ता गन्दा अर लोभी आदमी हो।

म्हैं केयो म्हारी छोरी काणी है म्हारी छोरी स्कूल सू भाजगी। म्हारी छोरी री नाक पिचकोडी है। पण था कैयो काई फरक पडै ? क्यू कै थानै छोरी सू कोनी पइसा सू मतलब है। म्हनै रीस तो इसी आ री है कै म्हैं अवार रो अबार पुलिस मे जाऊ। उठो जेठमलजी।

(सगळा जणा घर सू बारै निकळ जावै। उदीराम कमरै मे आवै। झूमरमल उदीराम नै मारण लागै। शरबती आवै)

शरबती क्यू मारो हो अैनै ?

झूमर हरामखोर घर मे आयोडी मारुति

शरबती इत्ती मारुति री भूख है तो टका भाग र लावो क्यू कोनी ? बावलियो घणो ई छोड'र मरियो है।

(इचियो आवै)

झूमर अरे ओ नाइडा ? तन्ने कित्तो कैयो हो कै अै गैलसफै नै चोखी तरै समझा–बुझार बारै लाये।

इचिया म्हैं आनै घणा ई समझाया सेठजी पण

(बीच मे बोलै)

उदीराम इचियो झूठ बोलै है बाप ? इचिये म्हारी सामी आख मारी अर म्हैं आख रो उलटो मतलब समझग्यो।

(बीच मे बोलै)

शरबती इचिया अै कचरै ने बारै गाया–गोधा नै नाख र आ।

(बिगड र)

झूमर इत्ता सारा फळ–फरूट गाया–गोधा नै नाखीजै ?

(इचियो अर उदीराम फरूट री पेटिया सम्भाळै पण सगळी पेटया मे फरूट री जाग्या खाली कचरो निकळै)

शरबती लो खायलो फरूट ! घाल लो गोडा ऊधा ?

झूमर बेईमान इत्ता बदमास निकळ्या इचिया देख र आ बै किसै होटल मे रुक्या है पुलिस मे बै काईं जासी म्हैं जाऊ।

(इचियो बारै जावै अर बारणो बाजै शरबती बोलै)

शरबती देख बेटा बारै कुण है ?

उदीराम कोई बाप रो पूछै तो काईं कैवणो है ?

(बीच मे बिगड र बोलै)

झूमर कै दिये कै झूमरमल मरग्यो।

उदीराम मा थारो कोई पूछै तो काईं बोलू ?

शरबती बोल दिये खसम लारै सती हुयगी।

उदीराम और कोई म्हारो पूछै तो ?

(बिगड र)

झूमर बाल दिये बाप री सीढी रै खाधो देवण नै गयो है।

(थप्पड मारतो बोलै)

गिरण मे हुवोडा हिरणाकुस !

शरबती उदियो गिरण मे नीं हुयो छालोडी रो हुवोडो है।

झूमर तू अबै मसखरी छोड र माय जाय र त्यारी कर। घमण्डीलालजी ठीक पाच बज्या अठै पूग जासी।

शरबती लापो लागै घमण्डीलाल रै। अेक सू पींडा छूटया कानी अर दूजा आवण लाग रैयो है। कान खाल र सुण लिया। म्हैं म्हारी छोरी नै घमण्डीलाल रै छोरै नै आज दू ना काल।

झूमर क्यू ? काईं कमी है घमण्डीलालजी रै छोरै मे ? छोरो फूठरो है जवान है अर घमण्डीलालजी गाव रा चौधरी है अर सगळा

सू मोटी बात वै थारी छोरी नै बिना दायजै ले जावण नै त्यार है। और के चावै है तू ?

शरबती — छोरो बिलकुल ठोठ अर अणपढ है अर म्हारी छोरी दस किलास पास है अर उमर मे छोटी न्यारी।

(उदीराम बारै जाय'र पाछो माय आय'र बोलै)

उदीराम — बाप तार आयो है।

(बिगड र)

झूमर — गेडियै रै लपेट दै फाटै कोनी।

शरबती — तार कैरो है बेटा ?

उदीराम — म्हारै सुसरैजी आसाम सू भेज्यो है कै म्हनै उदियो पसन्द है।

(मारतो बोलै)

झूमर — हरामखोर बाप सू मसखरी करै।

(बीच मे पडती बोलै)

शरबती — आजकाल थारा हाथ घणा उठण लागग्या। जणै देखो छोरै नै मारता रैवो।

झूमर — अरे ! म्हारो बस चालै तो म्हैं अैरो घाटो मोस नाखू। हरामखोर घर में आई लिछमी नै ठोकर मार दी। नीं तो म्हैं आज घमण्डीलालजी नै मारुति में बैठा'र घरै लावतो।

शरबती — घूघो लागै थारै अर घमण्डीलालजी रै। पैला पढो तो सरी तार कैरो है ?

झूमर — इत्ती उतावळी क्यू हो री है ? लव लेटर कोनी।

शरबती — काची घाव जाऊ म्हारी सौत नै।

(तार देख'र)

झूमर — सुमन री मार्कसीट है। अरे हा आज सुमन कठै बळी है ? दिनूगै सू दीखी कोनी।

(बीच मे बोलै)

उदीराम — बा आपरी दो–तीन भायल्या सागै कोटवाळी गई है।

झूमर — तू बीच में मत बोल गैलसफा।

शरवती साची कैय रियो है उदियो। *सुमन पुलिस मे रिपोर्ट लिखावण नै गई है कै वैरो बाप वींरो ब्याव ओक अणपढ गवार छोरै सागै जबरदस्ती कर रैयो है।*

झूमर तो ई मे पुलिस म्हारो काई बिगाड लेसी ? सुमन म्हारी छोरी है अर छोरी रो ब्याव छोरी रो बाप नीं करसी तो पुलिस करसी ?

शरवती सुमन हाल तेरै बरसा री हुई है अर अठारा साल सू पैली छोरी रो ब्याव करणो कानूनी जुरम है।

झूमर तू म्हनै कानून सिखावै है ? अरे थारो ब्याव हुयो जणै तू खाली आठ साल री ही अर पुलिस थारै कगलै बाप रो कीं नीं बिगाडयो तो म्हारो काई बिगाड लेसी ?

(बारै खानी सू इचियो डरतो-डरतो माय आवै)

काई हुयो इचिया ? बै बेइमान किसै होटल मे ठैरिया है ?

इचिया सेठा आपणै बारणै आगै पुलिस क्यू खडी है ?

झूमर आपणै बारणै आगै ?

(बीं टेम ई पुलिस इन्सपेक्टर घर मे आवै)

दरोगाजी आप ?

पु इन्स झूमरमल चोरडियो कुण है ?

झूमर म्हैं झूमरमल चोरडियो अर आ म्हारी घरआळी।

(बीच मे बोलै)

उदीराम अर म्हैं आरो बेटो उदीराम पण म्हारो बाप म्हनै उदियो-उदियो कैवै।

झूमर अर चुप कर गैलसफा।

उदीराम देखलो दरोगारामजी थारै सामै ई म्हारो बाप म्हनै गैलसफो कैवै।

(सुमन दो-तीन छोरिया सागै घर मे आवै।)

पु इन्स आ छोरी थारी है झूमरमलजी ?

झूमर म्हारी हुवती तो आपरै बाप रै खिलाफ रिपोर्ट थोडी लिखावती ?

पु इन्स — आ छोरी रिपोर्ट लिखवाई है कै थे अै छोरी री मरजी रै खिलाफ अैरो ब्याव केई अणपढ गवार छोरै रै सागै कर रैया हो।

झूमर — जी बो छोरो घमण्डीलालजी रो इकलोतो छोरो है अर घमण्डीलालजी रै साल रै माय बीस–बीस लाख री फसल हुवै।

पु इन्स — छोरी नाबालिग है और बाल–विवाह कानूनी जुर्म है। अगर था कोई गैरकानूनी काम करयो तो मैं थानै बाल–विवाह कानून रै तहत गिरफ्तार कर लूला अर सुणो म्हारै गया पछै अगर था छोरी नै डराई–धमकाई तो म्हैं थानै अठै सू घींसतो–घींसतो ले जावूला। समझग्या ?

(उणी टेम ही बारै कानी सू घमण्डीलाल आवै।)

थे कुण ?

(बीच मे बोलै)

झूमर — अै म्हारा रिश्तेदार है इस्पेक्टर साहब। लूणकरणसर सू पधारिया है।

(बीच मे बोलै)

उदीराम — दूर से डूगर सुहावणा लागै इन्सपेक्टर साब अै घमण्डीलालजी घडियाल है। अे म्हारी बैन सुमन री सगाई रो लगन लेयर पधारिया है पण घर सू निकळती टेम सुगन लेयर नीं निकळया ?

पु इन्स — ओ हो ! तो थे हो घमण्डीलालजी। चालो थारो घमण्ड म्हैं कोटवाळी चालर उतारसू।

(पुलिस इन्सपेक्टर बारै कानी निकळ जावै)

उदीराम — बाप ! इक्कीस तारीख नै म्हैं इक्कीस बरसा रो हुयजासू। अगर सुमन री जाग्या म्हारी पटडी बैठती हुवै तो

(बिगड़ र मारण लागै)

झूमर — अरे ! चुप कर चम्पालाल